जन-जागृति के जन्मदाता

विजय सिंह पथिक

विजय सिंह पथिक शोध संस्थान, दादरी (गौतमबुद्ध नगर)

जन-जागृति के जन्मदाता

विजय सिंह 'पथिक'

(हंसा प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित श्री विजय सिंह पथिक स्मृति ग्रंथ का एक भाग)

मूलग्रंथ के सम्पादक :

डॉ0 विष्णु पंकज

विजयसिंह पथिक शोध संस्थान

दादरी (गौतमबुद्ध नगर)

फोन : 9313203731

प्रकाशक :
विजयसिंह पथिक शोध संस्थान
गुर्जर कालोनी, दादरी (गौतमबुद्ध नगर)
फोन : 9313203731

प्रथम संस्करण : 2006

मुद्रक :
गाजियाबाद ऑफसेट प्रेस
292, न्यू गांधी नगर,
गाजियाबाद -201 001
फोन : 2713293

JAN JAGRITI KE JANMDADA VIJAY SINGH PATHIK

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	दो शब्द	i-ii
2.	पथिक रियासती जनता के पहले सिपहसालार	1–13
3.	राजस्थान केसरी विजयसिंह पथिक	14–20
4.	श्रद्धांजलि	21–26
5.	पथिक : एक सिपाही	27
6.	राजस्थान की विभूति	28
7.	अमर सेनानी	29–30
8.	राजस्थान की जन–जागृति के जनक	31–33
9.	पथिकजी एक महापुरुष	34–35
10.	महान क्रांतिकारी	36–40
11.	श्री विजय सिंह 'पथिक' एक दुःखदायी प्रसंग	41–42
12.	जनक्रांति के अग्रदूत	43–46
13.	जन–जागृति के जन्मदाता	47–48
14.	सच्चे कार्यकर्ता पथिकजी	49
15.	राजस्थान में फलतो नहीं फिरंगाण	50–54
16.	पंछीड़ा	55–57
17.	अविस्मरणीय पथिकजी	58–59
18.	कर्मवीर	60–63
19.	लोक गीतों में पथिकजी	64–67
20.	कर्मठ और निर्भीक	68–70
21.	पथिक : एक महान् और उपेक्षित व्यक्तित्व	71–73
22.	पथिकजी का ऋण कैसे चुकाएं	74–76
23.	वे आजीवन गुरिल्ला–युद्ध	77–79
24.	महान योद्धा	80
25.	कर्मनिष्ठ और अहिंसा–प्रिय	81
26.	महान संगठन–कर्ता	82

दो शब्द

गत वर्ष पथिक जी की जयंती पर हमने उनके द्वारा रचित 'प्रहलाद विजय' का प्रकाशन किया था और यह संकल्प लिया था कि एक–एक कर हम धीरे–धीरे पथिक जी द्वारा लिखित सभी पुस्तकों का प्रकाशन करेंगे। प्रहलाद विजय जिस भी व्यक्ति के हाथों में गई और पथिक जी के विषय में जिनसे भी चर्चा हुई प्रायः सभी ने पथिक जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में और अधिक जानने की जिज्ञासा प्रकट की। इस जिज्ञासा को दृष्टिगत रखते हुए हमने विचार किया कि इस बार एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय जिसमें पथिक जी के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हो। मेरी इच्छा थी कि कुछ ऐसे व्यक्तियों के लेख व संस्मरण संकलित किये जायें जो पथिक जी के सम्पर्क में रहे हों। इस हेतु मैंने पथिक जी की जन्मभूमि गुठावली समेत कई स्थानों की यात्रा की, मगर कुछ भी हाथ न लगा।

प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में पुस्तकें देख रहे थे कि मेरे मित्र श्री यशवीर सिंह 'गुर्जर' की नजर 'राजस्थान केसरी विजय सिंह पथिक स्मृति ग्रंथ' नामक पुस्तक पर पड़ी। पुस्तक देखते ही यशवीर सिंह मारे खुशी के चिल्ला पड़े। हम पुस्तक खरीदकर ले आये। घर आकर पुस्तक पढ़ी तो आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह पुस्तक बिल्कुल उसी पैटर्न पर प्रकाशित की गई है जिस तरह की पुस्तक प्रकाशित करने की योजना हम बना रहे थे। विजय सिंह पथिक स्मृति ग्रंथ में तमाम लेख उन लोगों के हैं जो व्यक्तिगत रूप से पथिक जी के सम्पर्क में रहे थे। पांच खंडों में विभाजित इस ग्रंथ में ५६ लेख हैं। सभी लेखक अपने–अपने क्षेत्र के विशिष्ट ख्याति प्राप्त लोग हैं।

साधन और समय की अल्पता के कारण पूरा स्मृति ग्रंथ प्रकाशित न करके हम उसका एक खंड ही इस पुस्तक के रूप में पथिक प्रेमियों को सौंप रहे हैं। मूल स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन हंसा प्रकाशन, जयपुर से १९८७ में हुआ था। इसके सम्पादक डॉ० विष्णु पंकज और प्रबंध सम्पादक डॉ० रमेश कुमार जैन हैं। कायदे से इसका प्रकाशन करने से पूर्व हमें उनकी अनुमति प्राप्त करनी चाहिए थी। किन्तु मैं इस आग्रह के साथ उनसे क्षमाप्रार्थी हूँ कि पुस्तक का प्रकाशन व्यवसायिक हित के लिए नहीं बल्कि पथिक जी की यशकीर्ति को जन–जन तक पहुंचाने के लिए किया जा

रहा है। आशा है स्मृति ग्रंथ के प्रकाशक एवं सम्पादक हमारी इस धृष्टता को नजर अंदाज करेंगे।

अंत में मैं इस आशा और उम्मीद के साथ यह पुस्तक सुधी पाठकों के कर–कमलों में सौंप रहा हूँ कि इससे पथिक जी के विषय में उनकी जिज्ञासा काफी हद तक शांत होगी। पुस्तक में रह गई त्रुटियों की ओर अगर ध्यान दिलायेंगे तो इसे मैं पथिक साहित्य के प्रकाशन में आपका योगदान मानूंगा।

जय पथिक!

भवदीय

दादरी
फरवरी, २००६

(राजकुमार भाटी)
अध्यक्ष, विजय सिंह पथिक शोध संस्थान

पथिक : रियासती जनता के पहले सिपहसालार

- सुमनेश जोशी*

विजयसिंह पथिक राजस्थान के वे सर्वप्रथम महाप्राण व्यक्ति थे जिन्होंने राजपूताने की रियासतों में सामन्ती ताकतों से टक्कर लेकर उन्हें पहली बार जनशक्ति का बोध कराया था। पथिक जी ने सबसे पहले राजपूताने की दबी हुई रियासती जनता में न्याय के लिए राजा, जागीरदार और शासन के अत्याचारों के विरुद्ध साहस और निर्भीकता से लोहा लेने की भावनाएं जागृत करके उन्हें आततायी और अत्याचारियों के विरूद्ध खड़ा कर दिया था। विजयसिंह पथिक ने लोक–धर्म और लोक–सेवा के जो महान् आदर्श अपने त्याग, कुर्बानियों और अपने ऐतिहासिक कार्यों से स्थापित कर दिए थे उनका इतिहास में कोई मुकाबिला नहीं है। राजपूताने की रियासतों में सामन्ती ताकतों से लोहा लेते–लेते उन्होंने अपनी हड्डियां गला दी थी। आज के लोकतन्त्री राजस्थान की नींव में पथिक जी जैसे महान् त्यागी, देशभक्त और अजेय योद्धा की अजस्र साधना लगी हुई है।

महात्मा गांधी विजय सिंह पथिक के कार्यों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने देशबन्धु सी0एफ0 एन्ड्रूज से कहा था कि पथिक काम करने वाला व्यक्ति है जबकि दूसरे सब लोग बातूनी हैं। पथिक सैनिक, बहादुर और जोशीला है, परन्तु जिद्दी है।

बाल्यकाल

पथिकजी का वास्तविक नाम भूपसिंह था। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में बुलन्दशहर जिले के गुठावली ग्राम के एक गूजर परिवार में हुआ था। उनका जन्म किस वर्ष में हुआ इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। पथिकजी ने अपने संस्मरणों में एक स्थान पर लिखा है कि उनका जन्म होली के दूसरे दिन प्रातः 4 और 5 बजे के बीच हुआ था।

पथिकजी के माता पिता का स्वर्गवास बचपन में ही हो गया था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा मालागढ़ के प्राइमरी स्कूल में हुई। इसके उपरान्त वे किसी स्कूल या कॉलेज में नहीं पढ़ सके। माता–पिता के स्वर्गवास के बाद वे अपनी बड़ी बहन

के पास इन्दौर चले गए। वहीं उनके बहनोई राजकीय सेवा में संलग्न थे।

क्रान्तिकारी जीवन की दीक्षा

इन्दौर में भूपसिंह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्र सान्याल के सम्पर्क में आए। सान्याल को यह समझते देर नहीं लगी कि भूपसिंह उन सभी गुणों से सज्जित हैं जो एक क्रांतिकारी में होने चाहिए। क्रांतिकारी सान्याल की पारखी आँखों ने भूपसिंह में छिपी हुई सत्यनिष्ठा और तेजस्विता को पहचान लिया और उन्हें क्रान्तिकारी जीवन के लिए दीक्षित कर लिया। सान्याल का विश्वास अर्जित करके युवा भूपसिंह ने मातृभूमि के बन्धन काटने के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए उद्यत दीवानों की टोली में अपने आपको सम्मिलित कर लिया। शचीन्द्र सान्याल ने उस युग के सर्वोच्च क्रान्तिकारी नेता रासबिहारी बोस से भूपसिंह को मिलाया और वहीं से भूपसिंह क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य बन गए।

शिक्षा-दीक्षा

बालक भूपसिंह की विधिवत शिक्षा तो प्राइमरी स्कूल से आगे नहीं हो सकी थी। लेकिन उनकी आयु के साथ–साथ बौद्धिक विकास असाधारण रूप से प्रस्फुटित होने लगा और उनकी साहित्यिक प्रतिभा का स्वतः ही विकास होने लगा। उनका आगे का ऐतिहासिक जीवन यह प्रमाणित कर चुका है कि वे राजनीति और इतिहास के प्रकांड पंडित थे। वे लेखनी के धनी, उग्र, क्रान्तिकारी और तेजस्वी पत्रकार थे। वे कई भाषाओं के ज्ञाता थे और उनका सहज ज्ञान अद्वितीय था। उनका यह प्रशिक्षण संभवतः क्रान्तिकारी दल ही में होता गया था।

राजस्थान में क्रान्तिकारी संगठन का सूत्रपात

सन् 1911 में शचीन्द्र सान्याल और रासबिहारी बोस अभिनव भारत समिति के द्वारा देश में सशस्त्र क्रान्ति की योजना तैयार करने में लगे थे। उन्हीं दिनों में राजस्थान में वीर भारत सभा नाम का गुप्त संगठन स्थापित हो चुका था। इसी बीच भारत की फौजों को पुलिस की पुरानी तोड़ेदार बन्दूकों की जगह नई रायफलें दी गयी थी। पुरानी बंदूकें सरकार ने राजस्थान के बाजारों में बिकवाई क्योंकि रियासतो में हथियार रखने पर पाबन्दी नहीं थी। एक तोड़ेदार बन्दूक के साथ कारतूस दिये जाते थे। मगर कुछ दिन बाद कारतूस मिलने बंद हो गये तो तोड़ेदार बन्दूकें बहुत सस्ती हो गई। इस का फायदा उठाने के लिए रासबिहारी बोस ने भूपसिंह को अजमेर भेजा कि वह तोड़ेदार बंदूकें इकट्ठी करें।

पुरानी तोड़ेदार बंदूकों की मरम्मत करने और खाली कारतूसों को भरने का

काम सीखने के लिए भूपसिंह ने अजमेर के रेलवे वर्कशॉप में नौकरी करली और वहीं के सुखदीन मिस्त्री को विश्वास में लेकर उसे अपने दल में मिला लिया।

राजस्थान में क्रांति की नयी योजना

हथियारों की खरीद और संग्रह के साथ–साथ राजस्थान में क्रान्तिकारी संगठन बनाने की योजना देकर रासबिहारी ने भूपसिंह और भाई बालमुकन्द को राजपूताने में भेजा था। भाई बालमुकन्द जोधपुर के महाराज कुमार के शिक्षक और अभिभावक नियुक्त हो गये, भूपसिंह ने अजमेर के वर्कशॉप में नौकरी करके अस्त्र–शस्त्रों को बनाना तथा उनकी मरम्मत करना सीखा और अपने प्रभाव से वर्कशॉप के कारीगरों को क्रान्तिकारी दल में भर्ती करना शुरू किया। भूपसिंह राजस्थान में अस्त्र–शस्त्रों का एक कारखाना स्थापित करना चाहते थे।

रासबिहारी बोस की योजना थी कि अंग्रेज–विरोधी राजाओं का भी क्रांति के लिए उपयोग करने का प्रयत्न किया जाए। भाई बालमुकन्द जोधपुर के राजघराने में इस दृष्टि से क्रिया–शील थे। राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ और उनके पुत्र प्रतापसिंह बारहठ राजपूताने के कई राजाओं में देश–प्रेम की भावनाएं जागृत करने में लगे हुए थे। रासबिहारी बोस के आदेशानुसार भूपसिंह ने कई राजपूत राजाओं से अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिए। वे खरवा नरेश ठाकुर गोपालसिंह के निजी सचिव बन गए और राजाओं को भावी विप्लव में सहायता देने के लिए प्रेरित करने लगे।

क्रांति की योजना विफल हो गयी

रासबिहारी बोस देश भर में सैनिक क्रांति की तैयारी कर रहे थे। क्रान्तिकारियों से सैनिकों का सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। राजस्थान में खरवा–नरेश तथा देशभक्त व्यवसायी दामोदरदास राठी की सहायता से भूपसिंह को अजमेर, व्यावर व नसीराबाद पर अधिकार कर लेने का भार सौंपा गया था। भूपसिंह तेजी के साथ क्रान्तिकारी शक्तियों को संगठित करने में लग गये थे। योजना यह थी कि 21 जनवरी 1915 को पंजाब, देहली, उत्तर भारत तथा राजस्थान में एक साथ सशस्त्र विद्रोह आरम्भ कर दिया जाए। परंतु दुर्भाग्य से 19 फरवरी को ही सरकार को इस षड्यन्त्र की सूचना मिल गयी और पंजाब के क्रान्तिकारी पकड़ लिये गए। राजस्थान में भूपसिंह, खरवा–नरेश गोपालसिंह, ठाकुर मोड़सिंह तथा सवाईसिंह आदि 21 फरवरी, 1915 को खरवा स्टेशन से कुछ दूर जंगल में कई हजार सैनिक व क्रान्तिकारी दल लिये विप्लव आरम्भ करने का संकेत पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रात्रि को दस बजे के बाद अजमेर से अहमदाबाद जाने यात्री गाड़ी से रामसबिहारी का भेजा हुआ क्रान्तिकारी खरवा के स्टेशन से गाड़ी आगे निकलने पर बम का धड़ाका करता। यह अजमेर, ब्यावर तथा नसीराबाद पर आक्रमण करने का संकेत था। किंतु संकेत नहीं मिला। अगले दिन संदेश–वाहक ने आकर लाहौर में घटी घटनाओं की उन्हें सूचना दी। तुरंत ही भूपसिंह ने तीस हजार बन्दूकों तथा अन्य शस्त्रों तथा गोला–बारूद को गुप्त स्थानों में छिपा दिया और क्रान्तिकारी सैनिकों को बिखर जाने का आदेश दिया।

मोर्चाबन्दी और फिर नजरबन्दी

क्रांति की योजना की इस असफलता के बाद भूपसिंह अपने दिल्ली के एक साथी रलिया–राम के साथ बड़ोदा तक जाकर सब साथियों को सावधान कर आये। अब यह निश्चित–सा ही था कि वे किसी भी समय गिरफ्तार कर लिये जाएं। सात–आठ दिन पुलिस ने खरवा पर छापा मार कर गोपालसिंह और भूपसिंह आदि को गिरफ्तार करने की तैयारी की, जिसकी खबर क्रान्तिकारी कैदियों द्वारा उन्हें मिल गयी। भूपसिंह के कहने पर चुपचाप आत्म–समर्पण कर अंग्रेजों की जेल में अनिश्चित काल तक सड़ने और साधारण चोर–डाकुओं और खूनियों की तरह फाँसी पर लटकाए जाने की अपेक्षा उन सबने लड़कर मरने का निश्चय किया। अन्य साधारण सदस्यों को खरवा से हटा दिया गया। इसके बाद ठाकुर गोपालसिंह, उनके चाचा मोडसिंह, भूपसिंह, रलियाराम और सवाईसिंह नाम के 5 साथी बहुत–सा शस्त्रास्त्र और खाने पीने का 10 के लायक काफी सामान लेकर खरवा के गढ़ से निकल कर रातों–रात पास के जंगह में बनी ओहदी (शिकारी बुर्ज) में मोर्चाबन्दी कर जा डटे।

शिकारी बुर्ज में घेराबन्दी

अगले रोज अजमेर का अंग्रेज कमिश्नर खुद 500 सैनिकों की टुकड़ी लेकर उन्हें खोजता हुआ वहीं आ पहुंचा और उन्हें चारों ओर से घेर कर आत्मसमर्पण के लिए बाधित करने लगा, किन्तु उन्हें मरने–मारने के लिये आमादा देखकर उसे भय हुआ कि कहीं सचमुच ही उन्हें दो–चार दिन उनसे लड़ना पड़ा तो चारों तरफ की जनता उनकी मदद के लिये उसके खिलाफ उलट पड़ेगी। फिर साथ की हिन्दुस्तानी फौजी टुकड़ी की राजभक्ति पर भी उसे भरोसा नहीं था। ऐसी दशा में यदि मुकाबला जम जाता तो सारे राजस्थान में आग भड़क उठना भी असम्भव नहीं था। अतः जहाँ तक हो सके गोली चलने देने की नौबत न आने देने का आदेश उसे ऊपर से भी था।

अंग्रेज कमिश्नर का समझौते का प्रयास

अंग्रेज कमिश्नर ने राय गोपालसिंह और भूपसिंह को कहलाया कि अभी तो उनके ऊपर कोई विशेष अभियोग या दोषारोपण भी नहीं है, सिर्फ संदेह में ही गिरफ्तार किया जा रहा है। यह भी सम्भव है कि उनमें से किसी पर कोई अपराध साबित ही न हो, ऐसी दशा में सरकार से ख्वामख्वाह मुकाबिला करके अपने ऊपर अपराध ओढ़ने में कोई बुद्धिमानी नहीं है।

नजरबंदी के लिए सम्माननीय शर्त

बहुत–सी बहस–मुबाहिसे के बाद यह समझौता हुआ कि उन्हें किसी हवालात या जेल में बन्द न कर किसी ऐसी जगह नजरबन्द किया जाएगा जहाँ आसपास जंगल में शिकार की पूरी सुविधा हो। शिकार के लिये बन्दूक, तलवार आदि शस्त्र और सवारी के लिए घोड़े सदा उन्हें मिलते रहेंगे और उनके पास जहां तक दृष्टि पडे कोई फौज पुलिस आदि का पहरा उस रूप में न रखा जाएगा जिसमें उन्हें अपने कैदी होने का भान हो।

टाडगढ़ के किले में नजरबंदी और फरारी

इस समझौते के अनुसार खरवा नरेश राव गोपालसिंह और भूप सिंह को मेवाड़ और मारवाड की सीमा पर स्थित टाडगढ़ के किले में नजरबन्द किया गया जहाँ आसपास तीन मील तक जंगल में उन्हें शिकार आदि के लिए जाने की खुली छूट थी।

किन्तु इसके 15 दिन बाद ही सोमदत्त नामक एक व्यक्ति के मुखबिर हो जाने से लाहौर षड़यन्त्र के मामले की जांच में भूपसिंह का नाम भी लिया गया जिससे उन्हें गिरफ्तार कर तुरंत लाहौर भेजने का हुक्म टाडगढ़ पहुंचा। लाहौर से गिरफ्तारी के इस वारंट की सूचना मिलते ही भूपसिंह साधु का वेश बनाकर पहरेदारों की आँखों में धूल झोंक कर टाडगढ़ किले से नीचे के सघन जंगल में रम गए।

भूपसिंह से विजयसिंह पथिक

सशस्त्र क्रान्ति का यह महान् स्वप्नदृष्टा टाडगढ़ के संघन जंगलों में लक्ष्यहीन की तरह भटक रहा था। कहाँ जाना, किधर जाना, किसके यहा जाना, क्या करना यह कुछ भी स्पष्ट नहीं था। क्रान्ति को पुनः उसी स्तर पर संगठित करना अब संभव नहीं था। जिस स्थिति में यह पथिक (विजय के लिए सिंह की तरह) सघन वनों में भटक रहा था। उसे ही लक्ष्य करके किसी शायर ने सम्भवतः लिखा हो कि –

मंजिले बे निशां नहीं मालूम,
जा रहा हूं कहां नहीं मालूम,
कब गिरे बिजलियां नहीं मालूम?
कब जले आसियां नहीं मालूम,
किसकी है महफिल और किसके हैं जलवे
आ गया हू कहां नहीं मालूम?

नए मार्ग की खोज

संशय की इस स्थिति में भटकते रहे पथिक जी। क्रान्ति की क्या नवीन योजनाएं अब क्रियान्वित होंगी और जिस मिशन को लेकर वह राजस्थान में आये थे उसे कैसे पूरा किया जाएगा, इसकी अब कोई रचना उनके दिमाग में नहीं थी। श्री पथिक बियाबान जंगल में भटकते चले जा रहे थे। उनके हाथों रियासतों के शोषित–पीड़ित किसानों को संगठित, जागृत और संघर्षरत करने का महान् कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। स्वयं उनके मन में अपने भावी कार्यक्रम की कोई रूपरेखा नहीं थी। वे नए मार्ग की खोज में थे।

क्रान्ति की असफलता के बाद

क्रान्ति की इस असफलता के बाद उनके सारे साथी बिखर चुके थे। बन्दूकों और हथियारों का संग्रह भी अस्त–व्यस्त हो चुका था। इस समय तक अर्जुनलाल सेठी जयपुर जेल में नजरबन्द थे और ठाकुर केसरीसिंह बारहठ हजारीबाग जेल में अपनी लम्बी कारावास की अवधि पूरी कर रहे थे। केसरीसिंह बारहठ और राव गोपालसिंह का रासबिहारी बोस जैसे क्रान्तिकारियों से स्पष्ट सम्बन्ध होने की सूचना मिलने से राजपूताने के राजाओं की गर्दन भीतर ही भीतर ऐसी दबी कि वे अब क्रान्तिकारियों की तरफ देखने तक का साहस नहीं कर सकते थे। अंग्रेजों ने देशी राजाओं के उन सभी सैनिकों और सेना अधिकारियों को जिनका क्रान्ति की योजना और क्रान्तिकारियों के साथ सम्बन्ध होने का जरा भी सन्देह हुआ, उन्हें रियासती सेनाओं से चुन–चुन कर उत्तरी अफ्रीका में लड़ाई के मैदान पर भिजवा दिया था। किसी बहाने उन्हें अपदस्थ करके उन पर कड़ी नजर रखना आरम्भ कर दिया। दूसरे उन्होंने भारत में गोरी सेनाओं की संख्या भी इसके बाद तुरन्त बढ़ादी और भारतीय सेनाओं को युद्ध के मोर्चों पर बाहर भेज दिया। ऐसी दशा में विदेशों से जाकर शस्त्रास्त्र भेजने का नया सिरे से प्रबन्ध करने के सिवाय भारत के क्रान्तिकारियों के लिए अब कोई चारा नहीं रहा। क्रान्ति की योजना की असफलता के बाद अप्रैल, 1915 में स्वयं रासबिहारी को भी भारत से बाहर जाना पड़ा।

टाडगढ़ के बियाबान जंगलों में

विजयसिंह पथिक के जीवनीकार श्री शंकरसहाय सक्सेना टाडगढ़ के किले से विजयसिंह पथिक के निकल भागने और बिजौलिया के किसान आन्दोलन का नेतृत्व संभालने तक का विवरण इन शब्दों में किया है–

सुनहरी चीते से मुकाबिला

अब भूपसिंह ने अपना नाम बदल कर पथिक रख लिया और दाढ़ी बनाना छोड़ दिया। टाडगढ़ के सघन वन में वे रास्ता भटक गये। दिन भर तेंजी से चलते रहने के कारण वे बहुत थक गये थे और कुछ खाया पिया नहीं था। सघन वृक्षों से आच्छादित एक चट्टान पर विश्राम करने के लिए बैठ गये। थकान से शरीर चूर–चूर हो रहा था और वे गहरी निद्रा की गोद में विश्राम करने लगे। उस समय एक जंगली जानवर, संभवतः सुनहरी चीते ने उनकी टांग पकड़ी और उनको घसीट कर ले चला। जब उनकी निद्रा टूटी तो देखा कि वे एक मनुष्य–भक्षी जंगली पशु के कब्जे में है। परन्तु पथिक जी घबराये नहीं उन्होंने धैर्य के साथ बिना हिले–डुले रिवाल्वर निकाला और जानवर को गोली मार दी। उनके प्राणों की रक्षा हो गयी, किन्तु उनके पैर में असहनीय पीड़ा हो रही थी। वन में सुरक्षित स्थान खोजकर उन्होंने रात्रि काटी।

बुढ़िया माता की शरण में

प्रातः पौ फटते ही वे वन से निकले। थोड़ा चलने पर कुछ दूर तक झोपड़ी के पास से निकले तो उसमें रहने वाली वृद्धा ने उन्हें रोका। वह अपनी सहज कुशाग्र बुद्धि से समझ गयी थी कि वह टाडगढ़ से भागा हुआ अंग्रेजों का विद्रोही युवक है। बुढ़िया ने उन्हें समझाया कि आगे जाना इस समय खतरे से खाली नहीं है और तुम्हारा पैर घायल है। उसने पथिकजी को अपनी झोपड़ी में छिपा लिया, घावों की मरहम–पट्टी की, भोजन कराया और सुला दिया। सायंकाल के समय वृद्धा ने अपने लड़कों को भेज कर एक घोड़ा मंगवाया और कहा, बेटा, अब तुम जाओ। भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे। पथिकजी श्रद्धा से वृद्धा को नमस्कार कर चल पड़े। खरवा–नरेश के एक सम्बन्धी जागीरदार के यहां गये, परन्तु उन्होंने सहायता करने से साफ इनकार कर दिया। उस समय पथिकजी का शरीर बहुत थक गया था, पैर में बेहद पीड़ा थी, उन्हें विश्राम की आवश्यकता थी।

गुरला-प्रवास और फिर साधु वेश में

वे जंगह–जंगल भटकते हुए 'गुरला' गांव में पहुंचे। वह जागीर का गांव था। उनके पास उस समय केवल सात आने शेष रह गये थे। गुरला के ठाकुर साहब

ने उन्हें जनाने (रनिवास) में छिपा दिया और उनकी चिकित्सा करायी। इससे ठाकुर साहब की देश–भक्ति और क्षत्रियत्व का परिचय मिलता है। जब पथिकजी स्वस्थ हो गये तो उन्होंने गुरला छोड़ दिया और साधु के वेश में रहे। वहां उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अधिक लोग आने–जाने लगे और गुप्तचर भी चक्कर काटने लगे तो उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया और खारी–तट में छिपे हुए अस्त्र–शस्त्र निकालकर राजपूत का वेश धारण किया और उस कुटिया को छोड़ कर चल पड़े। वहां से मेंगटिया होते हुए कांकरोली पहुंचे। पथिकजी को कांकरोली में कुछ देशभक्त युवक मिले। उनका एक छोटा–सा दल था। उस युवक दल ने राजसमुद्र तालाब के भाणा नामक गांव में पथिक जी के रहने का प्रबन्ध किया। पथिक जी ने उन युवकों का मार्गदर्शन करना प्रारम्भ कर दिया और एक पाठशाला खोली जिसके द्वारा वे बालकों में भी देशभक्ति के भाव भरने लगे। कांकरोली का युवक–दल पथिकजी के मार्ग–दर्शन में सक्रिय हो उठा तो पुलिस तथा गुप्तचर विभाग उस क्षेत्र में अधिक सतर्क हो गया।

मोही में पाठशाला की स्थापना

पथिक जी को यह सूचना मिली कि गुप्तचर विभाग को उन पर संदेह हो गया है। उन्होंने वह स्थान एकाएक छोड़ दिया। वहां से हट कर वे मोही चले गए और अपने एक परिचित डूंगरसिंह भाटी के पास रहे। वहां भी उन्होंने एक पाठशाला स्थापित की। वहां कुछ समय ठहर कर अधिक सुरक्षित स्थान की खोज में जहाजपुर पहुंचे। वहां भी उन्होंने एक पाठशाला स्थापित की। जब उन्हें लगा कि जहाजपुर भी उनके लिए सुरक्षित स्थान नहीं है तो वे चित्तौड़ चले गये। उनकी कल्पना थी कि चितौड़ में वे एक सबल क्रान्तिकारी संगठन खड़ा करेंगे।

ओछड़ी का अज्ञातवास

चित्तौड़ से नौ मील ओछड़ी गाँव में वहाँ के जागीरदार ठाकुर भूपालसिंह के फुफेरे भाई कुँवर प्रतापसिंह राठौर ने, जो राजस्थान क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे, ठाकुर भूपालसिंह को पथिक जी का परिचय दिया और अज्ञातवास में अपने यहां आश्रय देने के लिए कहा। पथिकजी को ठाकुर साहब चित्तौड़ से ओछड़ी ले आये। ओछड़ी के समीप ही स्थित पुठौली ठाकुर साहब से भी पथिकजी का घनिष्ठ परिचय हो गया था और वे कभी–कभी पुठौली भी जाकर रहते थे।

बिजौलिया में किसान-आन्दोलन का सूत्रपात

उसी समय बिजौलिया में ठिकाने के भयंकर अत्याचार से त्रस्त किसानों ने साधु सीताराम दास के नेतृत्व में आन्दोलन किया था परन्तु सबल नेतृत्व न होने

के कारण ठिकाने ने भयंकर दमन करके उसको दबा दिया। बिजौलिया का ठिकाना उस समय कोर्ट आफ वार्ड्स के अधीन था। वहां के नायब मुंसरिम मोही निवासी श्रीडूंगरसिंह भाटी ने साधु सीताराम दास को सलाह दी कि यदि वे पथिकजी को चित्तौड़ (ओछड़ी) से बिजौलिया आने के लिए राजी करलें और वे आकर यहां का नेतृत्व करें तो सबल संगठन खड़ा किया जा सकता है। इस प्रकार पथिकजी बिजौलिया पहुंचे।

निर्जन स्थान के गुप्त अड्डे में

थोड़े ही दिनों में ठिकाने के अधिकारियों ने उनके विरुद्ध राज्य को सूचित किया कि पथिकजी यहां के किसानों को भड़का रहे हैं। राज्य ने उनकी गिरफ्तारी का वारंट निकाल दिया परंतु पथिकजी को उसकी पूर्व सूचना मिल गयी। पथिकजी की कार्य–पद्धति का एक प्रमुख अंग यह था कि वे अपने शत्रु के खेमे में भी अपना कोई गुप्तचर रखते थे। अस्तु पथिकजी ने रात्रि में बिजौलिया को छोड दिया और समीप के एक ग्राम उमाजी के खेड़े में एक निर्जन स्थान पर गुप्त अड्डा बनाया और वहां से ही वे आन्दोलन का संचालन करने लगे।

पथिकजी का बिजौलिया प्रवेश

टाडगढ़ के किले से भाग निकलने के बाद करीब डेढ़ वर्ष तक घूमते–घूमते और गांव–गांव में क्रान्ति का सन्देश पहुंचाते हुए 1917 में पथिकजी बिजौलिया पहुंचे थे। वहां उन्होंने विद्या प्रचारिणी सभा कायम करके उसकी तरफ से एक पुस्तकालय, एक पाठशाला और एक अखाड़ा चलाने लगे। ऊपरमाल के किसानों में असंतोष पुराना था। पीढ़ियों से वे सख्त बेगार, पचासों अजीब लागतों, भारी लागें और मनमाने राजनैतिक जुल्मों की चक्की में पिसते आ रहे थे। एक दो बार सर उठाने की कोशिश पर कुचले जा चुके थे। आग भीतर चली गयी लेकिन बुझी नहीं थी। किसानों को यह भार असह्य हो गया। पथिकजी की जन्मजात सहानुभूति उनके साथ थी। वे किसानों के नेता बन गए। उनकी कार्य प्रणाली में क्रान्तिकारियों के साहस, लोकमान्य की कूटनीति और गांधीजी के सत्याग्रह का सामंजस्य था।

ऊपरमाल किसान पंचायत का संगठन

पथिकजी में ग्रामीणों के साथ घुल–मिल जाने की अद्‌भुत क्षमता थी और उन्होंने शीघ्र ही किसानों का विश्वास प्राप्त कर लिया। उन्होंने देख लिया कि जब तक किसान अन्याय और शोषण के विरुद्ध संगठित होकर आन्दोलन नहीं करेंगे तब तक उनको मुक्ति नहीं मिल सकती। उन्होंने ऊपरमाल किसान पंचायत का संगठन किया और संगठन समय के साथ अधिकाधिक सुदृढ़ और प्रभावशाली होता गया।

पथिकजी के आदेशों ने इस क्षेत्र में अलिखित कानून का रूप धारण कर लिया।

बिजौलिया का सत्याग्रह

किसानों ने अपने कष्टों के निवारण के लिए शुरू में वैधानिक मार्ग अपनाया। महाराणा और उनकी सरकार की सेवा में आवेदन–पत्र भेजे। उनकी मुख्य मांग यह थी कि बैठ–बेगार और अनुचित लागें रद्द की जायें और जमीन का पक्का बन्दोबस्त कराया जाए। किन्तु लम्बी प्रतीक्षा करने के बाद भी जब किसानों को कोई राहत नहीं मिली तो उन्होंने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। उन्होंने राज्याधिकारियों से स्पष्ट कह दिया कि वे न तो कोई चीज मुफ्त देंगे और न कोई काम बेगार में करेंगे। वे अपने झगड़े पंचायत की मारफत निपटाने लगे और राज्य की कचहरी का बहिष्कार कर दिया। उन्होंने महाजनों (सूदखोर बनियों) का भी बहिष्कार किया और उनके साथ हर प्रकार का लेन–देन बन्द कर दिया। राज्य ने किसानों का मनोबल तोड़ने के लिए दमनचक्र चलाया। कार्यकर्ताओं और किसानों को पकड़ कर सैकड़ों की संख्या में जेल में डाला और उनके साथ अमानुषी व्यावहार किया गया। तरह–तरह की यंत्रणाएं दी गई। खोड़े में पांव दे दिये जाते। उसमें दोनों पांच चौबीसों घंटे चौड़े रखने पड़ते जिससे पांव दर्द से फटने लगते और औंधा लटका कर पीटा जाता। कम्बल ओढ़ाकर मारपीट करना मामूली बात थी। किसान स्त्रियों को भी इन अत्याचारों से अछूता नहीं रखा गया। राज्य कर्मचारी किसानों के घरों में घुसकर उनकी सम्पत्ति छीनकर ले जाते। किंतु इस सारे दमन और अत्याचारों के बावजूद किसानों ने अपना यह आग्रह नहीं छोड़ा कि वे बेगार और लाग नहीं देंगे। जैसे दमनचक्र उग्र हुआ, किसानों ने भी सत्याग्रह तीव्र कर दिया। उन्होंने कुछ वर्ष बिजौलियां क्षेत्र में खेती नहीं की और भूमि को पड़त रख दी। इसका नतीजा यह हुआ कि ठिकाने को लगान के रूप में एक पैसा भी नहीं मिला और उसकी आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी।

स्वावलंबन का पाठ

पथिकजी ने किसानों को सब कष्ट सहकर भी मारपीट न करने और अपनी माँगों पर डटे रहने का पाठ पढ़ाया। वे खुद मिलकर रहने लगे और ठिकाने के खिलाफ रियासत में शिकायतों का और अखबारों में प्रकाशन का दुधारा खांडा चलाने लगे। उन्होंने पंचायत का संगठन बहुत मजबूत बना लिया। उसकी एक केन्द्रीय कमेटी बनायी गयी और गांवों में इसकी शाखाएं स्थापित हो गईं। एक–एक ग्रामवासी पंचायत में सम्मिलित हुआ। आन्दोलन के लिए बाहर से चन्दा नहीं उगाहना पड़ा। किसानों ने इसका कोष खुद ही इकट्ठा कर लिया। यह स्वावलंबन आखिर तक रहा और इसी में एक बड़ी हद तक बिजौलिया की सफलता का रहस्य था।

पथिकजी की तपस्या

रामनारायण चौधरी ने अपने ग्रन्थ आधुनिक राजस्थान का उत्थान में लिखा है कि इस महान् कार्य में पथिकजी को बहुत कष्ट उठाने पड़े। उन्हें गुप्त–जीवन की सारी असुविधाएं सहन करनी पड़ी। रूखा–सूखा और समय–असमय खाकर संतोष करना पड़ा। कई बार फाकामस्ती में गुजारनी पड़ी। मेह बरसते खेतों में और भयंकर पशुओं से भरे जंगलों में उन्हें अंधेरी रातें बितानी पड़ीं और हरदम एक क्रूर शत्रु के घेरे में दांतों के बीच जीभ की तरह घूमना पड़ा। कोई आश्चर्य नहीं यदि किसानों ने उन्हें महात्मा की पदवी दी और उनके एक–एक शब्द और संकेत को आज्ञा के रूप में माना।

पथिकजी ने बिजौलिया के किसानों की ओर से प्रताप के यशस्वी संपादक गणेशशंकर विद्यार्थी के पास राखी भेजी और प्रार्थना की कि बिजौलिया के किसानों की प्रताप सहायता करे। तभी से विद्यार्थीजी और प्रताप बिजोलिया के किसानों के प्रबल सहायक बन गये पथिकजी ने लोकमान्य तिलक जी की भी साहनुभूति प्राप्त करली और मराठा के द्वारा उन्होंने बिजौलियां के किसानों का समर्थन किया। उस समय माणिक्यलाल वर्मा जो पहले ठिकाने के कर्मचारी थे, ठिकाने की नौकरी छोड़कर पथिकजी के साथ आ गये। पंचायत ने लगान–बन्दी का आन्दोलन खड़ा कर दिया। राज्य ने पथिकजी को गिरफ्तार करने की बहुत चेष्टा की किन्तु वह सफल नहीं हो सका। उधर पथिकजी ने देश भर के समाचारपत्रों में बिजौलिया किसान–आन्दोलन तथा ठिकाने के दमन की रोमांचकारी कथाएं नियमित रूप से प्रकाशित करवाना आरम्भ कर दिया। समस्त देश का ध्यान बिजौलियां की ओर आकर्षित हो गया। विवश होकर राज्य ने एक कमिश्नर बिठाया और किसान–कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया। गांधीजी भी बिजौलिया के किसान–आन्दोलन से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने पथिकजी को बम्बई बुला भेजा। जब पथिकजी ने बिजौलिया के किसानों की करुण कथा गांधी जी को सुनायी तो महात्मा जी बहुत प्रभावित हुए और महादेव देसाई को वहां की जांच के लिए भेजा।

वर्धा से राजस्थान केसरी का प्रकाशन

बम्बई में ही यह निश्चय हुआ कि राजस्थान के जीवन को सतेज बनाने के लिए वर्धा से पत्र निकाला जावे। पथिकजी उसका सम्पादन करें और जमनालाल बजाज उसका आर्थिक भार लें। पथिकजी बिजौलियां से वर्धा चले गये और वहां से राजस्थान केसरी पत्र निकालने लगे। राजस्थान केसरी शीघ्र ही राजस्थान तथा मध्य भारत के देशी राज्यों में अत्यन्त लोकप्रिय हो उठा। उसका प्रभाव इतना बढ़ा कि देशी नरेश भयभीत होने लगे। परन्तु पथिकजी की विचारधारा से सेठ जमना लाल

बजाज की विचारधारा का मेल नहीं बैठा और उन्होंने राजस्थान केसरी को छोड़ दिया और अजमेर आकर राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की और नवीन राजस्थान पत्र निकालना आरम्भ किया।

राजस्थान सेवा संघ का आदेश

राजस्थान सेवा संघ की स्थापना पथिकजी ने राजस्थान के देशी राज्यों की प्रजा की सेवा के लिए की थी। उसके सदस्य आजीवन सेवा करने का व्रत लेते थे। वे अपना जीवन देश–सेवा के लिए अर्पित करते थे। पथिकजी की मान्यता थी कि फक्कड़ राजनीतिक संन्यासी ही देश–सेवा का कार्य कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने राजस्थान सेवा संघ की सदस्यता का एक नियम यह बनाया कि सदस्य की व्यक्तिगत कोई जायदाद नहीं होगी। उसको संघ से केवल निर्वाह–व्यय मिलेगा, जो उस समय एक व्यक्ति के लिए 15/– रुपये मासिक और गृहस्थ के लिए 30 रुपये मासिक नियत किया गया। पथिकजी स्वयं 15/– रुपये मासिक लेते थे और बचत वह संघ को लौटा देते थे। उनका मासिक व्यय 8 रुपये से कम होता था। पथिकजी के अतिरिक्त रामनारायण चौधरी, हरिभाई किंकर, शोभालाल गुप्त, माणिक्य लाल वर्मा, लादूराम जोशी, प्रेमचन्द भील, मोड़ सिंह, नयनूराम शर्मा संघ के सदस्य बन गये। संघ ने राजस्थान में बेगार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। सिरोही, मेवाड़, अलवर, बून्दी इत्यादि राज्यों में जो भी जन–आन्दोलन हुए उनका नेतृत्व किया। राजस्थान सेवा संघ की देश भर में धाक बैठ गयी। देशी नरेश उससे भयभीत रहने लगे, यहां तक कि इग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट के कई सदस्य भी संघ के हितैषी बन गये।

ए.जी.जी. के साथ समझौता-वार्ता

बिजौलियां आन्दोलन का प्रभाव मेवाड़ के अन्य ठिकानों पर भी पड़ने लगा। राजस्थान सेवासंघ के नेतृत्व में मेवाड़ के किसान उठ खड़े हुए तब ब्रिटिश सरकार चौंकी। मेवाड़ राज्य के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने ठिकाने पर दवाव डाला कि किसान पंचायत से संधि कर लें। स्वयं ए.जी.जी. इस मामले को तय कराने बिजौलियां पहुंचा। पथिकजी पर मेवाड़ में आने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। जब ए.जी.जी. ने किसानों को बातचीत के लिए बुलवाया तो किसान पंचायत ने उत्तर दिया कि राजस्थान सेवा संघ का प्रतिनिधि बुलाया जावे। पथिकजी ने रामनारायण चौधरी को भेजा और संधि हो गयी। बिजौलियां के किसानों की यह अभूतपूर्व विजय थी। इससे राजस्थान सेवासंघ का राजस्थान में प्रभाव बढ़ गया और सभी देशी राज्य उससे भयभीत हो उठे।

बेगूं का किसान आन्दोलन

बिजौलियां के उपरान्त बेगूं आन्दोलन हुआ। पथिकजी ने उसका भी संचालन किया। पथिकजी को मेवाड़ में आने की मनाही थी। बेगूं आन्दोलन के समय वह छिप कर रहते थे। पथिकजी पकड़े गये और उन पर साढ़े तीन साल तक मुकदमा चला। मेवाड़ सरकार ने त्रिभुवननाथ सुपारी की अध्यक्षता में पथिकजी के मुकदमे के लिए विशेष न्यायालय स्थापित किया। पथिकजी का बयान अपूर्व तथ्यपूर्ण था। पथिकजी पर राजद्रोह फैलाने का आरोप था। पथिकजी के बयान से प्रभावित होकर न्यायालय ने उनको छोड़ दिया परन्तु सरकार ने उन्हें नहीं छोड़ा। इस बार अर्द्ध–शिक्षित दरबारियों का एक कमिशन बिठाया गया और उसने पथिकजी को पांच वर्ष के कारावास की आज्ञा दे दी। पथिकजी जेल में बन्द कर दिये गये।

राजस्थान सेवासंघ की समाप्ति

उसी समय एक अन्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। राजस्थान सेवासंघ में ही भयंकर दरार पड़ गयी। पथिकजी, रामनारायण चौधरी तथा शोभालाल गुप्त में गहरा मतभेद उठ खड़ा हुआ और राजस्थान सेवासंघ समाप्त हो गया।

यायावरी और आगरा से नवसंदेश का प्रकाशन

राजस्थान सेवासंघ के समाप्त हो जाने के बाद पथिकजी एकाकी हो गए। रेलवे मजदूरों में काम करते रहे तथा देशी राज्यों की जनता की सेवा अपने ढंग से करते रहे। 1930 ई0 में राजपूताना मध्य भारत प्रान्तीय काँग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये और नमक सत्याग्रह के सिलसिले में जेल गये। अंत में ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों से बचने के लिए अजमेर छोड़ दिया। पहले मध्य भारत में और फिर उत्तर प्रदेश में गये। आगरा से नव संदेश निकाला। उनका यह पत्र बहुत लोकप्रिय हुआ, परन्तु 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सरकार ने उसे जब्त कर लिया।

जब देश आजाद हुआ और महात्मा गांधी को काँग्रेस सरकार से निराशा होने लगी, उन्हीं दिनों पथिकजी देहली में गांधीजी से मिले। गांधीजी ने उनसे आग्रह किया कि उन्हें राजस्थान में ही जमाकर बिजौलियां की शैली पर काम करना चाहिए। अस्तु, पथिकजी राजस्थान आये। महात्मा गांधी के आदेशानुसार अजमेर जाने की व्यवस्था कर रहे थे। वह राजस्थान सेवाश्रम नामक संस्था स्थापित करना चाहते थे। उसी के लिए दौड़–धूप कर रहे थे कि उन्हें लू लग गयी और 28 मई, 1954 ई0 को दिन के 2 बजे यह महान् क्रान्तिकारी नेता चिर–निद्रा में सो गया।

***प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक**

❑

राजस्थान केसरी विजयसिंह पथिक

- शोभालाल गुप्त*

विजयसिंह पथिक आधुनिक राजस्थान के निर्माताओं में से थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग राजस्थान की पीड़ित और शोषित जनता की सेवा में बिताया। उनका जीवन एक संघर्षशील योद्धा का जीवन रहा। उनकी साधना और तपस्या का जीवन बहुतों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। उन्हें अपने जीवन में नाना प्रकार के कष्टों और विपत्तियों का सामना करना पड़ा, किन्तु उन सबका उन्होंने हंसते हुए स्वागत किया। कारण जीवन में उनके सामने एक महान लक्ष्य था–देश की स्वतन्त्रता और पीड़ितों–शोषितों की मुक्ति। कष्टों और विपत्तियों ने उनके संकल्प को मजबूत ही बनाया। वह अपने निर्धारित पथ पर आगे बढ़ते गए और जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष करते रहे। उनके जीवन का यही मंत्र था–

यश वैभव सुख की चाह नहीं,
परवाह नहीं, जीवन न रहे,
यदि इच्छा है, यह है,
जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।

जिस समय पथिकजी ने राजस्थान के कर्म–क्षेत्र में पांव रखा, उस समय राजस्थान का नक्शा कुछ और ही था। राजस्थान अनेक छोटे–बड़े राज्यों में विभक्त था और चारों ओर सामन्तवाद का बोलबाला था। सामन्तवाद ने राजस्थान की जनता को अपनी नाग–पाश में जकड़ रखा था और रियासतीप्रजा निश्चेष्ट भाव से उसके अत्याचारों को सहन कर रही थी। पथिकजी ने एक ओर अखण्ड राजस्थान की कल्पना की और राजस्थानी युवकों में उस राजस्थान की भक्ति करने की चाह उत्पन्न की। उन्होंने अपनी दूर–दृष्टि से यह देख लिया था कि भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान की एक ही इकाई हो सकती है और होनी चाहिए। राजा–महाराजाओं की दृष्टि अपने राज्यों तक सीमित रही, किंतु पथिकजी ने समग्र राजस्थान को अपना कार्य क्षेत्र–माना और उसकी सेवा के लिए जिस संस्था की स्थापना की उसका नाम भी राजस्थान सेवा संघ ही रखा। राजस्थान

का लोक–व्यवहार अलग–अलग रियासतों की चार–दीवारी में सीमित नहीं था। यह बाड़ेबन्दी लोगों को कष्टकर ही प्रतीत होती थी। सभी रियासतों में एक समान निरंकुश शासन था और उससे मुक्ति पाने की समान छटपटाहट थी और उसके लिए समान और संयुक्त प्रयत्नों की भी आवश्यकता थी। पथिकजी ने जो संयुक्त राजस्थान का स्वप्न देखा, वह देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात भारत के लौहपुरुष सरदार पटेल के हाथों साकार हुआ। अलग–अलग रियासतों का, जो सैंकड़ों वर्षों से चली आ रही थीं, विलय हुआ और संयुक्त राजस्थान अपने अस्तित्व में आया। आज नया राजस्थान भारतीय संघ के समान अंग के रूप में प्रगति पथ पर अग्रसर है और उसकी दो करोड़ जनता स्वतन्त्रता के वायुमण्डल में सांस ले रही है एवं अपने भाग्य की स्वयं मालिक है।

पथिकजी का प्रारम्भिक जीवन बहुत कुछ रहस्याच्छादित रहा। इसका एक बड़ा कारण यह था कि उन्होंने क्रान्तिकारी हलचलों में भाग लिया था और गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्हें अपना नाम भी बदल लेना पड़ा। किसी समय के भूपसिंह ही विजयसिंह बन गए। सरदार पटेल की भांति पथिकजी का उदाहरण भी यह सिद्ध करता है कि साधारण जनता के भीतर से भी नेतृत्व पनप सकता है। पथिकजी का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था और बुलन्दशहर जिले का गुठावली अखितयारपुर गांव उनकी बाल क्रीडास्थली रहा। उनके पूर्वजों ने सन् 1857 की सशस्त्र क्रान्ति में भाग लिया था और इसलिए उन्हें देशभक्ति की भावना पैतृक रूप से विरासत में मिली थी। उनकी माताजी भी बड़ी निर्भीक थी और उन्होंने पुलिस के अत्याचारों का डटकर मुकाबला किया था। मां की निर्भीकता पुत्र में प्रकट हुई। पथिकजी के बहनोई राजस्थान में काम करते थे, इसलिए वह उनके साथ राजस्थान के ही हो गए। वह राजस्थान के जीवन में इतने धुल–मिल गए थे कि उन्हें कोई गैर–राजस्थानीय कह ही नहीं सकता था। राजस्थानी भाषा पर उन्हें पूरा अधिकार प्राप्त हो गया और हिन्दी की कविताओं की भांति उनकी राजस्थानी कविताओं ने भी आम लोगों को बड़ी प्रेरणा दी।

पथिकजी ने अपने जीवन का विकास स्वयं ही किया। यद्यपि उन्होंने किसी कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की, किंतु अपने अध्यवसाय से वह अच्छे लेखक और कवि बनने में सफल हुए और अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती आदि अनेक प्रादेशिक भाषाओं का उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सन् 1914 में स्वर्गीय रासबिहारी बोस ने भारत को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त करने के लिए सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन किया था। राजस्थान के कुछ राजाओं की इस प्रयास के साथ छिपी सहानुभूति थी। अजमेर के पास खरवा के एक सामन्त राव गोपालसिंह को अंग्रेजों

ने नजरबन्द कर दिया। पथिकजी इस नजरबन्दी से बचकर निकल भागे और उन्होंने मेवाड़ में जाकर शरण ली।

जननेता

पथिकजी मेवाड़ में जननेता के रूप में सामने आए। उन्होंने बिजोलिया को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। उनमें नेतृत्व के गुण पहले से मौजूद थे। वे एक अच्छे संगठनकर्ता भी सिद्ध हुए। बिजोलियां एक सामन्ती ठिकाना था और वहां के किसानों का बुरी तरह शोषण और उत्पीड़न हो रहा था। देखते–देखते पथिकजी ने इन किसानों का प्रेम और विश्वास सम्पादन कर लिया। उन्होंने किसान पंचायत को संगठित किया और किसानों को संगठित होकर अन्याय का मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप बिजोलियां में देश का सबसे पहला सामूहिक किसान सत्याग्रह हुआ। किसानों से जागीरदार लगान के अलावा 80 प्रकार की लागतें (टैक्स) वसूल करता था। तरह–तरह की बेगारें लेता था और उन्हें अमानुषिक दण्ड दिये जाते थे। किसानों ने बेगार, लागतें और लगान देने से इन्कार कर दिया और कई वर्ष तक खेती ही नहीं की। यह किसान–सत्याग्रह छः सात वर्ष तक चला। जागीरदार और राज्य ने भी दमन करने में कोई कसर नहीं रखी, किंतु किसान पस्तहिम्मत नहीं हुए। बिजोलिया के किसान–आन्दोलन ने महात्मा गांधी का भी ध्यान आकर्षित किया और उसका अध्ययन करने के लिए उन्होंने अपने निजी सचिव श्री महादेव देसाई को भेजा था। महात्मा गांधी ने यह आश्वासन दिया था कि यदि राज्य ने किसानों के साथ न्याय नहीं किया तो, वह स्वयं उनका नेतृत्व करेंगे। किन्तु इसकी नौबत नहीं आई। बिजोलिया के आन्दोलन का असर दूर–दूर पड़ रहा था। लोग अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध उठ रहे थे। जन–असन्तोष व्यापक होता जा रहा था। अतः ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि ने राज्य को समझौता करने का परामर्श दिया और उनकी मध्यस्थता में सामन्तों और किसानों के बीच सम्मानपूर्ण समझौता हो गया। अनुचित लागतें माफ कर दी गईं, जमीन का फिर से बन्दोबस्त कराने की बात तय पाई और किसान पंचायत को किसानों की संस्था के रूप में स्वीकार किया गया एवं उसे कुछ कानूनी अधिकार भी प्रदान किये गये। बिजोलियां का यह सफल और शानदार किसान सत्याग्रह पथिकजी की कृति था। उन्होंने किसानों के बीच रहकर उसे चलाया और सफल बनाया। बिजोलियां के किसान पथिकजी की सेवाओं को आज भी याद करते हैं और उनकी स्मृति में अपना सिर श्रद्धा से झुका लेते हैं।

गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में

बिजोलियां के किसान सत्याग्रह के सिलसिले में ही पथिकजी अमर शहीद

स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आए और दोनों की मित्रता अंत तक बनी रही। बिजोलिया के किसानों ने विद्यार्थीजी को राखी भेजी थी और विद्यार्थीजी ने बिजोलिया के किसानों की कष्ट–गाथा और आन्दोलन को अपने पत्र प्रताप द्वारा नियमित प्रसिद्धि प्रदान की। उसके फलस्वरूप उन्हें राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा और प्रताप का राज्य में प्रवेश निषेध कर दिया गया। किंतु कोई भी स्वाधीनचेता पत्रकार न्याय का पक्ष लेने से कैसे विरत हो सकता है? विद्यार्थीजी सचमुच एक स्वाधीनचेता पत्रकार थे।

बिजोलियां के समीप ही बेगूं एक और सामन्ती ठिकाना था। यहां के किसान भी पथिकजी और राजस्थान सेवा सेघ के नेतृत्व में सामन्ती शोषण के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे थे। यहां राज्य ने समझौते के बजाय दमन का आश्रय लिया। राज्य ने किसानों के एक मजमे पर गोलियां चलाई। दो किसान शहीद हुए और सैकड़ों को गिरफ्तार कर लिया गया। यह सब राज्य के एक अंग्रेज अधिकारी की देख–रेख में हुआ। पथिकजी इस आडे वक्त में किसानों को अकेला नहीं छोड़ सकते थे। किसानों को हिम्मत बंधाने और उनका नेतृत्व करने के लिए उनके मध्य पहुंच गए। राज्य ने मौका देखकर पथिकजी को गिरफ्तार कर लिया। उन पर एक विशेष न्यायालय के सामने राजद्रोह के आरोप में मुकद्मा चलाया गया। यह एक ऐतिहासिक मुकदमा था। पथिकजी ने न्यायालय के सामने एक विस्तृत बयान दिया था। उसमें उन्होंने रियासतों में ब्रिटिश कूट–नीति के षड्यन्त्रों का पर्दाफाश किया था और रियासती जनता के दमन, शोषण और उत्पीड़न की एक नंगी तस्वीर खींचकर रख दी थी। राज्य के उच्चतम न्यायालय से निर्दोष सिद्ध होने के बाद भी पथिकजी को महाराणा की विशेष आज्ञा से जेल में बन्द रखा गया। उन्हें पांच वर्ष तक उदयपुर की जेल में रहना पड़ा। इस अवधि में पथिकजी ने ढेर सारे साहित्य की रचना की। प्रह्लाद विजय काव्य भी उसी काल की रचना है। सन् 1928 में जब वे जेल से रिहा हुए तो उनका सारा साहित्य राज्य ने अपने पास रोक लिया था और उनका मेवाड़ में प्रवेश निषेध कर दिया था। स्वतन्त्रता के बाद ही जेल में लिखा हुआ साहित्य उन्हें वापस मिल सका और वह अब उनके निधन के बाद धीरे–धीरे पाठकों के सामने आ रहा है।

उदयपुर जेल से रिहा होने के बाद पथिकजी ने अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद की प्रवृत्तियों में हिस्सा लेना शुरू किया और वह उसके उपाध्यक्ष चुने गए। कांग्रेस ने शुरू से ही अपने को देशी रियासतों के आन्दोलनों से अलग रखा। उसका यह मानना था कि कांग्रेस को एक समय एक ही मोर्चे पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिए। अगर अंग्रेजों से निपट लिया गया तो राजा–महाराजा अपने–आप

ठीक हो जाएंगे। किन्तु पथिकजी और दूसरे रियासती नेताओं की मान्यता इससे भिन्न थी। उनका कहना था कि यदि रियासतों को अछूता छोड दिया गया तो अंग्रेज राजाओं का उपयोग भारतीय स्वतन्त्रता के विरोध में करेंगे। अगर रियासती जनता संगठित और जागृत होगी तो स्वतन्त्रता का पक्ष पुष्ट होगा और राजा–महाराजा राष्ट्र विरोधी रुख न अपना सकेंगे। प्रजा का दबाव उनको पथ–भ्रष्ट न होने देगा। घटनाओं ने इस मान्यता का औचित्य ही सिद्ध किया। उस समय कांग्रेस ने रियासतों में अपनी शाखाएं कायम करना स्वीकार नहीं किया, किन्तु पथिकजी और दूसरे रियासती नेताओं के अनुरोध पर सन् 1920 में रियासती जनता को कांग्रेस ने प्रतिनिधि बनने का अधिकार दे दिया। रियासती जनता को अपने राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई स्वयं ही लड़नी पड़ी। अवश्य ही कांग्रेस की नैतिक सहानुभूति उसके साथ थी।

राजस्थान सेवा संघ के संबंध में यहां दो शब्द कहना अप्रासंगिक नहीं होगा। जिस प्रकार स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले ने राष्ट्र के लिए आजीवन सेवा का व्रत लेने वाले कार्यकर्ता सुलभ करने के लिए भारत सेवा समिति और स्वर्गीय लाला लाजपत राय ने लोक सेवक समिति जैसी संस्थाओं की स्थापना की थी, वैसे ही पथिकजी द्वारा स्थापित यह संस्था भी थी। इसमें राजस्थान की आजन्म सेवा का व्रत लेने वाले कार्यकर्ता इकट्ठे हुए थे। यों कहना चाहिये कि यह कार्यकर्ताओं का एक नया कुटुम्ब ही स्थापित हुआ था। उसमें कार्यकर्ताओं ने व्यक्तिगत सम्पत्ति और निजी स्वार्थों को एक उच्च ध्येय के लिए तिरोहित कर दिया था। यह देश के लिए काम करने वाले फाकामस्त और फक्कड़ कार्यकर्ताओं की संस्था थी और उसकी गतिविधियों ने सारे राजस्थान को हिला दिया था। स्थानीय प्रजामण्डलों के अस्तित्व में आने के पहले राजस्थान के जिस किसी हिस्से में भी कोई आन्दोलन हो, चाहे बून्दी का किसान आन्दोलन और चाहे अलवर में नीमूचाणा का हत्याकाण्ड, इस संस्था के कार्यकर्ता पीड़ितों का पक्ष लेने और उन्हें राहत पहुँचाने के लिए सबसे आगे होते थे। आज वह निष्ठा और लगन कार्यकर्ताओं में किंचित ही दिखाई देती है जो इस संस्था के कार्यकर्ताओं में थी। राजस्थान के जन–जागरण में पथिकजी और राजस्थान सेवा संघ का योग कभी भुलाया नहीं जा सकता।

पथिकजी का लेखक और कवि एक उच्च मिशन से प्रेरित था। उन्होंने अनेक पत्रों को जन्म दिया और उनका सफलतापूर्वक सम्पादन किया। उन्होंने सन् 1920 में वर्धा से स्वर्गीय सेठ जमनालाल जी बजाज के सहयोग से राजस्थान केसरी साप्ताहिक निकाला। उसके बाद अजमेर से ही राजस्थान संदेश निकाला। वह राष्ट्रीय पथिक, निरंकुश और अनघढ़ नाम से काव्य–रचना करते थे। उनके काव्य

में भावों की उड़ान, देश–भक्ति, व्यंग–विनोद और मार्मिकता के दर्शन सहज ही होते है। उनके लेखों और निबन्धों की प्रौढ़ता देखते ही बनती है। उन्होंने इतिहास की, विशेषकर गणराज्यों के इतिहास की, शोध–खोज का भी बड़ा काम किया है। साहित्य की जो साधना उन्होंने की है, वह केवल मानव संस्कारों के परिष्कार के महत हेतु से प्रेरित होकर। इसलिए उनके साहित्य का स्थायी महत्व है।

पथिकजी ने देश को राष्ट्रीय झण्डा गान दिया है। केवल इस गान के कारण ही वह साहित्य में अमर होने चाहिएं। अजमेर–जेल में बन्द सत्याग्रही बन्दी जब यह झण्डा गान गाते थे, तब उससे कितनी प्रेरणा पाते थे। उसकी ये प्रथम पंक्तियां 'प्राण मित्रो भले ही गंवाना, पर झन्डा न यह नीचे झुकाना' अवचेतन मन में आज भी सदा ही गूंजती हैं। उनके काव्य में कितनी दृढ़ता और जोश था, उसका एक नमूना यहां देने का लोभ हम संवरण नहीं कर सकते। कवि राजस्थानियों का आह्वान करता है और फिर उनकी ओर से कुछ प्रतिज्ञा भी करता है :–

रेशम समझ कर रेजियों को सदा अपनाएंगे;
वे भी न यदि हमको मिलेंगी, भस्म देह रमाएंगे।
सूखे चने खाने पडें, पकवान गिनकर खाएंगे;
आसन न होगा, घास पत्ते या पयाल बिछाएंगे।
क्या विघ्न के राक्षस हमें भय का प्रपंच दिखाएंगे;
हम देश के हित में यमराज से भी मुदित हाथ मिलाएंगे।
तिल तिल अगर कटना पड़े, निर्भय खड़े कट जाएंगे;
पर वीर राजस्थान का हर्गिज न नाम डुबाएंगे।

जनजागृति के अग्रदूत

पथिकजी राजस्थान की जनजागृति के अग्रदूत थे। उन्होंने राजस्थान में क्रान्ति की अग्नि को प्रज्वलित किया। वह अग्नि धीमे–धीमे प्रखर होती गई और अन्त में अन्याय और अत्याचार पर टिकी सामन्ती–व्यवस्था को भस्म करके ही शान्त हुई। नमक–सत्याग्रह के समय वह राजपूताना–मध्य भारत और अजमेर–मेरवाड़ा प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे और इसी नाते वह दुबारा जेल गए। जेल में उन्होंने एक कविता लिखी थी–'कुछ उजबक कैदी आए है' जो हास्य–विनोद का उत्तम नमूना है। पथिकजी अपने प्रारम्भिक जीवन में बड़े आस्तिक थे। गीता के निष्काम कर्मयोग में उनकी गहरी आस्था थी। धीरे–धीरे उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव गहरा होने लगा था। वैसे अराजकतावाद को वह आदर्श समाज–व्यवस्था स्वीकार करते थे।

देश स्वतन्त्र हुआ, किन्तु स्वतन्त्रता के बाद देश में जिन परिस्थितियों का

निर्माण हुआ, उनके अनुकूल वह अपने को बना नहीं पाए। उनकी सेवाओं की जो स्वीकृति मिलनी चाहिए थी, वह उन्हें नहीं मिली और इसलिए उनका मन वितृष्णा से भर गया था। आज से कोई बत्तीस वर्ष पूर्व अजमेर में एक साधारण–सी बीमारी के बाद 72 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। मृत्यु से पहले अजमेर के पास कार्यकर्ताओं के लिए एक साधना–आश्रम और साहित्य–प्रकाशन केन्द्र स्थापित करने की उन्होंने योजना बनाई थी; कारण वह निष्क्रिय बैठने वाले व्यक्ति नहीं थे। समाज को कुछ न कुछ देते रहना चाहते थे। किन्तु उनकी मृत्यु ने उनके जीवन–कार्य को बीच में ही समाप्त कर दिया। देश की स्वतन्त्रता और नये समाज की रचना के लिए अन्याय और अत्याचारों से मोर्चा लेने वाले एक उद्‌भट योद्धा का जीवन–दीप बुझ गया और उसके बाद कभी पूरी न होने वाली रिक्तता ही शेष रह गई है।

इन पंक्तियों के लेखक को पथिकजी ने देशभक्ति की भावनाओं से अनुप्राणित किया था। उसके जीवन निर्माण में उनका बड़ा योग रहा है। वह उनकी पावन स्मृति में अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करता है।

***स्वाधीनता सेनानी, पत्रकार। पथिकजी के प्रमुख सहयोगी। दैनिक 'हिन्दुस्तान' दिल्ली के सहायक सम्पादक रहे। गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली।**

❑

श्रद्धांजलि

- जानकी देवी पथिक*

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं सब में कुछ न कुछ विशेषता रही है, जिसके कारण वे अमर और पूजनीय बने हैं। इसी प्रकार मेरे पतिदेव में भी, जो राजस्थान के अग्रगण्य नेताओं में से थे, कई विशेषताएं थी।

पाठकों को आश्चर्य होगा कि 12 या 13 साल की सुकुमार अवस्था में ही उन्होंने घर छोड़ दिया था और क्रांतिकारी दल में भर्ती हो गये थे। तथापि वे कई भाषाओं के अच्छे जानकार और सुयोग्य विद्वान थे। उनके पास बी0ए0-एम0ए0 का तो क्या हाई स्कूल का भी सर्टिफिकेट नहीं था फिर भी ऊंची से ऊंची श्रेणी तक के विद्यार्थी उनसे परीक्षोपयीगी प्रश्नों को पूछने आया करते थे।

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, मराठी, बंगला, संस्कृत सभी पर उनका पूर्ण अधिकार था। वे इन सभी भाषाओं में लिखना और बोलना बड़ी अच्छी तरह जानते थे। मेवाड़ उनका कार्य क्षेत्र होने के कारण वे मेवाड़ी भाषा में बड़ी खूबी के साथ व्याख्यान देते थे मानो वे मेवाड़ ही में पैदा हुए हों।

जाति पांति के पचड़े से वे सदैव कोसों दूर रहे। जीवन भर उन्होंने मनुष्य मात्र को केवल एक मनुष्य जाति का आत्मीय ही समझा। इसलिए उनके स्वर्गवास तक किसी को उनकी जाति का पता नहीं था। गूजरों में आते तो समझते कि ये गूजर हैं। जाट अपनी जाति के बतलाते। राजपूत राजपूत होने का दावा करते। मथुरा में लोग उन्हें पंजाबी, सिख और कोई पण्डित समझते थे। वे अपने मुंह से न तो किसी को जात बतलाते न कुछ कहते। कोई पूछता भी कि आप किस जाति के हैं तो कहते कि जो आपको जंचे वहीं मान लो। लोग अपने अन्दाज से ही उन्हें अपनी जाति का समझते थे। इसी प्रकार उन्होंने अपने जन्म स्थान को भी कभी किसी को नहीं बतलाया। एक बार मेरे बहुत आग्रह करने पर वे जन्म स्थान से ही निकल गये किन्तु भावुक और संवेदना शील होने से गांव गुठावली को जहां जन्मे थे नहीं गये। यही कह कर टाल दिया कि रास्ता अच्छा नहीं है। उनमें ये सच्ची साधुता के लक्षण थे।

उनमें कार्य करने की शक्ति भी असीम थी। सभी कार्यों में उनकी गति अबोध थी। वे प्रत्येक विषय की अच्छी जानकारी रखते थे। उनकी दृष्टि में कार्य में कोई

श्रेणी–भेद न था। काम कैसा भी हो उसको सहर्ष करने में वे कभी हिचकिचाते न थे।

अखबार निकलता था तब कभी–कभी ऐसे मौके भी आते थे कि सहकारी, सम्पादक, मैनेजर आदि कोई न होते तो सारा अकेले ही कर डालते थे। वैसे अखबार में मैटर देना, प्रूफ देखना, डिसपेच करना आदि और कभी कभी मशीनमैन और छापने वाले नहीं आते तो मशीन पर कागज उठाने तक का काम भी कर लेते थे।

अखबार में कहीं खाली जगह रह जाये तो कम्पोजिटर आते और कहते कि थोड़ा–सा मैटर चाहिए तो वे तत्क्षण समय के अनुकूल जितने मैटर या कविता की आवश्यकता होती बनाकर दे देते और फिर अपने कार्य में लग जाते। सतत कार्य करते रहना यह उनकी उपासना थी।

उनकी अनेक कविताएं इस प्रकार की होती थीं कि मनुष्य सुनकर लोटपोट हो जाते थे और वे कई दिनों तक मनोरंजन का विषय बनी रहती थीं। कवितायें भी सामयिक, सरल और भावों से भरी होती थीं। जिससे साधारण से साधारण मनुष्य भी उन्हें समझ कर मुग्ध हो जाता था। स्वतन्त्रता दिवस पर सन् 1939 में 26 जनवरी को प्रतिज्ञा लेते समय झंडाभिवादन की कविता जो सर्वत्र गाई गई उन्होंने स्वयं बनाई थी। उन पंक्तियों को कौन नहीं जानता?

"प्राण मित्रो, भले ही गंवाना, पर झंडा ये नीचे झुकाना" यह कविता उन्होंने केवल डेढ़ घण्टे में तत्काल बनाली थी। इसे सबने पसन्द किया था और इससे सारे जुलूस में उत्साह छा गया था।

यद्यपि वे वकील नहीं थे और न कहीं कानून ही पढ़े थे। फिर भी उससे सम्बन्धित कोई विषय ऐसा न था जिसको वे समझ न सकें। किसे याद नहीं है कि जिस समय वे उदयपुर जेल में थे, उस समय अपने मामले की उन्होंने खुद पैरवी की थी और लिखित बयान दिये थे। रियासत के कई नामी वकील एक तरफ थे। और वे अकेले एक तरफ। तीन साल तक कई केस लड़े और साफ बच गये।

उन्हें वैद्यगि का भी अच्छा ज्ञान था। असाध्य से असाध्य बीमारी का भी कौड़ियों की दवा में इलाज कर देते थे। हम लोग घर में बीमार हों तो न तो डाक्टर की दवा खिलाते और न वैद्य की। कैसी भी बीमारी हो खुद ही इलाज करके अच्छे कर दिया करते थे।

सन् 1932 में कई कारणों से एक साल तक अजमेर छोड़कर बाहर ही रहना पड़ा। उस समय मैं भी उनके साथ थी। चार माह तक इन्दौर में श्री सेठ हुक्मचन्द

जी की धर्मशाला नसिया में रहे। तब धर्मशाला वालों को सी.आई.डी. ने तंग किया तो उन लोगों ने भी हमसे कमरा खाली करने को कहा। हम लोग कमरा खाली करके इन्दौर से आगे चले गये। सनावद में श्री खेमजी भाई नाम के एक गुजराती सेठ थे। उनकी कई सन्तानें मर चुकी थी। बुढ़ापे में एक बच्चा दो या ढाई साल का रहा था, वह भी मरणासन्न था। बडे से बड़े डाक्टरों ने इलाज कर लिया था और उस बच्चे को आराम नहीं हुआ था। जब मेरे पतिदेव ने देखा तो एक महीने में ही इलाज करके उसकी सारी बीमारी दूर कर दी और बच्चा मोटा–ताजा हो गया। तभी से वह सेठ जी उनके भक्त बन गये थें। इसी प्रकार बिजौलियां में मेरे सामने एक सत्तर साल के कोढ़ी का इलाज किया था। सफेद कुष्ट से उसके हाथ पैर, मुंह सब सफेद हो गये थे। जहां तक मुझे याद है उन्होंने एक माह तक उसे पथ्य में बिना नमक की चने की रोटी खिलाई थीं और कोई जंगल की बूटी दी थी। जिससे वह बिना पैसे के ही बिलकुल अच्छा हो गया था। इसी प्रकार एक दर्जी पागल हो गया था और वह घर वालों को पीटता था। उसके तलुवे पर जंगल की किसी जड़ी को पीस कर लगाया था। एक हफ्ते में ही उसका पागलपन जाता रहा।

इसी प्रकार सांप, बिन्छू, कान खजूरे आदि के काटे हुए को भी जड़ी बूटी के द्वारा ही वे अच्छे कर देते थे। उन्हें जड़ी बूटियों का अच्छा व्यवहारिक ज्ञान था। बिजौलिया पहाड़ी स्थान में होने के कारण वहां बिच्छू, कान खजूरे आदि अधिक निकलते हैं। प्रतिदिन रात के 12 बजे तक दो चार बिच्छू के काटे हुए आते ही रहते थे। वे जंगल की जड़ी घिसकर लगा देते थे कि अदमी रोता हुआ आता और हंसता हुआ जाता था।

उनकी सूझ बूझ बड़ी विलक्षण थी और वह प्रायः सर्वत्र काम देती थी। बड़े से बड़े काम को वे कम से कम पैसों में सुन्दर बना लेते थे। मथुरा में जो मकान बनवा गये हैं वह इसका उदाहरण है। यह सभी को मालूम है और वे कहा भी करते थे कि बिजौलिया के प्रसिद्ध आन्दोलन में भी बड़ी किफयायत से काम किया और कभी बाहर से भीख नहीं मांगी। स्वावलम्बन उनका संबल था और उसी पर सबको हैरानी थी।

खाली तो वे कभी बैठते ही न थे। प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ करते ही रहते थे। साथ ही हमेशा प्रसन्न चित्त भी रहते थे। पास में पैसा हो या न हो कितना ही दुःख और क्लेश क्यों न हो कभी मुख पर मलीनता आती ही न थी।

मेरे साथ भी जो उनका व्यवहार था वह परम श्लाघनीय था। उसे मैं वर्णन नहीं कर सकती। कई बार मेरे द्वारा भारी–भारी नुकसान भी हुए किन्तु कभी नाराज

या गुस्सा तक नहीं हुए। उनके सामने मैं किसी लायक नहीं थी किन्तु उन्होंने हृदय से मेरा आदर किया और सबके समक्ष हमेशा मेरी बड़ाई की। प्रभु कृपा से मेरा बड़ा सौभाग्य था कि ऐसे धीर–वीर–गम्भीर पति मुझे मिले।

सन् 1954 मई का महीना था। हर साल की भांति स्कूल की छुट्टियाँ होते ही मैं पूज्य श्री पतिदेव के पास अजमेर गई। वहां उनको लू लगी थी। सवेरे आठ बजे की गाड़ी से मैं व बहनोई श्री फूलसिंह पहुंचे। श्री डा0 सा0 राजपाल जी उन्हें देख रहे थे। श्री पृथ्वीसिंह जी मेहता का परिवार बड़ी संलग्नता से सेवा सुश्रुषा कर रहा था। मैंने जाते ही पूछा कि आपने मुझे पत्र क्यों नहीं दिया? कहने लगे कि तुम्हें इसलिये पत्र नहीं दिया कि तुम बीमारी का हाल सुनकर घबरा जातीं और मुझे तो यह विश्वास था कि तुम आ ही जाओगी सो तुम आ ही गईं।

अजमेर में पहले कई बार बीमार हुए थे। तब डा0 सा0 अम्बालालजी शर्मा ही इलाज करते थे और अच्छा भी कर लेते थे। इसी विचार से मैंने कहा कि आपने डा0 सा0 को क्यों नहीं बुलाया तो कहने लगे कि डा0 सा0 मिले नहीं। उसी समय मैंने श्री फूलसिंह को डा0 सा0 के पास भेजा। डा0 सा0 ने अपने पास से इन्जेक्शन दिया और दवा दी। उसदिन अच्छे रहे। रात को भी थोड़ी सी नींद आई ! दिन में मिलने वाले आते तो जैसा कि उनका हंसी करने का स्वभाव था सबसे हंस 2 कर बातें करते। सबके मना करने पर भी मानते नहीं थे। उन्हीं दिनों श्री शोभालालजी गुप्ता की धर्म–पत्नी विजयाबहिन अजमेर आई हुई थी। वह मिलने जातीं तो अपने स्वभाव के अनुसार बड़ी जोर से हंसते।

बीमारी की हालत में भी उन्हें देश के काम की बड़ी धुन थी। डा0 सा0 आते तो कहने लगते कि डा0 सा0 मुझे शीघ्र अच्छा करो। नोटिस छप गये हैं, अखबार निकालना है।

अपनी बीमारी की चिन्ता न करके हम लोगों की चिन्ता अधिक करते थे। बार–बार हम लोगों से कहते कि तुम लोग रात के जगे हो खाना खाकर सो जाओं। बार–बार आग्रह करने पर हम सब थोड़ी देरी के लिये जमीन पर लेट गये। मैंने अपने भतीजे अभय को पास बिठाया। इसी बीच में पेशाब करने के लिये उठे और पास ही ग़ुसलखाने में गये। उनके पीछे ही फूलसिंह भी उठे और उन्हें पकड़ कर बिस्तर पर लिटा दिया। उसी समय से जिह्वा कुछ–कुछ लड़खड़ाने लगी। उसी रात नींद भी नहीं आई। उस रात को वे ही पिछली बातें याद करते रहे। कभी कहते कि स्टेशन पर कुछ आदमियों का इन्तजाम करना है। हथियार वहां रखे हैं। ऐसा न हो कि ट्रेन छूट जाय। हथियारों का किसी को पता न लग जाय। कभी माला फेरने

लग जाते।

तीन चार साल पहिले से पूजा आदि भी करने लगे थे। चैत्र व आश्विन में पूरे नौ दुर्गा के दिनों में उपवास करते थे और रात्रि को हवन करके दूध या साबू दाना लेते थे।

वह रात तो उसी प्रकार निकली। सवेरा होते ही डा0 सा0 आए और उन्होंने इंजेकशन दिया व दवा पिलाई किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। हालत गिरती ही गई। दिन में 12 बजे तक अच्छी तरह से बातें करते रहे। 12 बजे के बाद जीभ अधिक लड़खड़ाई और दो बजे निर्जला एकादशी को शान्त भाव से एक दम बिना किसी परेशानी के ऐसे आंखें बन्द करलीं मानों चिरनिद्रा में सो रहे हो।

उस समय मेरी यह लगन और लालसा थी कि किसी तरह अच्छे हो जावें और शरीर देखते हुए यह विश्वास भी नहीं होता था कि ये इतनी जल्दी मुझ अभागिनी को छोड़ कर चल देंगे। भविष्य के लिये मैं कुछ भी नहीं पूछ सकी कि मुझे क्या करना चाहिये।

इसके बाद कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री कन्हैयालालजी, जियालालजी आदि ने उनकी शान के अनुरूप ही दाह संस्कार करा दिया।

इसके बाद मुझे कोई सहारा नहीं दीखा। मैं हताश हो रही थी कि 15 या 20 पुस्तकें हस्त लिखित हैं, इनको कैसे छपा सकूंगी। इनके कुछ मित्रों ने कहा कि सारा साहित्य हमें दे दो, हम प्रकाशित करा देंगे, किन्तु यह बात मुझे जंची नहीं।

पतिदेव के खास–खास मित्रों ने मुझे अजमेर में रखने की काफी कोशिश की। इनमें प्रमुख हैं डा0 अम्बालाल जी, कन्हैयालालजी आर्य, चौ0 शिवनारायण सिंह जी वकील आदि। मेरी भी यही इच्छा थी कि मैं अजमेर में रहूं। मुझे कुछ कार्य मिल जाये तो उसके बाद साहित्यप्रकाशन करवाती रहूं। किन्तु अजमेर का निवास मेरे भाग्य में बदा न था। अजमेर सरकार से इसीलिये मुझे कोई सहयोग न मिला।

उस समय उनके पुराने मित्र पूठोली और ओछड़ी ठाकुर साहब ने मुझे काफी हिम्मत बंधाई। दोनों ठा0 सा0 ने कहा कि तुम अपनी इच्छानुसार पूठोली और ओछड़ी कहीं भी रह सकती हो और वहां धीरे–धीरे साहित्य भी प्रकाशित करवाते रहेंगे।

उस समय बिजौलिया में कुछ सामान रखा था और मकान भी खाली करना था। सामान लेने व मकान खाली करने मैं बिजौलिया गई। रास्ते में कोटा ठहरी तो वहां मा0 सा0 श्री शम्भूदयालजी सक्सेना मिले। उन्होंने मुझे काफी सान्त्वना दी और कहा कि कुछ साहित्य मेरे पास उनका रखा है, और भी जो कुछ होगा उसे

एकदम नहीं तो धीरे–धीरे करके सारा प्रकाशित करवा देंगे। आप चिन्ता मत करो।

इसके बाद मैं फिर अजमेर गई और वहां चार माह तक परेशान होती रही किन्तु साहित्य प्रकाशन का कोई साधन न दीखा तो हारकर मथुरा ही आना पड़ा। मथुरा में आकर मैं एकदम पागल की तरह हो गई थी। किसी कार्य को करने की इच्छा न थी। यहां चम्पा अग्रवाल कालेज के वायस प्रिंसीपल श्री जगदीश शरणजी व श्रवणलालजी वकील, श्री माता प्रसादजी आदि ने मुझे समझा बुझाकर कार्य में लगाया। यहांअपना वहीं पुराना अध्यापन कार्य करने लगी।

***पथिकजी की धर्मपत्नी। पथिक मार्ग, जनरल गंज, मथुरा (उ.प्र.)**

❑

पथिक : एक सिपाही

- बनारसीदास चतुर्वेदी*

समाचार–पत्रों में जहां कहीं राजस्थान का नाम आता, वहीं पथिकजी का नाम दीख पड़ता, देशी रियासतों की अत्याचार–पीड़ित मूक जनता का जब कभी जिक्र आता, लोग पथिकजी का नाम लेते। मित्रों से जब कभी बातचीत होती, वे कहते 'भाई, काम करने वाला तो एक ही है, पथिक।'

मैं सोचता था पथिक कौन है? पथिक का जन्म कहां हुआ? उन्होंने क्या और कैसी शिक्षा पायी, इत्यादि बातों को जानने की उत्कण्ठा मेरे दिल में न तब थी, न अब है। मैं चाहता था कि कोई आदमी मुझे पथिक के उन गुणों का परिचय दे, जिनके कारण उनका नाम दुःखित जनता के लिए इतना आदरणीय हो गया है, उनका चरित्र–चित्रण करे। मेरी यह इच्छा कुछ दिनों बाद पूर्ण हुई और बड़े आश्चर्यजनक ढंग से पूर्ण हुई।

देशबन्धु सी.आर. दास के मकान पर महात्मा गांधी और दीबन्धु ऐण्ड्रूज बातचीत कर रहे थे। वही बैठा हुआ मैं भी इस वार्तालाप को सुन रहा था। कुछ देर बाद मि0 ऐण्ड्रूज ने कहा, महादेव भाई कहां है? महात्माजी ने उत्तर दिया–वे कहीं बाहर गये हुए है, क्या आपको उनसे कोई काम है? मि0 ऐण्ड्रजू ने कहा पथिक के विषय में कुछ पूंछना था। कौन हैं, कैसे आदमी है? महात्माजी मुस्कराते हुए बोले मैं आपको पथिक के बारे में कुछ बतला सकता हूं। पथिक काम करनेवाला है, दूसरे सब बातूनी हैं। पथिक एक सिपाही आदमी है, बहादुर है, जोशीला और तेज मिजाज हैं, लेकिन जिद्दी है। जब महादेव भाई बिजौलियां गये थे तब पथिक उनके निर्भ्रान्त साथी थे। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बिजौलियां की जनता का उन पर पूरा–पूरा विश्वास है।

*पत्रकार-महारथी और लेखक। राज्यसभा के सदस्य रहे

❑

राजस्थान की विभूति

- जयनारायण व्यास*

राव गोपालसिंह खरवा के साथ क्रांति और बाद में बिजौलिया पहुंच कर वहां उन्होंने किसान पंचायतों का ऐसा शक्तिशाली संगठन किया कि राजशाही, साम्राज्यशाही और सभी शक्तियों का मुकाबला पथिक जी द्वारा निर्मित बिजौलिया की पंचायत करती थी। उसको जो नेतृत्व पथिक जी के जमाने में मिला था वैसा अब नहीं मिलता।

पथिक जी ने राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की थी। वह कुछ ही आदमियों की इतनी जबरदस्त संस्था थी कि सभी रजवाड़े उससे भय खाते थे, संघ का नवीन राजस्थान राजागण ध्यान से पड़ते थे और भय खाते थे। प्रजा में भी उसकी एक–एक प्रति को बीस–बीस आदमी पढ़ते थे। नवीन राजस्थान पर आफत (प्रवेश निषेध) आई तो उस पत्र का नाम तरुण राजस्थान कर देना पड़ा।

राजस्थान में जितने बड़े–बड़े कार्यकर्ता नजर आते हैं उन्हें बनाने में पथिक जी का हाथ था। मेवाड़ में, बूंदी में, सिरोही के भीलों में, मोतीलाल जी तेजावत की पीठ पर तथा देशी राज्य प्रजा परिषद् को जन्म देने में पथिकजी का हाथ था। अंतिम दिनों मे पथिक जी का उपयोग नहीं लिया गया। राजस्थान पुराने कार्यकर्ताओं से जिस तरह चाहिए उस तरहसेवा नहीं ले पाता है। श्रद्धेय पथिक जी का स्मारक राजस्थान सरकार को वनाना चाहिए, जिस व्यक्ति ने सारे राजस्थान को बहुत समय जगाया उसे हमें भूलना नहीं चाहिए। पथिक जी उन दिनों राजपूताने में वड़ी निर्भीकता के साथ काम कर गये जब कि वहां गांव वालों के साथ बात करना भी खतरे से खाली नहीं था और ऐसा वे तव तक करते रहे जव तक कि वे सन् 1935 में अजमेर छोड़ कर नहीं चले गये। राजस्थान की (सामन्तवादी) सरकारें उनसे कांपती थी और अंग्रेज उनके नाम से डरते थे। वे एक बडे कुटनीतिज्ञ और अद्भुत व्यक्ति थे। उनकी एक कविता प्राण मित्रो, भले ही गवाना, पर न झण्डा ये नीचे झुकाना? हम जेल–यात्री रोज प्रार्थना के समय गाते थे।

किसानों में राजनैतिक दृष्टि से काम करने वाले पथिक जी पहले आदमी थे जिन्होंने किसानों के आन्दोलन को हाथ में लिया और सफल किया। वे बिजौलिया आंदोलन के आदि प्रवर्तक थे।

***प्रमुख स्वाधीनता-सेनानी, पत्रकार और कार्यकर्त्ता।**
राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री

❑

अमर सेनानी

- सूर्य नारायण व्यास*

राजस्थान के स्वाधीनता संघर्ष के सृष्टा विजयसिंहजी पथिक का स्वर्गवास हो गया, और इस प्रकार राजस्थान के एक इतिहास का महत्वपूर्ण घटक हमारे बीच से गुपचुप चला गया। एक समय था पथिकजी के नाम से राजस्थान का समस्त शासन कंपित हो उठता था। और जनता का ठेठ ग्रामीण वर्ग भी उनके गीतों को गाकर स्फूर्ति ग्रहण करता था। भारत का यह सत्याग्रह अन्य संघर्ष के लिए प्रेरणास्पद बना है। बारडोली का दूसरा सत्याग्रह प्रयोग था। मैंने पथिकजी के अजमेर के राजस्थान सेवा संघ के दर्शन किये हैं, उनकी गतिविधि को देखा है, और प्रेरणा प्राप्त की है। पथिक जी की रही है। पथिक जी का नाम ही राजस्थान की क्रांति कहा जा सकता है। उनके त्याग कष्ट–सहन और सेवा–परायणता की कहानी बहुत लम्बी है। वे चाहे कहीं मिनिस्टिरी के फेरे में न पड़े, पर आज के अनेक मिनिस्टरों के निर्माण में पथिक जी की प्रेरणा रही है। राजस्थान की जागृति में पथिक जी का प्रबल हाथ रहा है। पथिक जी केवल नेता, कार्यकर्ता, वीर, त्यागी, तेजस्वी क्रांतिकारी ही नहीं थे, वे सुकवि, गीतकार, सशक्त लेखक, सफल पत्रकार और राजस्थान के साहित्य के मर्मज्ञ भी थे। बहुत कम लोगों को पता होगा कि वे बहुत बड़े मौलिक विचारक और चिन्तक भी थे। इतिहास की अनेक गुत्थियों को उन्होंने अपनी प्रचण्ड प्रज्ञा और सतत अध्ययन शीलता से सुलझाया था। आर्यों के आगमन, सृष्टि के आरम्भ, प्रलय के काल पर पुराणों और इतिहास ग्रन्थों से बड़े ही मौलिक तथ्यों का अन्वेषण किया था। उन्होंने सैकड़ों पृष्ठ इस सांस्कृतिक अध्ययन अन्वेषण पर लिखे हैं, जो वास्तव में अत्यन्त महत्व के हैं। प्रकाशन और प्रचार पीडा से परान्मुख प्रवृत्ति के कारण उनका यह महत्वपूर्व एवं विस्तृत साहित्य अप्रकाशित रूप से पड़ा है। हमने कुछ वर्ष पूर्व उनके नथुरा के निवास स्थान पर उन्हें पुराणों की खोज करते देखा है और सैंकड़ों पृष्ठों को लिखित रूप से अवलोकन किया है। वे जब उज्जैन आये थे, उनसे चर्चा हुई थी, उन्होंने बतलाया था कि लगमग 1200 पृष्ठों में अपना यह संशोधन लिख डाला है। ऐसे मौलिक तथ्यान्वेषी विद्वान का सहसा अवसान देश की बहुत बड़ी क्षति है। आपाधापी के इस स्वार्थी शासन और समाज में उनके त्याग, तप और शौर्य का शायद ही स्मरण किया गया हो और

उनकी एकान्त साधना को शायद ही कुछ लोगों ने समझा, देखा हो। पथिक जी घोर स्वाभिमानी थे, वे आन–बान शान के प्रचण्ड पुरुष थे। उनका निधन केवल राजस्थानी क्रान्ति के विधाता, बेगू के उद्धारक अथवा राजस्थानी जनता के जागृति दूत का ही नहीं, सारे देश के प्रिय पत्रकार, नेता, कवि, साहित्यकार और प्रचण्ड पुरातत्वान्वेषी का निधन है। मध्य भारत की जागृति में पथिक जी का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। इसलिये पथिक जी के अवसान से हमारी भी क्षति ही हुई है। हम उन प्रचण्ड पुरुष, नेता, साहित्यकार के प्रति अपनी श्रद्धांजलि सादर अर्पित करते हैं।

साथ ही राजस्थान, और मध्यप्रदेश शासन से अनुरोध करते हैं कि ये दोनों शासन मिल कर एक ऐसी निधि निश्चित करें जिसमें पथिक जी का काव्य, साहित्य, संशोधन प्रकाश में आये और उनकी उचित स्मृति की रक्षा हो।

***मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध विद्वान्**

❑

राजस्थान की जन-जागृति के जनक

- युगल किशोर चतुर्वेदी*

राजस्थान की अनुर्वरा बालुकामयी भूमि में जिन महापुरुषों ने जागृति के बीज बोकर उनको अपने खून–पसीने से सींच कर अंकुरित, पल्लवित ही नहीं, पुष्प–फलान्वित भी किया है, उनमें स्वर्गीय पं0 अर्जुनलालजी सेठी, ठा0 केशरी सिंह जी बारहठ, कु0 प्रतापसिंह जी बारहठ तथा बाबा नरसिंहदासजी आदि के साथ–साथ स्वर्गीय विजयसिंह जी पथिक का नाम सर्वोपरि आता है। बुलन्दशहर के एक छोटे से ग्राम गुठावली में साधारण किसान–परिवार में जन्म लेकर अपने सार्वजनिक जीवन का सर्वोत्तम समय राजस्थान के देशी राज्यों की शोषित, पीड़ित तथा आतंकित प्रजा को संगठित, शिक्षित तथा शक्तिशाली बनाकर उसको अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये बलिदान होने हेतु आरूढ़ करने में ही व्यतीत किया था। इस कार्य में आप अनेक असह्य कष्ट तथा भीषण यातनाएं भोगने के अतिरिक्त दीर्घ काल तक जीवन और मृत्यु के झूले में झूलते रहे थे।

जिन दिनों पथिकजी ने इस प्रदेश में किसान संगठन का शंख फूंका था, यहां केवल निरंकुश नरेशों तथा स्वेच्छाचारी शासकों का ही अत्याचार और आतंक नहीं था, यहां की जनता को अंग्रेजों तथा जागीरदारों अथवा ठिकानेदारों की दोहरी–तिहरी गुलामी में रहना पड़ता था, जिसका सबसे अधिक घातक प्रभाव यहां के बहुसंख्यक किसानों पर पड़ रहा था। उनको उस युग में प्रचलित प्रथा के अनुसार भारी–भरकम भू–राजस्व चुकाने के अतिरिक्त अनेक प्रकार की लाग–बाग, भेंट, बेगार आदि नाम के कर और चुकाने पड़ते थे, जिससे वे जीवन भर निपट निर्धनता के चंगुल में फंसकर नारकीय यातनाएं सहन करते रहते थे।

स्वयं किसान परिवार में पैदा और लालित पालित होने के कारण पथिकजी का ध्यान रियासतों में बसे हुए मूक किसानों के कष्ट–कलाप की ओर आकर्षित होना सर्वथा स्वाभाविक था। आपका जैसा बहुमुखी प्रतिभा का धनी व्यक्ति यदि चाहता तो उस समय के प्रमुख राजनीतिक संगठन कांग्रेस जैसे किसी भी दल में सम्मिलित होकर उच्चकोटि के नेता बन सकते थे, परन्तु आपने अपनी व्यक्तिगत सुख–सुविधा तथा कीर्ति और प्रसिद्धि के प्रलोभन को तिलांजलि देनकर, पीड़ित और पद दलित

जनता की सेवा–सहायता तथा उनके उत्थान को अपने जीवन का चरम लक्ष्य बनाया था।

राजस्थान में पदार्पण करते ही आपकी पैनी दृष्टि सर्वप्रथम मेवाड़ राज्यान्तर्गत बिजौलियां ठिकाने के किसानों की दयनीय दशा की ओर गई और उससे द्रवीभूत होकर आपने उनके कष्टों के निवारणार्थ अपने आपको अर्पित कर दिया। उन असभ्य और अर्द्ध–सभ्य लोगों को ठिकानेदार ही नहीं, मेवाड़ सरकार के मुकाबले खड़े करना तथा भीषण दमन और असंख्या अत्याचारों के बावजूद उनके साहस और मनोबल को ऊंचा बनाये रखना पथिकजी जैसे दृढ़–प्रतिज्ञ व्यक्ति के ही बूते का काम था।

बिजौलिया का किसान आन्दोलन और उसके प्रमुख सूत्रधार श्री विजयसिंह जी पथिक का उसमें रहने वाला भाग आपकी गिरफ्तारी, आपके विरुद्ध चला मुकदमा तथा उसके फलस्वरूप मिला कठोर दण्ड तत्कालीन समाचार–पत्रों के प्रचार से इतने प्रसिद्ध हो चुके हैं कि उसके पिष्ट–पेषण से लेख का कलेवर बढ़ाना अनावश्यक ही होगा।

यद्यपि उन दिनों प्रकाशित समाचारों तथा आपके द्वारा रचित व्हाट आर इण्डियन स्टेट्स आदि पुस्तकों के माध्यम से मैं पथिकजी के कार्य और विचारों से बहुत परिचित हो चुका था और मेरे अनुज भोलानाथ चतुर्वेदी, जिन्होंने अजमेर में अध्यापक रहते हुए आपकी यथेष्ट सहायता की थी, के माध्यम से मिली जानकारी से आपके प्रति आकृष्ट हो चुका था, परन्तु आपसे साक्षात मिलने तथा विचार–विनिमय करने का अवसर सन् 1939 में उन दिनों मिला था जब भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल की ओर से चलाये गये सत्याग्रह–आन्दोलन का संचालन करता हुआ मैं मथुरा–स्थित 'सत्याग्रह–शिविर' में रह रहा था।

मेरे मथुरा छोड़ने के अनन्तर कुछ वर्षों तक मथुरा तथा आगरा रहकर फिर आप भी राजस्थान में लौट आये थे और अजमेर, उदयपुर कोटा आदिअपने कार्य क्षेत्र के पुराने स्थानों में भ्रमण करते रहे थे, परन्तु उन दिनों आप अत्यन्त जरा–जर्जरित तथा उपेक्षित होकर दयनीय दशा तक पहुंच गये थे, यहां तक कि आपको आवश्यक अन्न–वस्त्र तक का भी अभाव हो गया था। जिस अजमेर नगरी में कभी आप एक अत्यन्त प्रमुख तथा प्रभावशाली नेता के रूप में प्रतिष्ठित रहे थे, वहीं आप इन दिनों अकेले ही गलियों में घूमते फिरते थे। ऐसी ही दशा में एक दिन जब आबूरोड से वहां पर हुए गोलीकाण्ड की जांच करके लौट रहा था, तो अजमेर स्टेशन पर मुझे यह दुःखद समाचार मिला कि पथिकजी का उसी दिन देहावसान

हो गया था।

इसके कुछ ही दिनों के उपरान्त जयपुर में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई थी। उसके प्रधानमंत्री की हैसियत से मैंने एक शोक प्रस्ताव पथिकजी के निधन पर तैयार करके उसको प्रस्तुत करने के लिए आपके एक साथी से अनुरोध किया, परन्तु मेरी आशा के विपरीत उन्होंने इन्कार कर दिया। मुझे अपने साथी सहयोगियों के क्षुद्र विचारों से बड़ी ठेस लगी और मैंने स्वयं ही उस प्रस्ताव को प्रस्तुत करके तथा एक दूसरे सदस्य से अनुमोदन कराके उसे पारित भी करा लिया। परन्तु तभी से मुझे मनुष्यों की यह प्रवृत्ति सदैव पीड़ित करती रही है कि अपने किन्ही राजनीतिक मतभेदों के कारण बड़े से बड़े त्यागी–तपस्वी जन–सेवक की पुरानी सेवाओं को इस अंश तक भुला दिया जाता है कि उनकी मृत्यु के अनन्तर भी वे शोक–सहानुभूति के दो शब्दों के भी अधिकारी नहीं माने जाते।

श्री विजयसिंह जी पथिक राजस्थान के लाखों शोषित, पीड़ित और पद–दलित किसानों के त्राता के रूप में सदैव स्मरण किये जायेंगे और अब से लगभग 50 वर्ष पूर्व इस पिछड़े प्रदेश की जन–जागृति के आप जनक रहे हैं, इसको कोई भी अन्यथा सिद्ध नहीं कर सकता।

***प्रमुख स्वाधीनता-सेनानी, पत्रकार, लेखक। राजस्थान सरकार में मंत्री, दैनिक 'राष्ट्रदूत' के सम्पादक रह चुके हैं। सम्प्रति 'लोक शिक्षक' के सम्पादक-प्रकाशक। अशोक गर्ग, सी-स्कीम, जयपुर**

❑

पथिकजी एक महापुरुष

- जगदीश प्रसाद 'दीपक'*

राजस्थान केसरी श्री विजयसिंह पथिक सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न एक ऐसे महापुरुष थे जैसे सहस्रों वर्षों में एकाध ही होते हैं। यह महान् आत्मा जहां लेनिन की टक्कर का जन–क्रान्तिकारी साबित हुआ वहां महाकवि और मौलिक मेधा सम्पन्न महान साहित्यकार एवं कुशल पत्रकार भी अपने युग का एक ही था। क्रान्ति के तीन दौर का नेतृत्व इस महापुरुष ने दस–दस बरस करके तीन बार किया था।

सन् 1907 में भूपसिंह नामधारी यह महापुरुष रासबिहारी बोस और शचीन्द्र सान्याल के क्रान्तिकारी दल में शामिल हो गया था। बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह, जोधपुर के शासक सर प्रताप और अजमेर में खरवा के राव गोपाल सिंह ने भी भारतीय क्रान्तिकारियों की गुप–चुप सहायता आरम्भ कर दी थी।

क्रान्ति के नेता श्री रास बिहारी बोस ने बाद में लार्ड हार्डिंज बम–काण्ड में प्राण–दण्ड प्राप्त करने वाले भाई बालमुकुन्द को तो जोधपुर महाराजकुमारों के शिक्षक पद पर और भूपसिंह को राव गोपाल सिंह के निजी सचिव के रूप में नियुक्त किया था।

बनारस षड्यन्त्र के प्रसंग में जब राव गोपाल सिंह जी को सन् 1914 में टाडगढ़ में नजरबन्द किया गया तब भी क्रान्तिकारी भूपसिंह उनके निजी सचिव बने। उनके साथ ही नए लाहौर का एक सब–इन्स्पेक्टर इनकी टोह में टाडगढ़ पहुंचा। उनसे पहले तो यह समाचार प्राप्त कर भूपसिंह मेवाड़ के जंगलों में फरार हो गये, दूसरे दिन राव गोपाल सिंह भी नजर बन्दी तोड़ कर भाग गये।

राव गोपाल सिंह तो फिर सलेमाबाद (किशनगढ़) के मन्दिर पर अंग्रेजों से यह वचन ले कर कि उन पर बनारस–षड्यन्त्र के आरोप में मुकदमा नहीं चलाया जायगा गिरफ्तार हो गये। लेकिन भूपसिंह ने दाढ़ी बढ़ाई और अपना नाम वी.एस. (विजय सिंह) पथिक बना लिया। उन्होंने रेलवे से 60 मील दूर बिजौलियां के किसानों को घूम–घूम कर बरसों तक जागृत और संगठित किया।

इस प्रकार विजय सिंह पथिक ने ही महात्मा गांधी के आने से पहले भारत की भूमि पर उनके सत्याग्रह प्रयोगों को सफल कर लिया था। स्वयं राजपूताना के ए.

जी.जी., हालेण्ड ने बिजौलिया में सात दिन तक पड़े रह कर पथिक जी की इस सारी शान्त और अहिंसात्मक क्रान्ति के सामने घुटने टेके। किसानों की 80 लाग बाग बन्द हुई। ब्रिटेन की पार्लियामेन्ट में पथिक के नाम और काम की गूंज रहती थी।

इसी बीच पथिक जी के राजस्थान सेवा संघ और राजस्थान केसरी वर्धा, नवीन राजस्थान और तरुण राजस्थान अजमेर ने एक राजस्थानी भावना को जन्म और जागृति का सन्देश दिया।

श्री विजयसिंह पथिक की तीसरी क्रान्ति में हिंसा और अहिंसा के दोनों दौर अजमेर में पूरे होकर रहे। सन् 1930 के नमक सत्याग्रह से सन् 1935 तक श्री पथिक जी अजमेर में कांग्रेस आन्दोलन और गुप्त क्रान्तिकारी कार्यों के सूत्रधार थे। अन्य नमक सत्याग्रह प्रारम्भ होने से पहले ही प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष होने के नाते बाबा नृसिंह दास जी के साथ दो साल के लिए जेल भेज दिये गये थे। गिब्सन गोली काण्ड में काम आने वाला रिवाल्वर भी श्री रामचन्द्र बापट को पथिक जी ने ही दिया था।

सन् 30 के सत्याग्रह से पहले और सन् 28 में मेवाड़ की जेल से आने के पश्चात् पथिक जी ने अजमेर में रेलवे कारखाने के मजदूरों को भी अपने बिजौलियां के किसानों की भांति ही संगठित कर दिया था। युवक–संघ का भी संगठन कर दिया था। सेठ जमना लाल बजाज की महत्वाकांक्षा देख कर बिजौलियां का आन्दोलन लिखित रूप में और बाद में अजमेर का क्षेत्र भी पथिक जी ने सहर्ष छोड़ दिया था। जब तक रहे यहां के सार्वजनिक जीवन के सर्वमान्य नेता ही वह रहे।

श्री विजयसिंह पथिक ने राष्ट्रीय पथिक, अनघड़ और निरंकुश नाम से सहस्रों शास्त्रीय, राजनीतिक कवितायें लिखीं। आपने भारतीय पुरातत्व और पुराणों का गणराज्यात्मक अन्वेषण अद्वितीय ढंग से सहस्त्रों पृष्ठों में लिखा। भारत की भूमि पर इतने कठोर जीवट वाले सफल क्रान्तिकारी और महाकवि का समन्वय बस एक ही महापुरुष में हुआ था। जब पथिक जी अपनी समस्त जवानी का क्रियाक्षेत्र सेठ जमना लाल बजाज को सौंप कर आगरा चले गये तो किसी ने पथिक जी को लिखाः– आपने तो राजस्थान को छोड़ ही दिया है। पथिकजी का उत्तर था–वस्तुस्थिति यह कहने में है कि राजस्थान ने मुझे छोड़ दिया है। मैं व्यर्थ ही उस पर लदूं क्यों? इस प्रकार तीन–तीन क्रान्तियों का नायक नेतागीरी के संघर्ष से बच कर अज्ञात जीवन का बुढ़ापा बिता गया। श्री पथिक जी के कीर्तिशेष होने पर तथ्कालीन मुख्य मन्त्री पं0 हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर राज्य में सरकारी छुट्टी रखी थी।

***प्रसिद्ध पत्रकार। 'मीरा' के यशस्वी सम्पादक रहे** ❑

महान क्रांतिकारी

- चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय*

जमीने चमन गुल खिलाती है क्या–क्या, बदलता है रंग आस्मां कैसे–कैसे? एक जमाना था जब विजयसिंह पथिक के नाम से राजपूताना की राजाशाही और सामन्त शाही थर्राती थी। एक जमाना आज है कि जब लोग उनका नाम भी भूलते जाते हैं। पथिक को याद भी क्यों करें? उसने मातृ–भूमि की आजादी के लिए खून बहाया, अपना भी और शत्रुओं का भी और राजनीतिक चेतना जगाने में खून–पसीना एक कर दिया। अब आजादी मिल गई तो अब न खून देने की जरूरत रही, न खून पसीना एक करने की। अब तो खून बढ़ाने और ठंडी हवाओं में पसीना सुखाने का समय है। पथिक के जीवन से प्रेरणा लेने का सवाल ही नहीं रहता।

लेकिन पथिक को हम भले ही याद न करें, इतिहास के पन्नों में उनका नाम पत्थर की लकीर की तरह विस्मृति के गर्भ में बना रहेगा।

पथिकजी का जन्म कब और कहां हुआ, वह भूपसिंह से विजयसिंह कैसे बने, इन बातों का महत्व नहीं है जितना उनके व्यक्तित्व और कारनामों का।

निराला व्यक्तित्व

पथिक जी के निराले व्यक्तित्व के कई रूप सामने आते हैं जिनमें कुछ तो परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं परन्तु यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता भी है कि उनमें समन्वय की कितनी अद्‌भुत शक्ति थी।

पथिक जी के जीवट, बहादुरी, निर्भयता तथा अपनी जान की तनिक भी परवाह न करने की प्रकृति का परिचय देने वाली कई ऐसी रोमांचक घटनाएं हैं जिन पर यकायक विश्वास नहीं होता। हिंसा की कार्रवाइयां करने वाले क्रान्तिकारी पथिक ने बाद में बिजौलियां के अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन का संचालन किया। पथिक जी एक कर्मठ, क्रियाशील व्यक्ति थे, किन्तु साथ ही एक प्रतिभाशाली विचारक, लेखक, पत्रकार और कवि भी थे।

भूपसिंह अपने बहनोई के पास 1905 में किशनगढ़ आकर रहने लगे। 1907 में इनका सम्पर्क प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता रासबिहारी बोस से कराया गया। बोस भूपसिंह की उत्कृष्ट देश भक्ति से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें दल में शामिल

कर लिया। सरकार को इस दल का पता चल गया। वह दमन करने लगी और उसने 36 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया जिनमें भूपसिंह भी थे। इसके फलस्वरूप मानक टोला कान्सिपिरेंसी केस नामक मशहूर मुकदमा चला जिसमें कन्हाईलाल दत्त और सत्येन्द्रनाथ सान्याल को फांसी की सजा दी गई। अभियुक्तों में नगेन्द्र गोस्वामी सरकारी गवाह बन गया था इसलिए इसका सफाया करने की योजना बनाई गई। भूप सिंह ने छद्मवेश में जेल की नौकरी करली और कन्हाईलाल दत्त के पास रिवाल्वर पहुंचाया जिससे गोस्वामी की हत्या कर दी गई।

भूपसिंह ने कलकत्ता की ग्रे–स्ट्रीट में बम फेंका जिससे चार अंग्रेज घायल हुए। कुछ दिन बाद दल के लिए धन इकट्ठा करने के वास्ते भूपसिंह सहित 40 क्रान्तिकारियों ने ढाका जिले के एक साहूकार के घर में डाका डाला और करीब 20 हजार रुपये का माल लूटा। साहूकार के चौकीदार ने भूपसिंह के लाठी मारी लेकिन उन्होंने उसे गोली से मार गिराया।

अलीपुर बम केस के सरकारी गवाह चटर्जी की हत्या का काम भूपसिंह को सौंपा गया। चटर्जी की जगह उसका छोटा भाई भूपसिंह की गोली का शिकार हुआ।

1911 में भूपसिंह को भाई बाल मुकुन्द के साथ राजपूताना के क्रान्तिकारी दल संगठित करने के लिए भेजा गया। भूपसिंह ने अजमेर के रेलवे कारखाने में नौकरी करली और सुखदीन मिस्त्री के सहयोग से बम के गोले, रिवाल्वर, बन्दूकें बनाने की तैयारी की। यहीं उनका सम्पर्क खरबा के राव गोपालसिंह से हुआ। व्यावर के सेठ दामोदर दास राठी ने इन क्रान्तिकारियों को आश्रय तथा धन की सहायता दी।

रास बिहारी बसु ने 1914 में देश व्यापी विप्लव की योजना बनाई थी लेकिन दल के एक व्यक्ति ने विश्वासघात करके सरकार को इसकी सूचना दे दी। राव गोपालसिंह और भूपसिंह को गिरफ्तार करके टाडगढ़ के किले में बन्द कर दिया गया। दूसरे साथियों को छुड़ाने की व्यवस्था करने के लिए भूपसिंह साधु का भेष बनाकर भाग निकले। लेकिन एक भयानक दुर्घटना के कारण यह व्यवस्था न हो सकी और वे बीहड़ जंगलों में पैदल भटकते रहे।

गिरफ्तारी

क्रान्तिकारी दल कलकत्ता के जिला मजिस्ट्रेट किंग्जकोर्ड की हत्या करना चाहता था, लेकिन गलती से उसके बदले दो अंग्रेज महिलाएं मारी गई। यह 1908 की बात है। पुलिस ने कलकत्ता के मानक टोला में क्रांतिकारियों के अड्डे पर छापा मारा। बम बनाने की कुछ सामग्री पुलिस के हाथ लगी। फरार भूपसिंह जंगल में

चलते–चलते थक कर सो गये। इतने में शेर ने टांग पकड़ कर घसीटना शुरू किया। ऐसी अवस्था में भी भूपसिंह ने अपना औसान नहीं खोया और जेब से रिवाल्वर निकाल कर शेर का काम तमाम कर दिया। इस मुठभेड़ में वह काफी जख्मी हो गये।

नाम परिवर्तन

इसके बाद उन्होंने दाढ़ी बढ़ाकर अपना रूप बदल लिया और नाम भी विजयसिंह रख लिया। पहले वह जहाजपुर पहुंचे और फिर कुछ दिन ओछड़ी के ठाकुर के यहां उन्होंने स्कूल, अखाड़े, वाचनालय वगैरा खोले और स्वयं सेवकों का एक दल खड़ा किया। जो कार्यकर्त्ता पथिक जी ने चुने उनमें माणिक्यलाल वर्मा भी थे।

बिजौलिया सत्याग्रह

बिजौलिया में रह कर पथिक जी ने किसानों का वह सत्याग्रह चलाया जो भारत के इतिहास में बेजोड़ है और जिसके कारण गांधी जी को भी उनका लोहा मानना पड़ा था।

शुरू में तो पथिक भी गिरफ्तारी से बचते रहे और किसान आन्दोलन का संचालन करते रहे, किन्तु एक दिन बीमारी की अवस्था में मेवाड़ सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। तीन साल तक उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला जिसमें वह बरी हो गये।

पथिकजी गांधी के पास वर्धा चले गये और वहां से उन्होंने राजस्थान केसरी नामक साप्ताहिक निकाला। फिर 1920 में वें अजमेर चले आये और यहां उन्होंने राजस्थान सेवा संघ स्थापित किया। राजस्थान में राजनीतिक चेतना फैलाने में संघ ने जो योगदान दिया उसे वर्णन करना इस लेख में सम्भव नहीं है।

1930 में जन सत्याग्रह, आन्दोलन की तैयारियां हुई तो पथिकजी राजपूताना मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाये गए। उस समय वह राजस्थान संदेश नामक साप्ताहिक निकालते थे। इस आन्दोलन में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और राजस्थान संदेश का प्रकाशन बन्द हो गया।

पथिक जी बड़े तेजस्वी लेखक तथा कवि थे। वह राष्ट्रीय पथिक, निरंकुश और अनघढ़ के उपनामों से कविताऐं लिखा करते थे जो बड़ी जोशीली हुआ करती थीं। उनका रचा हुआ गीत–प्राणा मित्रों, भले ही गंवाना, पर न झंडा यह नीचे झुकाना सारे भारत में प्रसिद्ध हो गया था।

जेल में पथिक जी ने प्रहलाद विजय महाकाव्य लिखा जो अब प्रकाशित हो

गया है। इस महाकाव्य में पथिकजी की काव्यप्रतिभा तथा राजनीतिक दूरदृष्टि का बड़ा सुन्दर प्रदर्शन है। पथिकजी ने कई उपन्यास भी लिखे। ऐतिहासिक शोध में उनकी विशेष रुचि थी। वेदों पर भी उन्होंने कुछ गवेषणात्मक निबन्ध लिखे हैं। यह सारा साहित्य अप्रकाशित पड़ा हुआ है। देशी राज्यों पर अंग्रेजी में एक पुस्तक उन्होंने स्वयं ही प्रकाशित की थी।

1954 में 72 वर्ष की आयु में पथिक जी का अजमेर में देहान्त हुआ। उस समय वह राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास के लिए सामग्री जुटा रहे थे। यह काम अभी तक अधूरा ही पड़ा है।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री विजयसिंह पथिक आतंककारी मार्ग की निस्सारिता को अपने जेल जीवन में ही अनुभव कर चुके थे। जेल से वापस आकर वह न निराश हुए न परेशान, बल्कि दूने उत्साह से वह जन आन्दोलन का संगठन करने में लग गये। राजस्थान का बिजौलिया का सफल सत्याग्रह उन्हीं के अथक परिश्रम व सूझबूझ का परिणाम था। संभवतः उन्होंने गांधी जी के अफ्रीका में किये गये सत्याग्रह से प्रेरणा ली थी। पर बिजौलिया सत्याग्रह ने राजस्थान की रियासतों की जनता में अभूतपूर्व जागृति पैदा की। यह सत्याग्रह महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से भी पूर्व सन् 1915–19 में शुरू हुआ था। सत्याग्रह का प्रारम्भ बिजौलिया के किसानों ने स्वयं किया। बाद में उसे श्री विजयसिंह पथिक का नेतृत्व प्राप्त हुआ। बिजौलिया श्री माणिक्य लाल वर्मा की जन्म–भूमि थी तथा मेवाड़ की एक जागीर थी। उस वर्ष वहां अकाल पड़ा था। इस पर भी ठिकाने वाले उनसे बेरहमी के साथ कानून तोड़ कर अधिक अनाज वसूल कर रहे थे। जबरन किसानों से बेगार ली जाती। जिसने भी तनिक विरोध किया उसी की जूतों व डंडों से पिटाई हुई। यही नहीं अधिकारी चोरियां कराते। गुंडे लूट मचाते तथा सुनवाई कभी न होती। पथिक जी ने यह स्थिति देख किसानों को संगठित किया। किसानों ने स्वयं रक्षा दल बनाकर चोरों व गुण्डों का सामना किया। शराब–बन्दी का प्रचार हुआ तथा लोग हाथ से कता बुना कपड़ा पहनने लगे। इधर अधिकारियों ने जब गिरफ्तारियां शुरू कीं तो महिलाऐं भी जेल जाने लगीं। अधिकारियों ने बहुत भड़काया, पर सत्याग्रही सत्य व अहिंसा पर दृढ़ रहे। फल यह हुआ कि 1922 में जनता की बहुत सी मांगें अधिकारियों ने स्वीकार कीं। लेकिन ठिकानेदारों ने वचन भंग कर पुनः दमन का सहारा लिया। सन् 31 में पुनः सत्याग्रह शुरू हुआ। 700 स्त्री व पुरुष गिरफ्तार किये गये। यह दूसरा सफल सत्याग्रह था, जो श्री जमनालाल बजाज के बीच में पड़ने पर सफलता से समाप्त हुआ।

बिजौलियां सत्याग्रह से देशी रियासतों में ऐसी जन–जागृति फैली कि सन्

1918 में राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना हुई। इस सभा के सभापति सेठ जमना लाल बजाज व मन्त्री श्री हरिशंकर विद्यार्थी चुने गये। इस सभा के 4–5 अधिवेशन हुए तथा अधिवेशनों के फलस्वरूप रियासती जनता का आंदोलन प्रबल जन–आन्दोलन बन गया। इस सभा के नागपुर अधिवेशन के अवसर पर रियासतों में होने वाले अत्याचारों की एक प्रदर्शनी लगाई, जिनमें रोमांचकारी दृश्यों का प्रदर्शन था।

***वरिष्ठ पत्रकार-लेखक, स्वाधीनता सेनानी। जनता कालोनी, जयपुर**

❑

श्री विजय सिंह 'पथिक' एक दु:खदायी प्रसंग

- बी.एल. पानगड़िया*

मार्च सन् 1947 की बात है। मेवाड़ प्रजा मण्डल ने अपना वार्षिक अधिवेशन किसान–आन्दोलन की हृदय स्थली बिजौलियां में करने का निश्चय किया। श्री भूरेलाल बया अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। उस समय देश में राजनैतिक परिवर्तन तेजी से हो रहे थे। केंद्र में पं. जवाहर लाल नेहरू अन्तरिम सरकार के प्रधानमंत्री बन चुके थे। पर रियासतों में अब भी सत्ता परिवर्तन के आसार नजर नहीं आ रहे थे। और तो और मेवाड़ सरकार ने बिजौलिया आन्दोलन के कर्णधार श्री विजय सिंह 'पथिक' पर सन् 1927 में मेवाड़ प्रवेश पर लनाया प्रतिबन्ध अभी तक नहीं हटाया था। मेवाड़ प्रजामंडल और बिजौलिया की जनता की यह प्रगाढ़ इच्छा थी कि बिजौलिया में प्रजा मण्डल के अधिवेशन में पथिक जी शामिल हों। प्रजामण्डल का प्रतिनिधि मंडल इस सम्बन्ध में कई बार राज्य सरकार से मिला। पर वह अब भी पथिक जी के नाम से घबराती थी। अन्ततोगत्वा मेवाड़ सरकार ने बिजौलिया अधिवेशन के एक दिन पूर्व पथिक जी के मेवाड़ प्रवेश पर लगी पाबन्दी हटाई। पथिक जी उस समय अजमेर में थे। वहीं उन्हें यह सूचना मिली।

हम लोग प्रजा मण्डल के अधिवेशन में भाग लेने पूरे उत्साह के साथ यथा समय बिजौलिया पहुंचे। अधिवेशन स्थल पर अपार जन समूह एकत्रित था और प्रजा मण्डल जिन्दाबाद और जागीरदारी प्रथा का नाश हो के गगनभेदी नारे लगा रहा था। प्रजा मण्डल के कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह और जोश था। केवल एक बात खटक रही थी। वह थी पथिक जी की अनुपस्थिति।

परम्परा के अनुसार प्रजा मण्डल के मनोनीत अध्यक्ष श्री भूरे लाल बया का ठाठदार जुलूस निकालने के बाद खुला अधिवेशन शुरू हुआ। मेवाड़ प्रजा मण्डल के संस्थापक और बिजौलिया के सपूत श्री माणिक्यलाल वर्मा ने अपनी जन्म भूमि बिजौलिया में अधिवेशन करने के लिये प्रजा मण्डल का आभार प्रकट करते हुये मेवाड़ के कार्य कर्ताओं का अभिवादन किया। इसके बाद श्री बया ने अपना अध्यक्षीय भाषण पढ़ना शुरू किया कि अचानक ही सभा स्थल पथिक जिन्दाबाद के नारों से

गूंज उठा। दरअसल सभास्थल में उपस्थित विशाल जन समूह ने एक जीप की आवाज सुनकर यह समझ लिया कि पथिक जी आ रहे हैं। मंच से एक सज्जन ने कहा कि पथिक जी के आने की कोई सूचना नहीं हैं, अतः वे लोग शांति से अपना आसन ग्रहण करलें। इतने में जीप सभा–स्थल पर आ पहुंची और उससे पथिक जी उतरे। फिर क्या था सारा जन–समुदाय पथिक जी के दर्शनों के लिये उमड़ पड़ा। मंच से भी सभी कार्यकर्ता पथिक जी का स्वागत करने नीचे उतर पड़े। पथिकजी को सभा स्थल से मंच पर ले जाने में लगभग 20 मिनट लगे। पथिक जी का मंच पर प्रजा मण्डल की ओर से गरमजोशी के साथ स्वागत किया गया। पथिक जी ने मंच से अपार जन समूह का अभिवादन करते हुये कहा कि अब अमावस्या की रात्रि का अन्त सन्निकट है।

एक ओर जहां पथिक जी के अचानक अधिवेशन में उपस्थित हो जाने से जन साधारण और प्रजा मण्डल के कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर फैल गयी थी, वहां दूसरी ओर बिजौलिया आन्दोलन के दो प्रमुख सूत्रधार पथिक जी और वर्मा जी एक दूसरे के प्रति उदासीन–से नजर आये। वर्मा जी ने पथिक जी का मंच पर आने पर अभिवादन किया। पर वह केवल मात्र एक शिष्टाचार था। मैंने देखा कि मंच पर 2 घण्टे पास–पास बैठे रहने के बावजूद उन्होंने एक दूसरे से कुशल क्षेम तक नहीं पूछा। निःसंदेह सन् 1927 में उन दोनों में बिजौलिया के किसानों द्वारा अपनी–अपनी भूमि का इस्तीफा दे देने के सम्बन्ध में तीव्र मतभेद हो गये थे। उसकी कसक दोनों के दिल ये अब भी मौजूद थी। दोनों ही अब संसार में नहीं रहे। वे वर्षों की जुदाई का दुःख अपने साथ ही ले गये।

***सेवानिवृत्त अधिकारी और लेखक। जयपुर**

❑

जनक्रांति के अग्रदूत

- डॉ0 भंवर सुराणा*

देश की स्वतन्त्रता और शोषितों की शक्ति का अलख जगाने वाले पथिक जी को मरण महोत्सव मनाने वाली इस मरुधरा ने मोह लिया और वे उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले से चलकर राजस्थान में आये। पथिक जी के पूर्वज मालागढ़ के नवाब दिवान थे। उनके पितामह ने 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में विदेशी आतताइयों का विरोध किया। जैसा कि देश के सभी भागों में हुआ, जयचन्दों और मीरजाफरों ने उनको चैन से न रहने दिया। उस समय की भाड़ैती पुलिस और विदेशी शासन के कठपुतले जागीरदारों–जमीदारों ने उनका जीना दूभर कर दिया।

बालक भूपसिंह के पिता बाल्यकाल में ही अकेला छोड़ कर काल कलवित हो गये और उसका लालन–पालन महाराजा शिवाजीराव होल्कर के मुख्य साथी बलदेवसिंह जी ने किया। चाचा बलदेवसिंह जी स्वाधीनता के अटल पुजारी थे। महू की छावनी से निरन्तर सम्पर्क बनाये रख कर वे गोरी सरकार के अत्याचारों के विरुद्ध तक सैनिक क्रांति की योजना बना रहे थे। भूपसिंह उनके आश्रम में रह कर सेवा व्रत में रत व्रती सा जननी जन्मभूमि की स्वतन्त्रता के स्वप्न देखने लगा। उस शिक्षा काल में शचीन्द्र सान्याल सदृश साथियों के कर्मठ कार्यन्वित, अपार धैर्य और अगाध विश्वास से वे प्रसन्न होने लगे।

सन् 1911 में क्रान्ति सम्राट रास बिहारी बोस का आदेश पाकर वे राजस्थान की वीर प्रसु वसुन्धरा में क्रान्ति की पृष्ठ भूमि तैयार करने तथा अस्त्र–शस्त्र संग्रह करने आये। ऐशो–आराम में मग्न राजस्थानी राजाओं और सामन्तों में स्वदेश स्वातन्त्र्य की ज्योति जगाते हुए पथिक जी अपने उत्तरदायित्व को निभाने के लिए अजमेर तथा नसीराबाद की सैनिक छावनियों पर अधिकार करने के स्वप्न देखने लगे। 1915 की वसन्तकालीन 21 फरवरी को खरवा के राष्ट्रवादी सामन्त सेनानी ठाकुर गोपालसिंह के साथ राष्ट्र व्यापी क्रान्ति के प्रारम्भ होने के संकेत की प्रतीक्षा अपने साथियों सहित घने जंगलों में बैठ कर पथिक जी ने की, किन्तु न जाने किस मीरजाफर की करतूत से उस योजना की भ्रूण हत्या हो गई और लाहौर, अमृतसर आदि के आयोजन के नेतृत्व को बन्दी बना लिया गया। गम्भीर परिस्थिति में भी साहसिक पथिक जी न घबराये और अस्त्र–शस्त्रों को छिपाकर अजमेर से बड़ौदा

तक के सभी क्रान्तिदूतों को षड्यन्त्र की सूचना दी।

1915 की 1 मार्च को अजमेर का गोरा कमिश्नर फौज फांटे से लैस होकर खरवे पर छापा मारने चल पड़ा। सूचना पाकर रण बांकुरे धरती के बेटे केसारिया बाना धारण कर अस्त्र–शस्त्र, रसद लेकर ओदियों में जा बैठे जिनको देख कर कमिश्नर के हाथ पैर फूल गये। कमिश्नर ने समझौते की श्वेत ध्वजा फहराई और पथिक जी, राव गोपालसिंह, राव मोड़ सिंह तथा अन्य वीरों को टाडगढ़ से बाहर न जाने का अनुरोध कर उनको नजरबन्द कर लिया। नजरबन्दी के समय में घुड़सवारी, शिकार, अस्त्र–शस्त्र सभी उनको मिलते रहे, ऐसी व्यवस्था उस समझौते की पहली पंक्ति में थी।

लाहौर षडयन्त्र केस में पथिक जी का नाम लिया गया और गोरी सरकार के नुमाइन्दें उनको बन्दी बनाने के लिए प्राण प्रण से आतुर हो उठे। सूचना पाते ही पथिक जी टाडगढ़ से बाहर निकल आये। और दूसरे दिन अपने सभी साथियों को बाहर ले आये। स्वतन्त्रता, सम्मान और शील के इस पुजारी का आजादी की अलख जगाने वाले मेवाड़ ने जी खोल कर स्वागत किया।

स्वतन्त्रता के नगमे

क्रान्ति की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिये पथिक जी ने कांकरोली, भाण ओद्दड़ी आदि स्थानों पर स्वतन्त्रता के नगमें गाये और आजादी के परचम लहराये। मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा फतहसिंह तथ अन्य सामन्तों का वरदहस्त उनके साथ रहा। बिजौलिया में पथिक जी ने मुन्सरिम ईश्वरदान के साथ रह कर एक पाठशाला तथा स्वयं सेवक दल के जागरण का जयघोष के साथ संगठन किया। उन दिनों इस ठिकाने के किसानों पर कर्मचारी 80 लाग–बागें, लगान, युद्ध–ऋण, बेगार के बहाने अत्याचारों पर उतर आये थे। सर्वहारा वर्ग की स्वतन्त्रता का हामी हृदय पिघल उठा और अत्याचारों के विरुद्ध पथिक जी ने समग्र विश्व में प्रथम बार असहयोग आन्दोलन छेड़ा।

पथिक जी को अविलम्ब बन्दी के आदेश दिये गये और उनकी क्रियान्विति से पूर्व ही अपने शिष्य माणिक्य लाल वर्मा तथा उनकी पत्नि नारायणी देवी वर्मा को दिशा निर्देश देकर भूमिगत हो वे कोटड़ी पहुंच गये।

अगला वर्ष 1913 का वर्ष राष्ट्र में अनावृष्टि का सम्वत्सर था। कृषक त्राहि 2 कर उठे। उन्होंने पथिक जी से पथ दर्शन मांगा। पथिक जी ने उदयपुर जाकर महाराणा को सही स्थिति से परिचित कराने का बीड़ा उठाया पर ठिकाने के कर्मचारियों ने कृषकों के दैनिन्दन कार्य कलापों में हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया और

चोरियां तथा डाके डलवाकर आतंक का साम्राज्य स्थापित करना चाहा।

मेवाड़ की सीमा के पार बैठे–बैठे पथिक जी ने किसानों को नेतृत्व प्रदान किया और एक शक्तिशाली किसान आन्दोलन की नींव डाली, गांव–गांव में जनता भयमुक्त हो नींद लेने लगी।

गांधी जी के आग्रह पर पथिक जी गुजरात के चम्पारन और खेडा के किसान आन्दोलनों का अध्ययन करने के निमित्त दिल्ली में हो रहे अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में गये। यहीं (शहीद) गणेश शंकर विद्यार्थी, सेठ जमनालाल बजाज, चांद करण शारदा आदि के सहयोग से पथिक जी ने मध्य भारत राजपूताना सभा की स्थापना की। अधिवेशन के पश्चात् पथिक जी वर्धा गये जहां देशी राज्यों की जनता को स्वाधीनता और जागरण का सन्देश देने के लिए राजस्थान केसरी का सम्पादन का भार सौंपा।

1920 के मार्च में मध्यभारत राजपूताना सभा का अजमेर में अधिवेशन हुआ। उसमें पथिक जी ने अपने जीवन का एक मात्र रहस्य उद्घाटित कर दिया 'भूपसिंह व पथिक दो अलग–अलग व्यक्ति नहीं हैं एक ही हैं और वह मैं आपके समक्ष खड़ा हूं'। जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और अंग्रेजी शासन के नुमाइन्दों में भय और आतंक की भावना।

बिजौलियां में किसानों, बच्चों पर हो रहे अमानुषिक अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुंच रहे थे। पथिक जी वर्धा से बार–बार राजस्थान आये और वापस गये। अपनी अनुपस्थिति में राजस्थान केसरी का सम्पादन अपने शिष्य (आज के ग्राम सहयोग समाज के संस्थापक) रामनारायण चौधरी को सौंप कर स्वदेशी आन्दोलन में जूझ पड़ने वाले पथिक जी राजस्थान के ही हो रहे। दलितों किसानों के हितसाधक पथिक जी ने राजस्थान सेवा संघ का निर्माण किया तथा तरुण राजस्थान का प्रकाशन प्रारम्भ किया। तरुण राजस्थान के वे अंक जनता की जागृति और शासन के काले कारनामों के कच्चे चिटठे हैं।

बिजौलिया की देखा देखी बेगू ठिकाने की प्रजा पर बन्दोबस्त अधिकारी ट्रेन्च ने मानवता को होम कर दानवीय कुचक्र चलाने का प्रयत्न किया। गांव के गांव खड़े–खड़े जला दिये गये, फसलों पर घोंड़े दौड़ाकर तहस नहस कर दिया, राजस्थानी रमणियों पर अमानवीय अत्याचार किये, बन्दूकों, भालों और तलवारों का जमकर प्रयोग किया। सामन्ती चाटुकारों ने भरसक प्रयत्न किये पर आन्दोलन न रुका, न झुका। इन आन्दोलनों की हवा प्रचण्ड वेग से हाड़ौती, पालनपुर आदि रियासतों की ओर बही। वहां पर दमन के विरोध में नरसिंघे और बाहरु बजने लगे।

परस्पर के झगड़े पथिक जी ने अपनी अदम्य नेतृत्व शक्ति से निपटाये और संगठन को सुदृढ़ बनाने में जी जान से जुट गये।

राजद्रोही

सन् 1923 में उनको राजद्रोही घोषित कर बन्दी बना लिया गया। जैसा कि सभी सरकारें क्रान्तिकारियों के साथ करती है तत्कालीन सरकार ने चार वर्ष तक न्याय का नाटक चलाया और अन्त में 1927 में उनको रिहा कर दिया। पथिक जी बन्दीगृह में थे तो नेतृत्व के अभाव में सेवा संघ की स्थिति बिगड़ने लगी। उसको मरा जानकर किसानों का दमन सामन्त और सरकार पूरे वेग से करने लगे।

प्रचण्ड गति से निष्प्राण जीवन में ज्वालायें उठीं और आन्दोलन की लालिमा राजस्थान भर में फैल गई। पथिक जी ने राज्य और किसानों में सम्मानपूर्ण समझौते के लिए हरिभाऊ उपाध्याय (राजस्थान के पूर्व शिक्षामन्त्री) मौर रामनारायण चौधरी को बिजौलिया भेजा। इनके अवद्य प्रयत्नों से समझौता सम्पन्न हुआ। वहां शान्ति स्थापना सम्भव हुई।

सन् 1928 से 1945 तक पथिक जी में स्वदेश में चल रही स्वतन्त्रता संग्राम की परिपाटी पर चलते रहने की आकांक्षा जीवन्त रही। कांग्रेस में क्रान्तिकारियों तथा नरम दलियों में खाई चौड़ी होती जा रही थी। अजमेर प्रान्तीय कांग्रेस का नेतृत्व क्रान्तिकारियों के हाथ में आया पर अवैध घोषित उन चुनावों से पथिक जी असन्तुष्ट हो गये। इसी काल में पथिक जी के चारों और उग्र राष्ट्रवादियों का प्रभामण्डल विकसित हुआ। रूद्रवत, मदनलाल धींगरा, बाबा नरसिंह दास, अर्जुनलाल सेठी, जगदीशप्रसाद दीपक, रामजीलाल बन्धु आदि उनके सहयोगी थे।

स्वतन्त्रता का सूर्य उदय हुआ और पथिक जी ने संतोष की एक सांस ली। इन दिनों वे अजमेर में बैठकर जनता में प्रजातन्त्र के प्रति आस्था–निर्माण के प्रति विश्वास और प्राण भरने के लिए एक आश्रम निर्माण का संकल्प कर रहे थे कि काल ने अपनी बांहें पसार समेट लिया।

राजस्थान के जन आन्दोलन के जन्म दाता पथिक जी आन्दोलनकारी ही नहीं थे वे जनता के कवि, प्रभु में अगाध विश्वासी भक्त भी थे। संक्षेप में वीर, विद्वान और अद्वितीय सेनानी थे। हम पथिक जी के चरणों में श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

***वरिष्ठ पत्रकार। दैनिक 'हिन्दुस्तान' के विशेष संवाददाता।**
सी-स्कीम, जयपुर

❑

जन-जागृति के जन्मदाता

- मोहनराज भंडारी*

दुनियां में उपदेश देने वाले तो बहुत होते हैं, लेकिन अपने उन उपदेशों के अनुसार स्वयं को ढालने वाले विरले ही होते हैं। राजस्थान की जागृति के जन्मदाता एवं भारत की सर्वप्रथम सफल किसान क्रांति के नेता श्री पथिक जी उन बिरले व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश–सेवा में व्यतीत किया। निश्चय ही पथिक जी ने यश, वैभव और सुख की कभी चाह नहीं की और न उन्होंने अपने जीवन की परवाह की। उनका मन और मस्तिष्क सदा इस जग से स्वेच्छाचार तथा दमन नाश करने में लगा रहा।

राजस्थानी जनता को दोहरी गुलामी से मुक्ति दिलाने हेतु पथिक जी ने जितनी यातनायें सहन कीं तथा कष्ट उठाये उनकी आज हम सहज ही कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। पथिकजी की सारी जवानी जेलों और जंगलों के बीच बीती। और तो और पथिक जी को भूगर्भावस्था में हिंसक पशुओं से भरे जंगलों में वर्षा रितु की वे अन्धेरी और डरावनी रातें भी कई बार अकेले ही बितानी पड़ीं, जिनका काल्पनिक चित्र सामने आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। भूख और प्यास की जरूरतों पर काबू रखने के अवसर कई देशभक्तों के जीवन में आये होंगे लेकिन पथिक जी को तो कई बार शौच व मूत्र त्याग की जरूरतों तक पर काबू रखना पड़ा।

बिजौलियां की ऐतिहासिक किसान–क्रांति को पथिक जी ने जो नेतृत्व दिया उसकी मिसाल दुनियां के इतिहास में ढूंढे नहीं मिलती है। किसानों के फौलादी संगठन को छिन्न–भिन्न करने के लिए बिजौलियां के तत्कालीन ठाकुर और ब्रिटिश सरकार ने दमन के सभी मार्गों का खुलकर उपयोग किया मगर किसान टस से मस नहीं हुए सो नहीं हुए। अन्त में हार खाकर सरकार ने किसान संगठन से उसकी मांगों को स्वीकार कर समझौता किया।

यद्यपि सत्याग्रह का मंत्र देश को महात्मा गांधी ने दिया था लेकिन इस मंत्र को क्रियात्क रूप सर्वप्रथम भारत में पथिक जी ने ही दिया था। बिजौलिया के पश्चात चम्पारन में डा. राजेन्द्रप्रसाद और बारडोली में सरदार पटेल ने किसान क्रांतियां की।

पथिक जी सफल संगठनकर्ता, नेता, पत्रकार लेखक और पुरातत्ववेत्ता ही नहीं,

कवि भी थे। उनके इन सभी रूपों की व्याख्या इस छोटे से लेख में करना सम्भव नहीं है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन ने पूर्ण स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा लेने का दिवस जब 26 जनवरी निश्चित किया तब तत्कालीन अजमेर प्रदेश कांग्रेस का सैनिक नेतृत्व करने वाले पथिक जी का 26 जनवरी के लिए लिखा गया गायन वर्षों तक जनता में प्राण पूरता रहा। आज बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि –

"प्राण मित्रो, भले ही गंवाना, पर न झण्डा यह नीचे झुकाना" के रचयिता पथिक जी ही थे।

पथिक जी ने प्रहलाद विजय नामक खण्ड–काव्य लिखा, कई कहानी संग्रह और उपन्यासों की रचना की और भारत के प्राचीन गणराज्यों सम्बन्धी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत की। पथिक जी ने समय–समय पर आगरा, मथुरा और अजमेर से राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्रों का संपादन–संचालन कर देश के राजनैतिक जागृति के यज्ञ में यह योग दिया जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है।

पथिक जी की मृत्यु के पश्चात राजस्थान सरकार के आर्थिक सहयोग से उनका कुछ साहित्य प्रकाशित हुआ है –

प्रहलाद विजय (खण्ड काव्य), पथिक प्रमोद (कहानी संग्रह) और पथिक विनोद (फुटकर कविताओं का संग्रह)। लेकिन आज भी पथिक जी का ढेर सारा साहित्य अप्रकाशित पड़ा हुआ है जिसे प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाय तो यह हिन्दी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा होगी।

***प्रमुख पत्रकार और लेखक। दैनिक 'नवज्योति' अजमेर के समाचार-सम्पादक। महावीर नगर, अजमेर**

❑

सच्चे कार्यकर्ता पथिकजी

- यशवन्त रुचिर*

श्रीपथिकजी कहा करते थे –

Youngmen ! go forth in thy strenght.
Strike out, God will lead thy way.
Don't wait for the noon-tied sun.
Morning is the best of the day.

मशाल आज भी जल रही है, असहयोग आन्दोलन के दिन थे।

अजमेर अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ, राजनीति संचालन का प्रमुख केन्द्र था। बिजौलिया आन्दोलन-पथिक जी के नेतृत्व में सफल हो चुका था। गांधी जी और उनके सहकर्मी पथिक जी की कार्यकुशलता का लोहा मान चुके थे। श्री जमनालाल बजाज ने क्रान्तिकारी पथिक जी के मुकाबले हरिभाऊ उपाध्याय को बिजोलिया और अजमेर में काम करने को भेजा ताकि पथिक जी और उनके साथियों को काम करने से रोका जा सके। उन्हीं दिनों बम्बई में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। राजस्थान की ओर से अपना पक्ष रखने के लिए स्व0 पथिक जी, अर्जुनलाल सेठी और बाबा नरसिंहदास बम्बई गये। इन्हें पण्डाल में घुसने से रोक दिया गया।

तीनों ने अपनी रणनीति बनाई। पण्डाल के बाहर बाबा नरसिंहदास भूखहड़ताल पर बैठे। अर्जुनलाल सेठी उनकी रक्षा पर जुटे और पथिक जी प्रचार कार्य में लगे। पथिक जी ने जन्मभूमि को फोन पर सारी स्थिति बताई। घण्टे भर में जन्मभूमि का सप्लीमेन्ट पण्डाल के बाहर बिकता नजर आया। शाम तक कांग्रेस की ओर से भेजी हुई खबर के आधार पर दूसरे अखबारों के सप्लीमेन्ट आये। सप्लीमेन्टों का यह तांता दोनों ओर से चला। भूख हड़ताल स्थल पर भीड बढ़ने लगी। आखिर, गांधीजी को झुकना पड़ा। आश्वासन देकर उन्होंने बाबा जी की भूख हडताल तुड़वाई।

पथिक जी के कार्यकलापों के बारे में गांधी जी बराबर सूचनाएं लेते रहते थे। लेकिन, कांग्रेस के अपने ग्रुप को बचाये रखने के लिए उन्होंने जब सुभाष जैसों को पछाड़ फेंका तो पथिक जी को आगे बढ़ने से रोक कैसे नहीं सकते थे?

आज न बाबा जी हैं, न सेठी जी और न पथिक जी ही हैं, लेकिन उनके नाम का हव्वा आज भी मौजूद है। पथिक जी मर कर भी जिन्दा हैं। उनकी जलाई हुई मशाल आज भी हजारों के दिलों में जल रही है।

*कार्यकर्त्ता और लेखक। सिरोही

राजस्थान में फलतो नहीं फिरंगाण

*- कृष्ण कुमार पुरोहित**

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में राजस्थान के योगदान की जानकारी काफी कम है। राजस्थान में शिक्षा की कमी और पत्रकारिता के अभाव के कारण दुनिया को यहां के लोगों की दिलेरी की जानकारी नहीं मिल पाई। स्वतन्त्रता संग्राम में राजस्थान की भागीदारी का सही और निष्पक्ष इतिहास अब तक नहीं लिखा गया है। तत्कालीन राजपूताने का सच्चा इतिहास लिखने वाले बारहट कृष्णसिंह की तीन पीढ़ियों ने देश के लिए एक से बढ़कर एक आहुतियां दे डालीं, पर उनकी मृत्यु के 80 सालों बाद भी वह इतिहास प्रकाशित नहीं हो सका है। दयानन्द सरस्वती के पक्के शिष्य कृष्णसिंह जो अंगरेजी पॉलिसी के खिलाफ थे, द्वारा बेबाक लिखा गया इतिहास कड़वा सच है, जो प्रकाशित नहीं हो सका है।

बड़े–बड़े तीन रजिस्टरों में लिखे गए इस इतिहास में शुरू से अन्त तक जो सबसे विशेष बात मिलती है वह है लेखक की निर्भीकता, सत्यता और स्पष्टवादिता। कृष्णसिंह राजपूताने के सभी नरेशों के प्रिय थे लेकिन अपने लेखन के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। तत्कालीन राजाओं व रइसों की राज–शैली तथा उनकी आपसी फूट पर उन्हें काफी लानत–मलामत दी है। यही कारण था कि शाहपुर के राजाधिराज ने सन् 1914 में ब्रिटिश सरकार के कहने पर उनकी जागीर, विशाल हवेली और सारी धरोहर जब्त कर उनके क्रान्तिकारी परिवार को दर–दर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दिया। उस समय उनके पुत्रों केसरी सिंह बारहट, जोरादर सिंह और पौत्र कुंवर प्रताप सिंह पर राजद्रोह का मुकदमा भी चलाया गया। ऐसी स्थिति में भी अमर शहीद प्रताप की मांग और क्रान्तिकारी केसरी सिंह की पत्नी ने इस इतिहास को नष्ट होने से बचाया।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्रेम के दौरान हालांकि राजस्थान के प्रायः सभी राजाओं ने अंगरेजों का साथ दिया था, परन्तु इसके बाद अनेक राजा अंगरेजों के खिलाफ हो गए। 21 अगस्त, 1857 को जोधपुर राज्य स्थित एरिनपुरा–छावनी में ब्रिटिश फौज के भारतीय दस्तों ने बागवत कर दी। बागी सैनिक ए.जी.जी. के सदर मुकाम आबू पहुंच गए और वहां पर कर्नल हॉल और कई अंगरेज अधिकारियों को

मार डाला। फिर वहां से 'चलो दिल्ली मारो फिरंगी' के नारे के साथ दिल्ली कूच किया। मार्ग में पड़ने वाले मारवाड़ के एक बड़े ठिकाणे आहूवा के ठाकुर कुशल सिंह चांपावत ने इन बागी–सैनिकों का नेतृत्व संभाल लिया। फिर 13 सितम्बर, 1857 को बागी सैनिकों ने मारवाड़ की जनता के नाम एक अपील निकाली जिसमें साफ लिखा गया कि मारवाड़ और मेवाड़ के कई ठिकाने–आहूवा, आसोप, आलनियावास, गूलर, सलूम्बर, कोटारिया, कानोड़, आसीन्द, लसाणी इत्यादि उनके साथ हैं। इसलिए सारी जनता एकजुट होकर उनका साथ दे।

मारवाड के जागीरदारों और सलूम्बर रावत के बीच हुए पत्र–व्यवहार से इस बात की पुष्टि होती है कि आसोप–ठाकुर की अगुवाई में दिल्ली जाकर 25 हजार सैनिकों के साथ अजमेर पर हमला करने की योजना थी। इसकी भनक लगने पर अजमेर के चीफ कमिश्नर सर पैट्रिक लारेन्स ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह से मदद मांगी। महाराजा ने अपने किलेदार ओनाढ़सिंह पंवार के नेतृत्व में एक दर्जन तोपों के साथ 10 हजार सैनिक भेजे, पर बागी–फौजियों ने उनके छक्के छुड़ा दिये। सेनापति पंवार मारा गया। सारी तोपें युद्ध–सामग्री एवं एक लाख रुपये विद्रोहियों के कब्जे में आ गए। अब सर पैट्रिक लारेंस और जोधपुर के पोलिटिकल एजेंट मेसन दलबल समेत आहूवा पहुंचे। 18 दिसम्बर को फिर घमासान युद्ध हुआ। मेसन का धड़ काटकर दिवार पर लटका दिया गया और सर लारेन्स उलटे पांव अजमेर दौड़ पड़ा। तभी से आहूवा क्षेत्र में जो लोकगीत प्रचलित हुआ वह आज भी इस तरह गाया जाता है –

ढोल बाजै, चंग बाजै, भलो बाजै बांकियो।
एजेण्ट को मारकर, दरवाजै पर टांकियो।।

स्थितियां उस समय पलट गईं जब गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग ने 20 जनवरी, 1858 को पालनपुर और नसीराबाद से एक बड़ी फौज भेजकर आहूवा में बागियों को धर दबोचा। आजादी के दीवाने अनेक सिपाही पकड़ लिए गए, कुछ भाग गए। आहूवा एवं अन्य कई ठिकानों में लूटपाट मच गई और इस तरह बागियों की एक सशक्त योजना सफल नहीं हो पाई, परन्तु आजादी के लिए उन्होंने जो बलिदान किया वह युगों तक प्रेरणा देता रहेगा।

इसी तरह 15 अक्टूबर, 1857 को कोटा में भी विद्रोह हुआ। पोलिटिकल एजेंट बंटन और अनेक अंगरेज अफसरों को कोटा–कण्टिनजेण्ट के बागी–फौजियों ने मार दिया। कोतवाली, राजकीय और रसद भण्डारों पर कब्जा कर लिया। कोटा राज्य का इतिहास नामक पुस्तक में डॉ0 मथुरालाल शर्मा ने लिखा है कि बागियों

ने कोटा महाराव रामसिंह को नजरबन्द कर दिया, जिन्हें करौली की सेना ने मुक्त कराया। विद्रोहियों का लगभग 6 माह तक कोटा राज्य के विभिन्न भागों पर अधिकार रहा। 'राजस्थान रोल इन दी फ्रीडम स्ट्रगल ऑफ 1857' नामक पुस्तक में डॉ० खड़गावत लिखते हैं–कर्नल राबर्ट के नेतृत्व में १ मार्च १८५८ को अंगरेज सेना कोटा पहुंची और बागियों का सफाया कर उनके नेता जयदयाल और महाराब खां को फांसी पर लटका दिया। कोटा–कण्टिनजेंट भंग कर दी गई।

'राजस्थान में स्वतन्त्रता–संग्राम' नामक किताब में बी0एल0 पानगाड़िया ने लिखा है कि मेरठ में सैनिक विद्रोह की खबर पाकर 2 मई को नसीराबाद स्थित छावनी में अजमेर–मेरवाड़ा की दोनों पलटनों ने विद्रोह कर दिया। अंगरेज अधिकारियों के घरों को लूट लिया अथवा जला दिया। विद्रोही दिल्ली की ओर कूच कर गए जहां उन्होंने एक अंगरेजी फौज को करारी शिकस्त दी। विद्रोही अगर दिल्ली की बजाए अजमेर जाकर वहां के शस्त्रागार पर अधिकार कर लेते और प्रशासन हाथ में ले लेते तो राजपूताने की रियासतों में विद्रोह को भारी बल मिलता जिस पर नियन्त्रण पाना अंगरेजी सल्तनत के लिए आसान न होता।

स्वाधीनता–संग्राम में सशक्त क्रान्ति के हिमायतियों में ठाकुर केसरी सिंह बारहट का नाम श्रद्धा से लिया जाता है। राजस्थान में इन्हीं का एकमात्र ऐसा परिवार है जिसकी तीन पीढ़ियां देश के लिए न्यौछावर हो गई। ब्यावर के सेठ दामोदर दास राठी ने इनका भरपूर सहयोग दिया।

बठोठ के जागीदार डूंगसिंह उर्फ डूंगजी और उनके भतीजे जवारजी ने भी अंगरेजों से जमकर लोहा लिया। इन्होंने नसीराबाद छावनी को लूटा और अंगरेज सेना को खूब छकाया। इनकी वीरता के डंके चहुं–दिशा बजने लगे–

जे कोई जणती राणियां, डूंग जिसा दीवाण।
तो इण राजस्थान में, फलतो नह फिरंगाण।।

ठाकुरों और जागीरदारों में बीकानेर के हरिसिंह बीदावत भौजेकाई के आनन्द सिंह, गूलर के बिशन सिंह मेड़तिया, आसोप के शिवनाथ सिंह, सिरोही के नाथूसिंह देवड़ा, बूंदी के बलवंत सिंह, चौहटन के श्याम सिंह और कोटा के पृथ्वीसिंह हाड़ा आदि ने भी अंगरेज सरकार का जमकर विरोध किया।

राजाओं में उदयपुर के महाराणा फतेहसिंह, अलवर के महाराजा जयसिंह और भरतपुर के महाराजा कृष्ण सिंह ने भी अंगरेजों की दखलंदाजी मंजूर नहीं की।

मारवाड़ में जिस प्रकार आहूवा ठाकुर ने बागियों की अगूवाई की, उसी भांति

मेवाड़ में सलूम्बर रावत केसरीसिंह ने भी क्रांति की जोत जगाई।

उन्होंने स्वतन्त्रता सैनानियों की दिल खोलकर मदद की। तांत्या टोपे जैसे नामी गिरामी स्वतन्त्रता सैनानी दो दफा सलूम्बर आए और भरपूर मदद लेकर गए। बंगाल के सैकड़ों क्रांतिकारियों को भी सलूम्बर में बराबर शरण मिलती रही। उन दिनों क्रांति की महत्वाकांक्षी लड़ाकू योजनाएं सलूम्बर में ही बना करती थीं। सलूम्बर के समान ही कोटारिया–रावत भी स्वाधीनता–संग्राम में 'उघाड़ी–छाती' कूद पड़े। जाने–माने क्रांतिकारी नाना साहब तक वहां आकर ठहरे।

अंगरेजी राज के खिलाफ कभी तेज तो कभी धीमा विरोध तो लगातार चलता ही रहा, परन्तु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और महात्मा गांधी के राजनीति में आगमन से स्वतन्त्रता–संग्राम ने अहिंसक रूप ले लिया। परन्तु कांग्रेस में गरम दल बन गया और क्रांतिकारियों की हिंसक वारदातें जारी रहीं। 12 फरवरी, 1915 को रास बिहारी बोस और शचींद्र नाथ सान्याल की अगुवाई में फैसला किया गया कि 21 फरवरी को देश भर में फिरंगी–राज के खिलाफ सशस्त्र क्रांति का श्री गणेश किया जाए। राजस्थान में यह काम राव गोपालसिंह खरवा को सौंपा गया। विजय सिंह पथिक और अर्जुन सिंह सेठी इनके सहयोगी नियुक्त हुए। फिरोजपुर षड़यन्त्र कांड के अभियुक्त भूपसिंह ही पथिक थे। इन लोगों ने सैकड़ों युवकों की फौज और 30 हजार से भी अधिक बन्दूकों का जखीरा जमा कर लिया।

जोधपुर और बीकानेर राज्यों की सहानुभूति क्रांतिकारियों के साथ थी। राव गोपालसिंह को पूरा भरोसा था कि इस क्रान्ति में ये दोनों रजवाड़े अंगरेजों के खिलाफ रहेंगे। दोनों रजवाड़ों की यह इच्छा थी कि यदि क्रान्ति सफल हुई, तो महाराणा मेवाड़ को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया जाएगा।

योजना कुछ इस प्रकार थी कि मुल्तान, लाहौर और मेरठ की सेनाएं रासबिहारी बोस के नेतृत्व में दिल्ली पर और राव गोपाल सिंह की अगुवाई में जोधपुर और बीकानेर की सेनाएं केन्द्र शासित अजमेर पर धावा बोलेंगी। 20 फरवरी को रात में संकेत देकर क्रांति का सूत्रपात किया जाएगा। अस्त्र–शस्त्र गुप्त स्थानों पर छिपा दिए गए। तयशुदा समय पर संकेत मिलने भर की देर थी। संदेश वाहन चलती ट्रेन से तयशुदा स्थान पर पटाखा छोड़कर इशारा करने, वाला था। राव गोपाल सिंह और भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) नसीराबाद रेलवे लाईन के पास जंगल में छिपे हुए संकेत की उड़ीक में थे। वे वहां कई घण्टों तक बैठे रहे। ट्रेन आई और चली गई परन्तु संकेत नहीं मिला।

दरअसल हुआ यह कि माणि लाल नामक जो युवक बोस का संदेश लेकर

आ रहा था, पकड़ा गया और सरकारी मुखबिर बन गया। उसने क्रांतिकारियों के साथ विश्वासघात किया और सारी योजना सरकार को बता दी। अजमेर पुलिस ने राव और उनके साथियों को जंगलों में धर दबोचा और टाडगढ़ किले में नजरबन्द कर दिया। इस प्रकार अंगरेजों के खिलाफ होने वाली सशस्त्र क्रांति की भ्रूण हत्या हो गई। भूपसिंह कुछ समय बाद टाडगढ़ के पहरेदारों को चकमा देकर भाग गए। भूपसिंह ही बाद में विजय सिंह पथिक के नाम से बिजौलिया की किसान क्रांति के अगुवा बने।

सेठ घनश्याम दास बिड़ला और सेठ जमनालाल बजाज ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में तन, मन, धन से जो सहयोग दिया वह उल्लेखनीय है।

देश के निवासी उन दिनों दोहरी गुलामी (अंगरेजों व राजाओं की) भुगत रहे थे। कांग्रेस ने भी शुरू–शुरू में सिर्फ अंगरेजों के खिलाफ ही मोर्चा लिया। धीरे–धीरे रियासतों में भी राजनीतिक संगठन खड़े होने लगे, जिनमें प्रजामण्डल, लोकराज परिषद, प्रजा परिषद, किसान संगठन, हितकारिणी सभा आदि प्रमुख हैं। इन संगठनों के जरिए–जयनारायण व्यास, कन्हैयालाल वर्मा, गोकुल भट्ट, रघुवर दयाल गोयल, बलवंत सिंह मेहता, पं. नयनूराम शर्मा, पं. हरिनारायण शर्मा, किशन लाल जोशी, हरिभाऊ उपाध्याय, स्वामी कुमारानन्द, हीरालाल शास्त्री, मुन्शी त्रिलोकचन्द माथुर, क्रान्ति चन्द्र चौथाणी, ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु, रमेश चन्द ओझा, लादूराम व्यास व जयाल शाह आदि ने रियासती व अंगरेजी राज के खिलाफ मुहिम छेड़ी।

अलग–अलग रियासतों में स्वतन्त्रता संग्राम जिस त्याग और बलिदान के बलबूते पर चला उसकी एक लम्बी कहानी है। ज्ञात–अज्ञात राजस्थानवासियों द्वारा लड़ी गई आजादी की लडाई का पूरा विवरण न केवल श्रम–साध्य अपितु असम्भव सा है। मातृ–भूमि के इन सपूतों को शत–शत प्रणाम से अधिक यह कलम कुछ नहीं कर सकती।

***पत्रकार-लेखक। सह-सम्पादक, 'नव भारत टाइम्स' जयपुर।**

❑

पंछीड़ा

- माणिक्यलाल वर्मा*

(यह माणिक्यलाल वर्मा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक गीत है जो उस समय लिखा गया था जब पथिकजी बिजौलिया के किसानों का संगठन कर रहे थे। हजारों किसानों में जब वर्माजी ने उसे गाया तो किसान आत्म–विभोर हो गए। आगे चलकर यह गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। ऊपरमाल के किसान इसे प्रत्येक सभा में गाते थे–सं0)

मर्दा ओरे काली तो भादूड़ारी रातां सोवे छा।
तन का कपड़ा भी खोवे छा, हाय पड्या–पड्या थे रोवे छा।
आंसू सू डीलड़ों धोवे छा।
मर्दा ओरे.....
ढाडा थानै जाण सिपाही कूटै छा, धन–माल कमाई लूटै छा,
दूजां कै खूंटे–खूंटे कूदै छा, आपस में भाई फूटै छा,
मर्दा ओरे.....
बेगारां का जूता थांकै सिर पर लागै छा,
पहरा में नितका जागे छा, थे देख सिपाही भागै छा।
बेगारी नाम सूं बागै छा, पहरा में नितका जागै छा।
मर्दा ओरे.....
सहणा को वो खाट तोड़वो उठयो छा।
लोहू को गुटको छूट्यो छो, लुण्यां को हांडो फूटयो छो।
यो नार आंक सूं खूट्यो छो।
मर्दा ओरे.....
पड़क दड़क रुपयां को छन–छन निठगी छी।
कठती बत्ती सब कटगी छी
घिसा और गाडयां मिटगी छी, परणा की कीमत घटगी छी।
मर्दा ओरे.....
दौड़ दौड़ कर घूटयो नजराणों देवै छा।
छानै छानै रिश्वत लैवै छा।

वो पागल उल्लू कहवै छा, बल्दां ज्यूं रात दिन बहवै छा
मर्दा ओरे.....
एकठ थां की देख सभा ने रोकै छा।
बन्दे की बोली टोकै छा। झूठां भूतां ने धोकै छा,
बिन बादल मोर्‌या कूकै छा।
मर्दा ओरे.....
थां का बालक हाथ कंवारा रैवै छा।
पण नूत बराड़ौ देवै छा, घर भूखा रहवी सहवै छा।
थे हाय निसासी लेवै छा।
मर्दा ओरे.....
हाकम हाकम करता हास्या छा।
कूंतां में पूरा नास्या छा, घर में नहीं बचता खास्या छा।
सोमल खामरवो धारया जा।।
मर्दा ओरे.....
सुणकर अरजी एक देवता आयो छै।
जीको पैंतो नहीं पायो छै।
बूंटी सत्याग्रह की लायो छै।
सब लोगां कै मन भायो छै।।
मर्दा ओरे.....
देखो आंख्यां खोल, सूरजो ऊग्यो छै।
दूजो काकोजी पूग्यो छै।।
पापीड़ो पड़ग्यो लुग्यो छै।
बीज धरम को बूग्यो छै।
मर्दा ओरे.....
या बाढ़ खेत नै खागी छै।
या भूख ज्वाला लागी छै।।
लुगायां होगी नागी छै।।
या मौत सामने आगी छै।
मर्दा ओरे:.....
चेतो झटपट नहीं तो पापण खाजासी।
तैय्यार रसोई पाजासी।।
नहीं मिलसी टुकड़ों भी बासी।

सब डील डाकणी छा जासी।।
मर्दा ओरे.....
थांकी हिम्मत अन्यायां के खटके छै।
मन अगल बगल में भटके छै।
थांने घबरावा सटकै छै।
सत देख्यां पाछा अटके छै।।
मर्दा ओरे.....
थांको सत को काम काजै सालै छै।
अब पसली–पसली हाले छै।।
वै झूठ अडंगा घाले छै।
पण अपनी चालां चाले छै।।
मर्दा ओरे.....
वै भी मिलकर एकठ करबा लाग्या छै।
अब अठी–उठी ने भाग्या छै।।
रुपया करसां का खाग्या छै।
भांडा खाली अब बाग्या छै।।
मर्दा ओरे.....
देखी थांकी चोटी हाकम पकड़ैगा, दोई हाथ बांध वै जकड़ैगा।
तब रुपया थांका निकलैगा, मजबूती सूं पाछा सकड़ैगा।
मर्दा ओरे.....
हाथ जोड़बो छोड़ आख्यां–राती करल्यी, ई खुसामद ने धर दो, दूरी।
झूठो मत पीवो जड़दो, यो मरद नसो डील में भरदो।
मर्दा ओरे.....
करज्यो ललकारी
बैरी अन्त में धूजैगा, खरला में भी जस गूंजैगा।
हो राग अन्यायी सूजैगा, पग थांका पाछा पूजैगा।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा।

***पथिकजी के साथी और प्रमुख नेता। राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रहे**

❑

अविस्मरणीय पथिकजी

- रामनिवास*

श्रीमान विजयसिंह जी पथिक से मेरा सम्पर्क गांधी–इरविन पेक्ट के बाद सन् 1931 में हिन्द होटल (मदार गेट) में उनके प्रिंटिंग प्रेस में हुआ। इसके पूर्व सन् 1930 में जेल में दूर से ही उनके दर्शन हुए। उनकी देश भक्ति, राष्ट्र प्रेम तथा संगठन शक्ति के बारे में जितना लिखा जाय थोड़ा है। उनकी मिलनसारिता, सहनशीलता तथा बहुत धीमे बोलने का स्वभाव आज भी मुझे याद आता है। सन् 1932 के आन्दोलन में तो उनके साथ अजमेर जेल में 13 महीने रहना पड़ा। उस समय हम लोगों को पिंजरों में बन्द रखा जाता था। नव युवकों को जेल में उनसे प्रेरणा मिलती रही। प्रातःकाल में उनकी स्वयं की रचित प्रार्थना वे स्वयं बोलते थे जिसको हम सब दोहराते थे।

हे प्रभो ! अशरण–शरण, सद् ज्ञान हमको दीजिये।
हम निर्बलों को, दिव्य बल दे, सबल, सक्षम कीजिये। 1
दीजिये वर, हर समय हम देश सेवा रत रहें।
देश हित, दुख के प्रहारों को सुमन सम हम सहें। 2
स्वार्थ में, बीते न क्षण, परमार्थ जीवन सार हो।
सोते, सजग, हर दशा में मन–विषय देशोद्धार हो। 3
सेवाव्रती बन हम सभी तव भक्ति अधिकारी बनें।
ब्रह्मचारी, सदाचारी, वीरव्रत–धारी बनें। 4
टल जायं अंबुद–विन्ध्य हिमगिरि पर न हम पीछे हटें।
कट जायं तिल तिल मुदित हो सन्मार्ग पर, जिस पर डटें। 5
आवे न मन में कल्पना भी कटु, असद व्यवहार की।
ज्यों–ज्यों बढ़ें त्यों नम्र हों, तज तीक्ष्णता अविचार की। 6
हो बाहुओं में बल हमारे सत्य रक्षण के लिये।
हो बुद्धि में चातुर्य छल–कौशल निवारण के लिये। 7

सैन्य में हो एकता और आपसी अनुराग हो।
एवं हृदय में नम्रता हो धीरता हो त्याग हो। 8
यह है तभी सम्भव प्रभो जब कृपा की कोर हो।
या विश्वरूप–विराट के कर विश्व शिक्षण डोर हो। 9

उपरोक्त प्रार्थना प्रतिदिन प्रातः होती थी। सन् 1933 के चौथे सप्ताह में अजमेर जिले के प्रतिनिधि के रूप में श्री मुकुट बिहारी लाल भार्गव दिल्ली की असेम्बली के लिए कांग्रेस की ओर से खड़े किए गए। उनके चुनाव कार्य में मुझे दो महीने अजमेर रहना पड़ा। उस चुनाव का संचालन श्री अर्जुनलालजी सेठी, श्री पथिक जी, श्री बाबा नृसिंह दासजी तथा हरिभाऊजी के हाथों में था। श्री पथिकजी के जिम्मे प्रकाशन, प्रचार विभाग था, अतः इस कार्य में मुझे उनके निकट रहने का सौभाग्य मिला। उनके प्रचार ने उस समय जिले में धूम मचादी। हालांकि उस चुनाव में कांग्रेस की हार हुए, जिसमें श्री सेठ भाग चन्दजी सोनी अपने पैसे के बल पर विजयी हुवे। बंबई कांग्रेस सन् 1934 वरली में अजमेर जिले की कांग्रेस श्री बल्लभ भाई पटेल तथा श्री जमनालालजी बजाज के चहेतों के हाथ में अल्पमत में होते हुवे भी सौंप दी गई। श्री अर्जुनलाल सेठी, पथिक जी, बाबाजी तथा हम लोगों ने बंबई में प्रदर्शन किया तथा अधिवेशन के गेट पर पिकेटिंग किया। उस समय मैंने पथिक जी के साथ बंबई के सब प्रमुख पत्रों के सम्पदकों से सम्पर्क करके उन्हें सारी स्थिति बताई। दूसरे दिन पथिक जी और मैंने अन्य प्रान्तों से आए प्रतिनिधियों से मिलकर सारी स्थिति से उन्हें परिचित कराया। आंध्र और यू.पी. के प्रतिनिधियों ने अ.भा. कांग्रेस कमेटी में प्रश्न उठाया। इसके बाद सब पत्रों ने हमारे पक्ष में विवरण प्रकाशित किए। राजेन्द्र बाबू इस अधिवेशन में अध्यक्ष थे। उन्होंने बल्लभभाई पटेल से चार्ज लिया था, कारण सन् 1931 की करांची कांग्रेस में श्री पटेल कांग्रेस अध्यक्ष थे। गांधी जी के आश्वासन पर हमें कांग्रेस कार्य समिति में बुलाया गया और हमारी बातें सभी ने ध्यान पूर्वक सुनीं। श्रीमती सरोजिनी नायडू तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद ने हमारे साथ साहनुभूति प्रकट की।

देशभक्तों की हालत

देश के स्वतंत्र होने पर श्री अर्जुनलालजी सेठी, पथिक जी तथा बाबाजी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब रही। बाबाजी को सन् 1952 में अपने गुजारे के लिए अजमेर–व्यावर मार्ग का परमिट लेना पड़ा। पथिकजी तथा उनकी पत्नि जानकीदेवी की आर्थिक हालत बहुत शोचनीय रही। आज हम उन्हें याद कर रहे हैं। किंतु उनके जीवन काल की स्थिति पर किसी ने चिंता नहीं की। सेठीजी को तो दरगाह के आसपास दफनाया गया।

***कार्यकर्ता। ब्यावर**

❑

कर्मवीर

- भोलानाथ चतुर्वेदी

विद्यार्थी अवस्था में ही बिजौलिया सत्याग्रह के सफल नेता के रूप में त्यागवीर परम तपस्वी, निःस्वार्थ सेवक, जननायक स्वर्गीय श्री विजय सिंह पथिक का नाम सुना करता था। महात्मा गांधी जी ने जिसकी प्रबन्ध पटुता, सत्याग्रह संचालन की योग्यता एवं कष्ट संहिष्णुता की भूरिभूरि प्रशंसा की थी, वह व्यक्ति कैसा होगा? पुलिस जिसकेकारण कांपती रहती थी, बिजौलिया के आसपास के किसान जिसकी देवता के सामान पूजा करते थे, वहां के स्त्री और पुरुष जिसके बनाये हुए गानों को ही गाते थे। आज जिस पंचायत राज्य के गुणगान गाये जाते हैं, जिसके कारण राजस्थान ही ख्याति भारत में फैली हुई है उस पंचायत का श्रीगणेश बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में स्वर्गीय पथिकजी द्वारा बिजौलियां में हो गया था। ऐसे नरवीर के दर्शनों की लालसा होना स्वाभाविक था। अतः 1931 में परीक्षा के सिलसिले में जब अजमेर गया और उदयपुर के परीक्षार्थियों के साथ ठहरा तो उनके दर्शनों के निमित्त गया किन्तु घर पर उपस्थित न होने के कारण तब दर्शन न हो सके। मैं आबूरोड लौट आया।

आबूरोड के पड़ोस में एक परोपकारी साधु–सफल वैद्य चातुर्मास व्यतीत करतेथे। उनके साथ समय–समय पर देश, धर्म, जाति विषयक वार्तालाप हुआ करता था, यह तो बहुत पीछे ज्ञात हुआ कि आप भी पथिकजी की टोली के थे और इस वेष में कालयापन कर रहे थे। बोले–अजमेर आओ वहां अवश्य मिलना। नवयुवकों को उनसे बड़ी प्रेरणा मिलती है। भाग्यवश सन् 33–34 में अजमेर नौ मास के लिए ट्रेनिंग में जाना हुआ। अवकाश के दिन साक्षात्कार करने चल ही दिया। केसरगंज में डी.ए.वी. हाईस्कूल के पास वाले मकान में रहते थे। वार्तालाप आरम्भ हुआ, ब्रह्मचारी जी का परिचय दिया तो बोले लिखो सहायता की आवश्यकता है। घर जाकर लिखा। तुरन्त सहायता मेरे नाम से आई किन्तु मैं घर पर देने गया तो पता पड़ा कि किसी अपराध में तीन मास की सजा हो गई थी। श्री रामनारायण जी चौधरी ने बताया कि राजनैतिक भाषा पथिकजी के समान हम में से कोई नहीं लिख सकता। राजस्थान सेवा संघ बनने पर 10 रुपया मासिक की सहायता प्रत्येक सदस्य को मिलती थी। उसमें भी मितव्ययता करने पर जोर डाला जाता था, पथिक जी

का औसत व्यय सबसे न्यून 6 रुपया मासिक आता था। त्याग की भावना इतनी प्रबल थी कि यदि 1 रुपया कहीं से मिल जाता था तो उसका उपयोग प्रेस टेलीग्राम में ही होता था अपने ऊपर नहीं। वर्षों बाजरे की सूखी रोटी और प्याज ही आपका भोजन था। आप सफल पत्रकार थे, गंभीर विषयों के लेखक थे, पुस्तकें भी रच चुके थे किंतु यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आप कविता भी लिखा करते थे और कहानी भी। उनके दो संग्रह निकल भी चुके हैं। प्रहलाद काव्य भी छप चुका है। श्री विजयसिंह जी पथिक के काम और नाम से सभी परिचित हैं किन्तु आपके भूपसिंह नाम से जनता कम परिचित है। आप अपने विषय में क्यों मौन रहे? समझ में नहीं आता। आपकी अनेक हस्तलिखित पुस्तकें देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, किन्तु किसी में आपकी जीवनी का आभास नहीं पाया। थोड़ा सा आरम्भ किया बतलाया। यमराज का बुलावा आ पहुंचा। स्वतन्त्रता के पीछे सात वर्ष तक आप जीवित रहे, उस बीच में भारत सरकार आप से यदि स्वतन्त्रता का इतिहास लिखवाने की योजना बनाती तो आपकी लौह लेखनी से लिखा हुआ इतिहास पाठकों को प्रेरणा देने वाला होता।

अजमेर कैसे आये, भूपसिंह से विजयसिंह कैसे बने यह पर्दा अभी पड़ा ही हुआ है। ब्रह्मचारी जी को उनके निधन की सूचना दी गई। वे आये भी थे किंतु इस रहस्य को खोलने से साफ इन्कार कर दिया। उसी समय क्रान्तिकारियों का इतिहास भी पढ़ा किन्तु भूपसिंह नाम नहीं था। आचार्य चतुरसेन शास्त्री उनके सहपाठी बतलाये। उनसे मिलने शाहदरा इस आशा से गया कि शायद यह गुत्थी सुलझ जाय। उन्होंने नहीं बतलाया। चूंकि पथिक जी से एक बार ही मुलाकात हुई थी, बहिन जानकी देवी से परिचय हुआ नहीं था। अतः ब्रह्मचारी जी को समाचार भेजा गया कि सहायता का क्या किया जाय? वे स्वयं आये। सारा प्रबन्ध कर मुझे आदेश दिया कि प्रत्येक रविवार को आकर बहिन से पूछ जाया करो। जिस वस्तु की आवश्यकता हो बाजार से ला दिया करो। कुछ दिन पीछे आप आ गए किन्तु रविवार का फेरा बराबर जारी रहा। उन दिनों पथिक जी दाढ़ी न रखते थे। वार्तालाप में अत्यन्त विनोदी कहकहा लगा कर हंसते थे तो सारा मकान गूंज जाता था। पुनः सहायता भेजी थी। यह वह समय था जब देश भक्ति ही अपराध न था बल्कि देशभक्तों से मिलना, उनकी सहायता करना भी अक्षम्य अपराध समझा जाता था।

सरकारी नौकरी में रहते हुए, सरकारी संस्था में काम करते हुए भय तो लगता था किन्तु पथिकजी का आकर्षण, नवयुवकों को प्रोत्साहन कुछ ऐसा था कि रविवार को अनायास ही उधर कदम उठ जाते थे। सन्तोष इतना ही होता था कि ऐसे त्यागवीर, निर्भीक देशभक्त की धन से न सही तो तन से कुछ सेवा हो जाती है।

कुछ समय पश्चात् आपने अजमेर छोड़ दिया था। उसके पश्चात् अचानक मथुरा में मिलन हुआ। पहले किराये के घर में फिर निजी घर में। एक बार मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी का भी उनसे मथुरा में परिचय कराया था। आपने अपनी रचित इंडियन स्टेट्स नामक पुस्तक उन्हें दी थी। आगरे से 'नव संदेश' नामक साप्ताहिक निकाला और जब तक पत्र चला बराबर एक प्रति भेजते रहे। अन्तिम मिलन अजमेर में मृत्यु से कुछ ही दिन पूर्व हुआ। स्वतन्त्रता का इतिहास लिखने के सम्बन्ध में आप आये थे मुझे पता नहीं पड़ा। उस समय पुनः दाढ़ी रखने लग गए थे। एक बार दूर से देखा भी था। लम्बा कुर्ता, वही चाल थी किन्तु दाढ़ी के कारण भ्रम हुआ। दूसरे, पीठ थी अतः मुंह दिख भी नहीं सका। दूसरी बार अचानक शाक मार्केट में आमना–सामना हुआ। आपने ही पहचान लिया। जब पता पड़ा कि बदल कर अजमेर ही में आ गया हूं तो बोले मिलना, काम बतायेंगे। दो तीन दिन पीछे निवास स्थान पर पहुंचा तो रोग शैय्या पर पड़े हुए पाया। पूछने पर बताया कि उसी दिन कुछ लू लग गई थी। शीघ्र ठीक हो जाने पर फिर काम बतायेंगे। अस्वस्थता का समाचार मिलने पर मथुरा से बहिन जानकी देवी भी वहां पहुंच गई थी। उस समय भी वही विनोदी स्वभाव, निराशा का नाम नहीं, शीघ्र स्वस्थ होकर काम करने की तमन्ना मन में बसाये हुए थे। जब उठे तो कहा चार पांच दिन में स्वस्थ हो जाऊंगा फिर काम बताऊंगा। आते रहना। उस समय क्या पता था कि अनेक स्वतन्त्रता की लड़ाइयों का विजेता, सफल सेनानी, निर्भीक देशभक्त मृत्यु को पराजित करने के मंसूबे बांध रहा है। दो एक दिन पीछे ही आफिस से लौटते हुए देखा, अनेक बड़े–बड़े नेताओं के कंधों पर श्मशान यात्रा के लिए एक बलिष्ठ शरीर ले जाया जा रहा है। सुन कर आघात लगा कि श्री पथिक जी की जीवन लीला समाप्त हो गई। कौन–सा कार्य सौंपना चाहते थे यह अज्ञात ही रहा।

दूसरे दिन निवास–स्थान पर पहुंचा। वहां अपार भीड़ लगी हुई थी। श्री रामनारायण चौधरी के अतिरिक्त बिजौलिया के ठाकुर अपने नेता को श्रद्धांजलि देने वहां पहुंच चुके थे। उनके मुंह से पथिक जी के साहस के अद्भुत पराक्रम सुने। शेर को मारना उनके लिए साधारण काम था। दिन भर ज्वार बाजरे के ढेर में बैठकर लिखते रहना, रात्रि को निकल कर प्रत्येक स्थान पर संदेश सहायता भेजना अनेक वर्षों तक उनका कार्य रहा। श्री हरिभाई किंकर ने बताया कि किस प्रकार सफलता पूर्वक वे आन्दोलन का संचालन करते थे। जो जहां होता था उसे वहीं संदेश भेजते, भोजन का प्रबन्ध करते, अपने सैनिकों की बराबर देखभाल करते थे। वे त्याग करने का स्वयं आदर्श उपस्थित करते थे।

एक अत्यन्त अद्भुत बात यह प्रतीत होती है कि जहां का पता चला है पथिक

जी की पाठशाला की शिक्षा वहीं समाप्त होती है। उसके बाद वे क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होकर इधर–उधर घूमते हुए अजमेर पहुंचे और लोको गेरिज के कारखाने में भी कुछ दिन नौकर रहे। शायद हथियार बनाने में सहायता मिले, इस उद्देश्य से। उसके बाद का जीवन उनका जंगलों में बीता तो उनको शिक्षा ग्रहण करने का अवसर कब मिला? उनकी अंग्रेजी की योग्यता ग्रेजुएटी से अच्छी थी। कवि तथा लेखक ऊंचे दर्जे के थे। ज्योतिष का ज्ञान उन्हें था। वैदिक साहित्य तक उनकी पहुंच थी। सारांश में बहुत ऊंचे दर्जे के पंडित थे। राजनीति के वे राजस्थान के जन्मदाता थे। प्रजा उन पर प्राण न्यौछावर करती थी। साथ में ठाकुर लोग भी उनके सहायक थे। प्रश्न यह है कि यह ज्ञान उन्होंने सीखा कब और कैसे? आन्दोलन के दिनों में जब लुक छिप कर काम करते थे तब उन सब बातों के लिए समय कब मिला होगा? तो क्या वह दैवी शक्ति नहीं थी? उनके जो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है अथवा जो लिखें देखे हैं उनसे उनकी विद्वत्ता का परिचय मिलता हैं। जीवन के आरम्भ में कठिनाई से पले। दिन–रात आन्दोलन चलाने में व्यस्त रहे। आर्थिक कठिनाइयां शायद सदा ही सताती रही होंगी किंतु चिंता की रेखाएं कभी उनके भाल पर देखी नहीं ! भव्य भाल, विशाल शरीर और एक ही वेषभूषा में उन्हें सदा प्रसन्न मुद्रा में देखा। उनके कहकहे सदा याद रहेंगे। शायद इसी हंसी में वे जीवन की कठिनाइयों को बहा देना चाहते थे। कठिनाइयां सहते–सहते वे अभ्यस्त हो गये। इसी कारण साधारण कठिनाइयां उन्हें विचलित नहीं कर पाती थीं। मेरा प्रथम परिचय जिस श्रद्धा के साथ उनसे हुआ अंत तक कायम रहा। उनके प्रति श्रद्धा, प्रेम और भक्ति बढ़ती ही गई। कभी जरा भी कम नहीं हुई। देश के ऊपर मर मिटने वालों को आज कुछ पुरस्कार मिल रहा है किन्तु पथिकजी देश के उन दीवानों में से थे जो कष्ट–तपस्या का जीवन व्यतीत कर देश के ऊपर बलिदान हो गये। उनका ध्येय उनके पत्रों आदि में अंकित रहता था यश वैभव सुख की चाह नहीं। साथ ही वे अपने प्रण को पूरा कर गये। ऐसे नर वीर का पूरा इतिहास (जीवनी) यदि भारतीय युवकों के सम्मुख रखी जाय तो क्या प्रेरणा नहीं मिलेगी?

***शिक्षक-लेखक। भरतपुर**

❑

लोक गीतों में पथिकजी

- कुन्दनलाल पालीवाल*

स्वर्गीय पथिकजी का व्यक्तित्व विराट था। स्वातन्त्र्य संग्राम के वे एक दिग्गज सेनानी थे। ऐतिहासिक बिजौलिया आन्दोलन के वे सफल संचालक थे। बिजौलिया आन्दोलन में उन्होंने जो कष्ट सहे तथा अपनी अजेय दृढ़ता एवं सहिष्णुता का परिचय दिया वह असाधारण बात थी।

महात्मा गांधी की तरह उनकी भी लोकप्रियता इतनी बढ़ी–चढ़ी थी कि घर–घर में उनके शौर्य के गीत गाये जाने लगे थे। इन लोक गीतों में पथिकजी के महान बलिदान तथा शौर्य की अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है।

निम्न गीतों में पथिकजी को जागरण–दूत उद्धारकर्त्ता बताया गया है–

सब राजस्थानी सोते थे,
जगवा दिये पथिक पुजारी ने।
सह कष्ट अनेकों रोते थे,
हंसवा दिये पथिक पुजारी ने।।
स्वारथ शाही मदमाती थी,
मिल बाढ़ खेत को खाती थी।
अरु ठकुर सुहाती भाती थी,
चौंका दिये चतुर पुजारी ने।।
चाकर रजवाड़ी चीते थे,
अधिकारों के बल जीते थे।
हा ! रक्त प्रजा का पीते थे,
दहला दिये प्रबल शिकारी ने।।
कर गोरों से रक्षा कालों की
पोल खोल नृप पालों की।

परवाह न करी असि भालों की,
नचवा दिये नाच मदारी ने।।
बेगारी बेड़ा पार किया,
सबलों का साहस क्षार किया।
निबलों में बल संचार किया,
प्रिय दीन बन्धु हितकारी ने।।
बलि वेदी पर आन खड़ा,
जो प्रताप के द्वार अड़ा।
तन, मन, धन, जन सर्वस्व चढ़ा,
पूजा की पथिक पुजारी ने।

राजस्थानी जनता में पथिकजी के लिये कितना अधिक आदर का भाव था, यह अनुमान निम्न गीतों से सहज ही लगाया जा सकता है–

'गांधी गौरमेंट जीते थे
विजयसिंह रजवाड़िया से
सत्त धर्म की सभा बनाई
पाप मूल ने पाड़िया रे।'

तथा

धन्य–धन्य पथिक महाराज,
राजस्थान जगाने वाले।
कभी था यह वीरों का स्थान,
आज है मिला धूल में मान।।
आपने आकर रक्खी शान,
राष्ट्र के पुत्र कहाने वाले।। धन्य ।।
कृषक जो थे अति दुर्बल दीन,
हो चुके मनुष्यत्व से हीन।
हो रहे वे बस तेरह तीन,
इन्हीं में ऐक्य बढ़ाने वाले ।। धन्य।।

प्रथम ले बिजौलिया को साथ,
बढ़ाया जग में अपना हाथ।
कराया फिर कांग्रेस का साथ,
देश में शक्ति जगाने वाले ।। धन्य।।
शत्रुगण लगा रहे थे ताक,
पड़ी है चहुं दिश तेरी धाक !
चलेगा किन्तु तुम्हारा नाम,
औ विजय कराने वाले ।। धन्य।।

अत्याचारों से पीड़ित लोग भगवान से इस प्रकार प्रार्थना किया करते थे–

हम दीन-हीन किसानों का,
भगवान कोई रक्षक भेजिये।
कृष्ण जैसा रण रंगी कोई,
पथिक पुजारी भेजिये।।
हम तो यहां रोटी कपड़े से भी तंग,
यहां पर कूदे जमीदार के नंग मलंग।
द्रोपती की लाज से भी पहले,
बेगूं की भिलनी का रखवाड़ी भेजिये
यहां पर होते नित नए अत्याचार,
जमीदार का नहीं छुटभइयों से प्यार
प्रहलाद भक्त से भी पहले,
बिजौलियां के किसानों का रक्षक भेजिये।
हम हो गये तेरह तीन,
राक्षसी प्रथा ने कर दिये मनुष्यत्व से हीन
हमारा एका बढ़ाने के लिये,
स्वामी दयानन्द जैसा हितकारी भेजिये।
हमारी टेर सुनो हितकारी,
यहां जनता हाहाकार पुकारी।

सुभाष हिटलर जैसा वैज्ञानिक

और कोई पथिक जैसा उद्धारक भेजिये।

पथिक राजस्थानी जन–समाज में इतने रम गये थे कि पुरुषों के अतिरिक्त महिलायें भी अपने गीतों में पथिकजी का गुणगान करने लगी थीं। ग्रामीण किसान महिलाएं कुलदेवी की पूजा करते समय पथिक जी के सम्बन्ध में निम्न मेवाड़ी भजन बड़े उत्साह के साथ झूम–झूमकर गाया करती थीं–

म्हाने विजयसिंह आय जगायो,

ए मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां।

म्हांने जूत्यां सूं पिटता बचायो,

एक मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां।

म्हाका टाबर ने वीर बणाया,

ए मायं थारो गुण मैं नहीं भूलां।

म्हाकी डूबती जाति ने बचाई,

ए मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां।

म्हाने देश प्रेम सिखलायो,

ए मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां।

इस प्रकार पथिक जी राजस्थानी जनता में अत्यन्त ही लोकप्रिय थे, इस बात का अनुमान उपरोक्त गीतों से सहज ही लगाया जा सकता है।

***शिक्षक। परशुराम मार्ग, जयपुर**

❑

कर्मठ और निर्भीक

- भूपालसिंह ओछड़ी*

जब पथिक जी कांकरोली के समीप गांवों में काम कर रहे थे तो उन पर गुप्तचरों को सन्देह हो गया अत एव उन्हें वहां से यकायक हटना पड़ा। उसी समय मेरे फुफेरे भाई कुंवर प्रतापसिंह राठौर जो अजमेर जिले में स्थित नगर ग्राम के निवासी और राजस्थान के क्रांतिकारी दल के सदस्य थे उन्होंने संकेत किया कि पथिक जी अज्ञातवास कर रहे हैं। मैं उनसे कहूंगा कि वे तुम्हारी तरफ जावें। अतएव वे ओछड़ी की ओर आवेंगे। यदि वह उधर आवें तो तुम उन्हें अपने पास आदरपूर्वक रखना और उनकी वास्तविकता किसी पर भी प्रकट न करना। अपने बड़े भाई का आदेश पाकर मैं पथिक जी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उधर गुप्तचरों की आंख बचा कर पथिक जी बिना किसी सवारी के पैदल चलते–चलते जंगल और गांवों में भटकते हुए सुधरी गांव (चित्तौड़गढ़जिले में है) आए। वहां उनका सम्पर्क सुधरी गांव के सरकारी सेणा (गांव का सरकारी चौकीदार) प्रतापपुरी गोस्वामी से हुआ। बात यह थी कि सभी गांवों के सरकारी सेणाओं को आदेश दिया गया था कि वह पथिक जी पर जो कांकरोली के गांवों में सक्रिय थे और अब कहीं छिप गए हैं, नजर रक्खें और यदि उनके गांव में पहुंचे तो तुरन्त पुलिस को सूचना दें। प्रतापपुरी गोस्वामी देशभक्त और साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने पथिक जी का नाम सुन रखा था। अतएव जब वह सुधरी गांव में पहुंचे तो प्रतापपुरी ने श्रद्धा और आदर के साथ अपने पास रखा। प्रतापपुरी गोस्वामी चित्तौड़गढ़ के रहने वाले थे। अस्तु वे पथिक जी को चित्तौड़ लाए और पथिक जी चित्तौड़ उनके मकान पर ठहर गए। चित्तौड़ पहुंच कर पथिक जी मुझ को चित्तौड़ बुलाने का प्रयत्न कर ही रहे थे कि मैं अदालती काम से स्वयं उसी दिन चित्तौड़गढ़ पहुंच गया। प्रतापपुरी गोस्वामी ने सूचना भेजी तो में पथिक जी से मिलने उनके मकान पर गया।

जब मैं प्रतापपुरी गोस्वामी के मकान पर पथिक जी से पहली बार मिला तो उस समय वे जयपुरी छाप का साफा, कुर्ता, ऊपर कोट और धोती पहने हुए थे। एक तलवार, पेशकब्ज और सनाइडर बन्दूक उनके पास प्रकट में थी। वे रिवाल्वर अन्दर छिपाए हुए थे। पूरे रजपूती वेष में थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही तेजस्वी और प्रभावशाली था। बड़े ही प्रेम से गले मिले। उन्होंने मेरे फुफेरे भाई साहब 'नगर' कुंवर

साहब प्रतापसिंह जी का बतलाया गुप्त संकेत किया। मैंने भी गुप्त संकेत का उत्तर दिया और हम लोग आश्वस्त होकर बात करते रहे। उसी दिन सायंकाल को मैं उन्हें अपने साथ ओछड़ी ले आया और उसी समय से वे मेरे पास ओछड़ी रहने लगे। मेरे पास वे लगभग सवा साल रहे। उस सवा साल के बहुमूल्य समय में मैंने उनसे कई बातों की जानकारी प्राप्त की।

गुप्त भाषा की लिपि

उन्होंने मझे एक गुप्त भाषा की लिपि भी सिखाई। जब हम दूर होते तो उसी गुप्त भाषा और लिपि में सन्देशों का आदान प्रदान करते और बातचीत करते थे। परन्तु अब मैं उस लिपि को भूल चुका हूं। जब पथिक जी ओछड़ी में रहे तो सदैव हम सभी लोगों में शिक्षा प्रचार और देश प्रेम की भावना भरा करते थे। राजपूत युवकों में देश प्रेम और शिक्षा का प्रचार करने के लिए उन्होंने ओछड़ी में परोपकारी राजपूत हितकारी सभा स्थापित की थी किन्तु उस समय बड़े बूढ़ों ने उसमें सहयोग नहीं दिया। इस कारण पथिक जी के ओछड़ी से चले जाने के बाद वह सभा समाप्त हो गई।

पथिक जी के जीवन का प्रत्येक क्षण भारत की सेवा के लिए अर्पित था। देश ही उनका सर्वस्व था। वे उसी को अपना ईश्वर मानते थे। भारत को दासता की श्रृंखलाओं से मुक्त करने के लिए वे अनेक उपाय सोचा करते और योजनाएं बनाते। उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य अंग्रेजों की सत्ता को विध्वंस कर देश को आजाद करना था। वे हम लोगों को देशभक्त बनाने का प्रयत्न करते। देश के लिए हम लोगों को त्याग और बलिदान के लिए तैयार होना चाहिये, यही शिक्षा देते। हम लोगों को प्रोत्साहन देने और हममें जागृति उत्पन्न करने के लिए कविताएं बनाते। उन कविताओं में देश प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी होती। विप्लव करने के लिए बन्दूक बनाना, कारतूस भरना और तैयार करना, बम बनाना और अन्य अस्त्रशस्त्रों को बनाने की कला और विधि उन्हें भली भांति आती थी। एक बार हम लोग अपने गांव की नदी के किनारे पहुंचे, वहां उन्होंने एक बम बनाकर जोर से नदी की चट्टान पर फेंका। यह प्रबल वेग और भयानक आवाज के साथ फटा और वह चट्टान टूटकर टुकड़े हो गई।

जब वह मेरे पास रहे थे तो उनके पास कई गुप्त चिट्ठियां भी आती जाती थीं। उनका सम्पर्क भारत के अन्य क्रांतिकारियों से बना हुआ था। प्रताप के सम्पादक श्री गणेशशंकर विद्यार्थी से उनकी बहुत अधिक घनिष्ठता थी। राव साहब खरवा (श्री गोपालसिंह) को निर्दोष सिद्ध करने के लिए वे एक लेखमाला प्रकाशित करना चाहते थे। गणेश शंकर जी ने उस लेखमाला को प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात पथिक जी ने यह लेखमाला लिखनी शुरू की। उसकी सामग्री

इकट्ठा करने में बहुत समय लग गया। वह लेखमाला मेरे द्वारा ही लिखाई गई थी। परन्तु जब लेखमाला तैयार हुई और उसे रजिस्ट्री से प्रताप प्रेस भेजा गया तो गणेश शंकर जी का उत्तर मिला कि अभी हाल में सरकार ने एक ऐसा नया कानून बना दिया है जिसके कारण हम इस लेखमाला को प्रकाशित नहीं कर सकते।

पथिकजी ओछड़ी से गवर्नर जनरल को बड़े कड़े निर्भीक परन्तु तथ्यों से भरे पत्र लिखते। वे पत्र यहां के पोस्ट आफिस से न डलवाकर रतलाम अथवा अजमेर से डलवाते थे। यद्यपि पथिक जी का हैड क्वार्टर मेरे यहां था परन्तु जिला चित्तौड़ के पुठौली के ठाकुर साहब श्री रामप्रताप सिंह जी और ठाकुर यशवंतसिंह जी गांव दय्यावली जिला चित्तौड़ के साथ तथा रेहावड़ा के जागीरदार से भी उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे कभी उन दोनों के पास भी जाकर रहते थे। वहां भी वे देश प्रेम और शिक्षा प्रचार की सबों को शिक्षा देते थे।

विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना

उनकी प्रेरणा से चित्तौड़ में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई थी। उस सभा के सदस्यों के साथ भी उनका घनिष्ठ सम्पर्क था। पथिक जी कभी–कभी कई दिनों तक चित्तौड़ जाकर रहते थे और विद्या प्रचारिणी सभा के भजन–कीर्तन और वार्षिक अधिवेशन बड़ी धूमधाम से करवाते थे। मैं, ठाकुर साहब पुठौली तथा ठाकुर यशवन्तसिंह जी सभी उस सभा के सदस्य थे। इसलिए हम भी उनमें सम्मिलित हुआ करते थे। श्री भीमराज घड़ौलिया, श्री हंसराज, पुरीजी गुसाई, श्री गोविन्द सिंह जी पंचोली, श्री विलासी राम जी अग्रवाल तथा श्री सेवालाल जी अग्रवाल विद्या प्रचारिणी सभा के प्रमुख सदस्य थे। बात यह थी कि पथिक जी विद्या प्रचार तथा पुस्तकालय आन्दोलन द्वारा चित्तौड़गढ़ में देशभक्त और कर्मठ युवकों का एक संगठन खड़ा करना चाहते थे जिसके द्वारा वे राजस्थान में एक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना कर सकें। किन्तु उन्हें चित्तौड़गढ़ में आवश्यक साधन और सहायता नहीं मिल सकी। यही कारण था कि एक बार उन्होंने कहा, चित्तौड़वासियों का खून ठंडा पड़ गया है। उन्होंने चित्तौड़गढ़ के समीपवर्ती स्थानों में भी विद्या प्रचारिणी सभा की शाखाएं तथा सम्बन्धित संस्थाएं स्थापित की। वे शिक्षण संस्थाओं के द्वारा देशभक्त युवकों का संगठन कर लेना चाहते थे। क्योंकि पथिक जी उस समय अज्ञातवास में थे। यही कारण था कि वे अन्य लोगों को विद्या प्रचारिणी सभा के कार्य में आगे रखते किन्तु मार्गदर्शन और नेतृत्व उन्हीं का था। उनकी प्रेरणा से ही स्वामी सत्यदेव परिव्राजक और पंजाब केसरी लाला लाजपतराय चित्तौड़गढ़ में विद्या प्रचारिणी सभा के अधिवेशन के अवसर पर आये थे।

***स्वाधीनता-सेनानी**

❑

श्री रामनारायण चौधरी से साक्षात्कार

पथिक : एक महान् और उपेक्षित व्यक्तित्व

- डॉ0 रमेश जैन*
- डॉ0 विष्णु पंकज*

(राजस्थान के वयोवृद्ध पत्रकार और स्व0 पथिकजी के साथी 92 वर्षीय श्री रामनारायण चौधरी से दोनों साक्षात्कारकर्त्ता दिनांक 8 नवम्बर, 1986 को अजमेर में उनके निवास पर मिले और काफी देर तक वार्ता की। उसका संक्षिप्त रूप यहां प्रस्तुत है –सं0)

प्रश्न– पथिकजी के सम्बन्ध में आपने कुछ लिखा है?

उत्तर– एक किताब मैंने लिखी है–'बीसवीं सदी का राजस्थान'। उसमें पथिकजी के बारे में भी बहुत सा लिखा है। हम तो दस साल पथिकजी के साथ रहे। गान्धीवादी पत्रकारिता के करिश्मे में भी उनके विषय में लिखा है।

प्रश्न– इस समय कौन से ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो पथिकजी से जुड़े रहे?

उत्तर– शोभालाल गुप्त। ये उनके साथ मुझसे भी पहले से थे। माणिक्यलाल जी वर्मा तो चले गये। वे पथिकजी के साथ काफी दिनों तक रहे। भण्डारी जी भी रहे हैं।

प्रश्न– विजयसिंह पथिक के बारे में आपके क्या विचार हैं? स्वाधीनता-संग्राम में उनका जो योगदान रहा, क्या उसका मूल्यांकन हुआ?

उत्तर– हुआ यह कि राजस्थान में स्वाधीनता–संग्राम के सेनानियों की जो पहली पीढ़ी थी, पथिकजी, सेठीजी, बारहठजी आदि, उनके साथ उपेक्षा हुई। राजस्थान सरकार द्वारा उनका नाम सबसे ज्यादा सामने आना चाहिए था, पर वह श्रेय दूसरे ले गये। बारहठजी के विषय में तो अभी साहित्य छपा हैं, परन्तु पथिकजी, सेठीजी अब भी उपेक्षित हैं। जनार्दनराय नागर

ने जरूर पथिकजी के नाम पर संस्था चलाई है। आखिरी दिनों में माणिक्यलाल जी के पथिकजी से कुछ मतभेद हो गये थे।

प्रश्न– राजस्थान की पत्रकारिता और स्वाधीनता-संग्राम में पथिकजी का क्या योगदान रहा?

उत्तर– वर्धा से उन्होंने सबसे पहले राजस्थान केसरी निकाला। उस समय मैं उनके साथ था। उसके बाद उन्होंने अजमेर में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की। नवीन राजस्थान पत्र निकाला। इसे रियासतों में बन्द कर दिया गया तो तरुण राजस्थान निकाला। ये सब पथिकजी के ही क्रियाकलाप थे। उन जैसा कार्यकर्ता मैंने नहीं देखा। गांधी जी की जो सत्याग्रह की कल्पना थी, उसे जो साकार रूप पथिक जी ने बिजौलिया–आंदोलन में दिया, उतना गांधी जी भी स्वयं नहीं कर सके थे। उस समय बिजौलिया के पन्द्रह हजार किसानों का इतना अच्छा संगठन था कि सब पंचायत के सदस्य थे। छुआछूत का नाम नहीं था। कोई शराब को छूता तक न था। जिनको अछूत मानते हैं, वे पंचायत के अध्यक्ष तक हुए। छह वर्ष तक किसानों ने कोई लगान नहीं दिया। उन पर चौरासी लागतें थीं। किसानों ने आन्दोलन के लिए बाहर से कोई पैसा नहीं लिया। सरकार ने उनकी फसलें जलाना शुरू कर दिया। ये लोग आसपास की रियासतों में अपने रिश्तेदारों, परिचितों के यहां गुजारे लायक खेती कर आते थे। ये लोग धाकड़ जाति के किसान थे। लगान नहीं देने से ठिकाना दिवालिया बन गया। ब्रिटिश सरकार, उदयपुर सरकार और बिजौलिया ठिकाना तीनों समझौते के लिए मजबूर हो गये। गांधी जी की अहिंसा का इतना अच्छा प्रयोग इस आन्दोलन में किया गया कि पूरे आन्दोलन के दौरान एक भी हिंसा की घटना नहीं हुई। ब्रिटिश सरकार की यह नीति थी कि हिंसा को तो दबा दिया जाता था, पर अहिंसा में ज्यादा दखल नहीं दिया जाता था। इसलिए वायसराय को चिट्ठी लिखी कि आप आन्दोलन को दबा नहीं सके, इसलिए आप गद्दी छोड़ दें।

प्रश्न– गांधी जी ने भी बिजौलिया-आन्दोलन की प्रशंसा की थी?

उत्तर– की थी। गांधीजी ने महादेव भाई से रिपोर्ट मंगवाई। जब किसान लोग गांधीजी से मिलने जाते तो वे कहते–मैं तुमको क्या संदेश दूं? मैं जो नहीं कर सका, वह तुमने कर दिखाया। देश आजाद होने पर पथिक

जी गांधी जी से मिलने गए। पं0 चंद्रभान शर्मा उनके साथ थे। तब गांधीजी ने उदास स्वर में कहा था– अब तो सारे देश में आपकी नीति पर चल कर काम करना होगा।

प्रश्न– **पथिक जी का अंतिम समय काफी दुःखमय व्यतीत हुआ?**

उत्तर– पथिक जी हमारे नेता थे। इतने बड़े कार्यकर्ता होने पर भी उनका खर्च बहुत ही कम था। साढ़े सात रुपये मासिक उनका खर्च था। मैंने किसी अन्य कार्यकर्ता का इतना कम खर्च नहीं देखा। पथिकजी सोलह घण्टे काम करते थे। रियासतों में उनका भारी प्रभाव था। इस बात को लेकर कुछ लोगों में ईर्ष्या की भावना पैदा हो गई। पथिक जी की भी अन्तिम दिनों में वैसी ही स्थिति हुई जैसी कि सेठी जी की हुई थी। खाने–पीने के भी उनके पास पूरे साधन नहीं थे। आप कल्पना कर सकते हैं कि उन्हें कितनी तकलीफें हुई होंगी। हम लोग तो उनसे सन् 30 में ही अलग हो गये थे। उन्होंने कोई अखबार भी निकाला था, पर बात बनी नहीं। सेठीजी और पथिकजी के दो ऐसे उदाहरण हैं, जिनमें इतने बड़े कार्यकर्ता होने पर भी अन्तिम दिनों में उनकी दयनीय स्थिति रही।

***राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता-विभाग के प्रभारी-प्राध्यापक। पत्रकारिता विषय पर अनेक पुस्तकों के लेखक। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रबन्ध-सम्पादक। ई-५१, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर**

***शोधकर्ता, लेखक, पत्रकार। साक्षात्कार विधा पर प्रथम शोधकार्य कर डाक्टरेट (पी.एच.डी. उपाधि) प्राप्त। अनेक पुस्तकें प्रकाशित। इन्द्रपुरी, जयपुर-२-१**

❑

पथिकजी का ऋण कैसे चुकाएं

- युगलकिशोर चतुर्वेदी*

तत्कालीन संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध (यू0पी0) के जिला बुलन्दशहर के गांव गुठावली में एक गरीब गूजर परिवार में जन्मे और बंगाल के महान् क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस और शचीन्द्र सान्याल द्वारा क्रांति का प्रशिक्षण प्राप्त करे जिस महापुरुष ने अपने जीवन का सम्पूर्ण सर्वोत्तम भाग राजस्थान की दोहरी–तिहरी दासता में जकड़ी जनता, विशेषतः यहां के निरंकुश नरेशों और जालिम जागीरदारों द्वारा शोषित, पीड़ित तथा आतंकित किसान वर्ग की सेवा, सहायता तथा उसके उद्धार और उत्थान में ही लगाया था, उसके प्रत्युपकार स्वरूप राजस्थान की जनता ने कृतज्ञता प्रकट करने के तौर पर अपने कर्तव्य का पालन कहां तक किया है, इस लेख में इसी विषय पर विशेष विवेचन करना है।

अब से लगभग 70 वर्ष पूर्व जिस समय श्री पथिक जी ने राजस्थान के पिछड़े हुए प्रांत में पदार्पण किया था, यह भू–भाग छोटी बड़ी लगभग 20 देशी रियासतों में बंटा हुआ था, जहां के राजा, जागीरदार और ठिकानेदार किसानों से मनमाना लगान वसूल करने के अतिरिक्त उनसे कई प्रकार के लाग, बाग, भेंट, बेगार और लगान लिया करते थे, जिसके विरोध में वे एक शब्द भी नहीं निकाल सकते थे। किसानों की इस दयनीय दशा को देखकर पथिकजी का भावुक हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने वहीं किसानों के बीच में रहकर उनके ऊपर होने वाले दानवी दमन को दूर कराने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

यों तो आप पूरे राजस्थान को ही एक मानकर सभी जगह की जनता की दुर्दशा और कष्ट कलाप को दूर करना आवश्यक समझते थे, परंतु मेवाड़ राज्यान्तर्गत बिजौलिया ठिकाने का वहां के किसानों के प्रति अत्यन्त क्रूर और कठोर व्यवहार था, अतः आपने यहीं अपना कार्य क्षेत्र बनाया और अनेक अड़चनों, कठिनाइयों तथा दानवी दमन के बावजूद वहां के किसानों को 'किसान–पंचायत' के नाम से संगठित किया और उसके माध्यम से बढ़े हुए लगान के विरोध में ऐसा जबरदस्त आंदोलन चलाया कि उसे दबाने के लिए केवल बिजौलिया ठिकाना ही नहीं, मेवाड़ के

महाराणा और राजपूताना अंग्रेजी साम्राज्य के प्रतिनिधि ए0जी0जी0 की संगठित शक्ति भी उसको विफल नहीं कर सकी।

उस समय तक तो श्री पथिक जी का ऐसा ही प्रबल प्रभाव बना हुआ रहा था, परन्तु आपकी बढ़ती हुई लोकप्रियता से आपके ही साथी, संगी आपसे ईर्ष्या करके आपके विरुद्ध अनेक निराधार आरोप लगाकर आपको बदनाम करने लगे। मेवाड़ के शासन ने अपने विशेष आदेश से आपको 6 वर्ष के लिए उदयपुर जेल में बन्द कर दिया था। आप जब उससे छूटकर आये तो बाहर सारा वातावरण ही बदला हुआ पाया। यहां तक कि जिन जागीरदार और ठिकानेदारों के विरुद्ध आपने निरन्तर संघर्ष किया था, आपको उन्हीं का गुलाम और गुर्गा बताया जाने लगा, जबकि उन दिनों आपकी शारीरिक और आर्थिक स्थिति यह हो गई थी कि शरीर में कष्ट और पीड़ा, नाहरू निकलने के कारण चलने में भयंकर पीडा होती। फटा कुर्ता और फटी धोती पहने, छिपकर एक गांव से दूसरे गांव पहुंचना, रात्रि को सभाओं की व्यवस्था करवाना, किसानों के घरों से आई मक्की, ज्वार की रोटियां और मेथी दाने की भाजी यही उनका उन दिनों भोजन था। उस समय आपके कष्टमय जीवन की तुलना महाराणा प्रताप के इसी प्रकार के जीवन से की जा सकती थी।

उन दिनों पथिक जी की जैसी मनः स्थिति थी, उसका उल्लेख उन्होंने अक्टूबर सन! 53 को श्री घाड़ोलिया को लिखे गये पत्र में इस प्रकार किया है :–

"एकदम सारी स्थिति ऐसी विपरीत बन गई हैं। जिन लोगों के हाथों में इन दिनों शासन और साधन हैं, वे जहां सत्ता और धन के लिये परस्पर लड़ रहे हैं और जीवन के पवित्रतम सिद्धान्तों का बलिदान कर रहे हैं, वहां उनमें दूसरों से धन लूटने की धुन सवार हुई हैं। इसीलिये आज ऐसे कार्यों में..., झूठे इतिहास गढ़े जा रहे हैं। तिलक, रास बिहारी बोस और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भुलाये जा रहे हैं। औरों की तो बात ही क्या?"

राजस्थान की जनता के उद्धार और उत्थान के लिये आपने सब प्रकार के शारीरिक सुखों को तिलांजलि देकर जीवन पर्यन्त कार्य किया, परन्तु हम राजस्थानियों ने उनके प्रत्युपकार के रूप में क्या किया, उनको सरकार से मिला हुआ प्रतिक्रियावादी बताया गया। कोटा, अजमेर अथवा मेवाड़ में पैर जमाने के लिए ही स्थान तक नहीं दिया गया। कल तक जो उनके अनन्य अनुयायी और भक्त बनने का दावा करते थे, वे अब उनके कट्टर विरोधी बन गये।

अपनी उन दिनों की करुण दशा को अपने साहित्यिक सहयोगी पं0 बनारसीदास जी चतुर्वेदी को इन शब्दों में व्यक्त किया था :–

प्रिय बन्धु बनारसीदास जी,

अपने कार्य और राजस्थान के बारे में क्या लिखूं। मैं तो राजनीतिक क्षेत्र की गंदगी और आपाधापी से विरक्त सा हो चुका हूं। मेरे राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ कर्तव्य प्रधान क्रांतिकारी दल से सम्पर्क से हुआ था। यद्यपि उसमें हिंसा का स्थान था. किंतु उसका नैतिक स्तर बहुत ऊंचा था। आज जिन बातों को मनुष्य की विशेषता और चतुराई समझा जाता है. उन बातों से उन दिनों घृणा की जाती थी। वे ही संस्कार मेरी प्रकृति में गहरे बैठ गये हैं। इसलिये आजकल की व्यावहारिक राजनीति में मित्रों द्वारा प्रोत्साहित किये जाने और कई बार स्वयं प्रयत्न करने पर भी मैं प्रायः असफल ही रहा। क्या करूं? मन को ठोक पीट कर तैयार करता हूं तो हृदय साथ नहीं देता।

आपके उक्त वेदनापूर्ण उद्‌गारों से स्पष्ट होता है कि राजस्थान की जनता ने आपकी निःस्वार्थ सेवाओं को सराहा ही नही. बल्कि उनके साथ भी वैसा ही कृतध्नता पूर्ण व्यवहार किया जैसा श्री अर्जुनलाल जी सेठी तथा बाबा नृसिंहदास जी के साथ किया था।

पथिक जी के प्रति की गई इस कृतध्नता के कलंक को हम राजस्थानियों को यहां भी मथुरा की भांति विजयसिंह पथिक मार्ग तथा विजयसिंह वाचनालय आदि स्थापित करके मिटा डालना चाहिये।

***प्रमुख स्वाधीनता-सेनानी, पत्रकार, लेखक। राजस्थान सरकार में मंत्री, दैनिक 'राष्ट्रदूत' के सम्पादक रह चुके हैं। सम्प्रति 'लोक शिक्षक के सम्पादक-प्रकाश। अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर**

❑

वे आजीवन गुरिल्ला-युद्ध लड़ते रहे

- डॉ0 सत्यनारायण*

आधी कटी बांहों की छोटी कमीज जो कमर तक भी बड़ी मुश्किल से पहुंचती थी। उसके ऊपर जगह–जगह से फटी जवाहर बंडी। एक घिसा हुआ जांघिया। पांवों में टूटी ठेठ देसी जूतियां, कंधे लटकाये झोले में कुछ कागज पत्तर, पत्र–पत्रिकाएं तो एकाध कुर्त्ता अंगोछा। भारत आजाद हो चुका था और जिस शख्स ने इस आजादी के लिए अपने जीवन के सुनहरे वर्ष जेलों में तथा मेवाड़ की ऊबड़–खाबड़ पहाड़ियों में गुरिल्ला युद्ध लड़ते हुए बिताये थे, उसकी यह हालत थी इस स्वतन्त्र भारत में, और उस दीवाने का नाम था विजयसिंह पथिक।

उत्तर प्रदेश में बुलन्दशहर जिले के एक छोटे से गांव गुठावली में जन्मे पथिक जी का मूल नाम था भूपसिंह, पर फरारी के दिनों में रखा विजयसिंह पथिक नाम ही बाद में उनका मूल नाम बन गया। वैसे वे खाली एक नाम नहीं एक काम थे सतत संघर्षशील काम के पर्याय जो कभी आराम नहीं जानता। ब्रिटिश साम्राज्यशाली और यहां की सामन्तशाही के विरुद्ध वे आग की एक चिंगारी बनकर लड़े। वर्षों जेल में रहे, जगह–जगह डोले, पहाड़–पहाड़ भटके और अन्तिम क्षणों तक मानव मात्र की स्वतन्त्रता का यह सजग प्रहरी लड़ता रहा।

यह वह समय था जब ब्रिटिश सरकार तो यहां के लोगों पर जुल्म ढा ही रही थी। यहां के देशी रजवाड़े भी उससे कम नहीं थे। वे भी किसानों मजदूरों पर उतने ही जुल्म ढा रहे थे। राजा के कारिन्दे खेतों पर जाते और मनचाहा अनाज कूत आते। यह अलग बात थी कि इसमें जितना अनाज कूता जाता उसका चौथाई भी पैदा नहीं होता, पर देना उतना ही अनाज पड़ता था जिनता कूंता गया था। हुकम सरकार का जो उसे न मानने की हिम्मत कौन कर सकता था, और इसी हुकम के खिलाफ बगावत की यहां के वीर क्रांतिकारियों ने। इसकी शुरूआत भारत में सबसे प्रथम करने वालों में थे पथिक जी। बिजौलियां ठिकाने के अत्याचारों और शोषण के खिलाफ किसानों को संगठित कर पथिक जी ने विरोध का बिगुल बजा दिया। इसके लिए उन्होंने गांवों, जंगलों की खाक छानी, वन–वन डोले।

एक बार पथिक जी ने देशबन्धु चितरंजन दास को यहां की जनता पर ढाये जाने वाले जुल्मों के बारे में लिखा तो देश बन्धु विश्वास नहीं कर पाये। उन्होंने समझा कि ये अतिरंजन पूर्ण हैं। पर जब पथिक जी ने प्रमाण पेश किये तो उन्हें मानना पड़ा। और जब एक दिन उन्होंने महादेव भाई से पथिक जी के बारे में विस्तृत जानकारी चाही तो महात्मा गांधी ने कहा कि मैं आपको पथिक के बारे में कुछ बतला सकता हूं। पथिक काम करने वाला है और दूसरे सब बातूनी हैं। पथिक एक सैनिक है, बहादुर है, जोशीला और तेज मिजाज है लेकिन जिद्दी है। जब महादेव बिजौलियां गये तब पथिक उनके निर्भ्रान्त मार्ग दर्शक थे। विशेष महत्व की बात यह है कि बिजौलियां की जनता का उन पर पूरा–पूरा विश्वास है। महात्मा गांधी ने इन थोड़े से शब्दों से इस महान क्रांतिकारी वीर का सम्पूर्ण परिचय दे दिया।

पथिक जी केवल क्रान्तिकारी और आन्दोलनकर्ता ही नहीं थे, बल्कि जनसाधारण की समस्याओं को जानने समझने के लिए वे उनके बीच रहे उन्हीं की बोली वाणी में उनके दुःख दर्द को समझने का प्रयास किया। इसके साथ ही उनकी लेखनी भी बराबर चलती रही। पत्रकारिता की, साहित्य रचा, भाषण दिये, परचे बांटे। मतलब हर उस क्षेत्र में वे गये जहां उन्हें लगा कि जन सामान्य को ले जाया जा सकता है, अत्याचारों के खिलाफ उसे खड़ा किया जा सकता है।

त्याग, तपस्या और बलिदान की प्रतिमूर्ति पथिक जी ने कभी अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों को महत्व नहीं दिया। आजादी के बाद भी उनकी स्थिति फटेहाल ही बनी रही। तब भी उन्हें बराबर इस बात का अहसास था कि असली क्रान्ति से हम अभी भी कोसों दूर हैं। इसके लिए हमें इस देश को आजाद कराने में जितनी कुर्बानी देनी पड़ी, उससे बहुत अधिक कुर्बानी देनी पड़ेगी। क्योंकि अंग्रेजों के चले जाने मात्र से जन साधारण सुखी नहीं हो जायेगा। जब तक सर्वहारा सुखी नहीं होगा, उसे उनके श्रम का पूरा भाग नहीं मिलेगा तब तक हम असली अर्थों में स्वतन्त्र नहीं हो सकेंगे। बल्कि आजादी के बाद हम अधिक उलझनों में फंस गये हैं, नये–नये सामन्त पैदा हो गये हैं जो सिर्फ अपना हित सोचते हैं। यही कारण है कि अन्त तक वे एक गुरिल्ला युद्ध लड़ते रहे।

अपने मित्र श्री घाड़ोलिया जी को लिखे पथिक जी के इस पत्र में उनके मन की यह पीड़ा साफ परिलक्षित होती है–"एकदम सारी स्थिति विपरीत बन गई है। जिन लोगों के हाथों में इस समय सत्ता और साधन हैं, वे जहां सत्ता और धन के लिए परस्पर लड़ रहे हैं और जीवन के पवित्रतम सिद्धान्तों का बलिदान कर रहे हैं, वहां उनमें दूसरों से धन और सत्ता छीनने की ही नहीं दूसरों के कामों का श्रेय

लूटने की भी धुन सवार हो गई है। और इसीलिए आज ऐसे कार्यों में बाधाओं का कोई ठिकाना नहीं है। झूठे इतिहास गढ़े जा रहे हैं। तिलक, रासबिहारी और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भुलाये जा चुके हैं। फिर औरों की तो बात ही क्या?"

यह पत्र उनके भीतर की सारी पीड़ा को उजागर कर देता है। जिसने देश की खातिर अपना समूचा जीवन होम किया, जंगलों की खाक छानी, भूखा रहा, शिवाजी की तरह गोरिल्ला युद्ध लड़ते हुए दिनों महीनों गुफाओं में रहा, घास की रोटी तक खानी पड़ी, आजादी के बाद की स्थितियों को लेकर उस शख्स की यह पीड़ा स्वाभाविक ही है। महाराणा प्रताप की भूमि पर इनके बाद यह दूसरा युद्धवीर था जो अपनी धरती की स्वतन्त्रता के लिए लड़ा, किसानों को सामन्ती शोषण के पंजों से मुक्त कराने के लिए छिपकर आन्दोलन चलाया, भेष बदलकर, सिपाहियों को चकमा देकर लोगों के बीच उनके दुःख दर्द को जाना समझा, उसको वाणी दी। लेकिन आज हम उनके कामों को उनकी वाणी को, उनके बलिदान को भूले स्वयं की उगायी जंगली घास के बीच खड़े हैं जो हम सबको अपनी लपेट में करती जा रही है।

***नई पीढ़ी के सशक्त साहित्यकार। मासिक 'बखत' के सम्पादक।**
सुभाषनगर, जयपुर

❑

महान योद्धा

- उत्तम राम शुक्ल*

"यश वैभव सुख की चाह नहीं।
परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि इच्छा है, यह है जग में,
स्वेच्छाचार दमन न रहे।"

इन पंक्तियो के लेखक राजस्थान केसरी स्व0 श्री विजयसिंह पथिक ने बिजौलिया और बेगूं के किसान आन्दोलन का सफल नेतृत्व कर राजस्थान ही में नहीं बल्कि देश भर में एक गजब की जागृति पैदा कर दी थी।

पथिक जी मेवाड़ में जन–नेता के रूप में सामने आए। उन्होंने बिजौलियां को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। उनके नेतृत्व में बिजौलियां में देश का सबसे पहला सामूहिक किसान सत्याग्रह हुआ। किसानों से जागीरदार लगान के अलावा 80 प्रकार की लागत (टैक्स) वसूल करता था। किसानों ने बेगार, लागतें और लगान देने से इन्कार कर दिया और कई वर्ष तक खेती ही नहीं की। यह किसान सत्याग्रह छः सात वर्ष तक चला, जागीरदार और राज्य ने दमन करने में भी कोई कसर नहीं रखी, किंतु किसान कभी पस्त नहीं हुए। महात्मा गांधी ने यह आश्वासन दिया था कि यदि राज्य के किसानों के साथ न्याय नहीं किया, तो वह स्वयं उनका नेतृत्व करेंगे, किन्तु इसकी नौबत न आई।

बिजौलियां के आन्दोलन का असर दूर–दूर पड़ रहा था। अतः ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि ने राज्य को समझौता करने का परामर्श दिया और किसानों के बीच सम्मानपूर्ण समझौता हो गया। अनुचित लागतें माफ कर दी गई, जमीन का फिर से बन्दोबस्त करने की बात तय पाई, पंचायत को किसानों की प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्वीकार किया गया एवं उसे कुछ कानूनी अधिकार भी प्रदान किए गये।

***विभिन्न शास्त्रों और भाषाओं में प्रकाण्ड विद्वान और लेखक**

❑

कर्मनिष्ठ और अहिंसा-प्रिय

- नूत्थसिंह पथिक*

श्री पथिक जी का जीवन कार्यशीलता का एक अनुपम उदाहरण था। वह एक क्षण के लिए भी खाली नहीं बैठते थे। कुछ न कुछ करते ही रहना उनका स्वभाव बन गया था, जेलों में भी उनका समय लिखने–पढ़ने में ही व्यतीत होता था। अजमेर जेल में बन्दी जीवन नामक एक साप्ताहिक पत्र उन्होंने हाथ से लिखकर निकालना आरम्भ कर दिया था। उसमें राज बन्दियों की ज्ञान–वृद्धि तथा मनोरंजन के सामयिक लेख तथा कविताएं रहती थीं।

सुविख्यात बिजौलिया सत्याग्रह को उन्होंने बड़े संयम के साथ चलाया था। उसमें उन्होंने कहीं भी किसानों को हिंसा की ओर प्रवृत्त नहीं होने दिया था। वे स्वयं चपरासी से लेकर नेता तक का कार्य करते थे, उनके संगठन–शक्ति का लोहा उदयपुर नरेश ने ही नहीं अंग्रेजों तक ने माना था। अहिंसात्मक आन्दोलन के इस आदर्श को सारे देश के समक्ष उपस्थित करते हेतु विश्वबन्द्य महात्मा गांधी ने श्री मणिलाल कोठारी को भेजकर वहां की स्थिति की स्वयं जांच कराई थी और उस सत्याग्रह की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी।

बिजौलिया का सत्याग्रह जागीरी और रजवाड़ी अत्याचारों के विरुद्ध एक विकट संघर्ष था। पथिकजी स्वयं किसानों की तरह रहते थे। किसान घर में जन्म लेकर पढ़लिख जाने तथा असाधारण शक्ति और प्रभाव प्राप्त कर लेने के बाद भी उनका रहन–सहन किसानों सा ही रहा। इसलिए वे किसान–मजदूरों के आकर्षण के केन्द्र बन गये थे। उनके स्वभाव व रहन–सहन में बनावट नहीं थी। उनके जीवन का उद्देश्य उन्हीं की रचित नीचे लिखी पंक्तियों से प्रकट होता है–

यश वैभव सुख की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि इच्छा है, यह है जग में, स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

*पथिकजी के भतीजे

❑

महान संगठन-कर्ता

- मोतीलाल चौधरी*

स्वर्गीय विजयसिंह पथिक का नाम लेते ही हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सामने आ जाता है। बड़ी-बड़ी आंखें, राजपूती दाढ़ी व साफा, वनराज की सी निर्भीकता, स्फूर्ति एवं शक्ति, हिमालय जैसी दृढ़ता उनके व्यक्तित्व का अंग थीं। सचमुच वे राजस्थान में जन-जागरण के आरंभकर्ताओं में से थे। उनके व्यक्तित्व, कार्य, विचार तथा साहित्य का सर्वदा एक अटल एवं महत्वपूर्ण स्थान रहेगा। पथिक जी वास्तव में राजस्थान केसरी थे।

पथिकजी में संगठन शक्ति महान थी। बिजैलियां आन्दोलन में उनकी संगठन शक्ति का लोहा तो महात्मा गांधी को भी मानना पड़ा था। अल्प समय में ही पथिक जी ने बिजौलिया में किसानों का इतना सशक्त संगठन खड़ा कर दिया था कि वे बड़ी निडरता और बहादुरी के साथ एक होकर आन्दोलन में भाग लेते थे तथा प्राण तक न्यौछावर करने को तत्पर रहते थे। राजस्थान सेवा संघ पथिक जी की संगठन शक्ति का जीता-जागता नमूना था। पथिकजी ने अपनी अद्‌भुत संगठन शक्ति से कार्यकर्ताओं का एक ऐसा दल तैयार कर लिया था जो कि निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए सदैव तत्पर तथा प्रयत्नशील रहते थे। पथिक जी के मार्ग-दर्शन में इसी संघ द्वारा बेगूं आन्दोलन, भील आन्दोलन आदि आन्दोलनों का संचालन किया गया था।

वह समय ऐसा था जब कि लोग राजनीति का नाम लेने में भी डरते थे। समाचार भेजना भी जोखिम का काम था। सरकार के विरुद्ध बोलना और लिखना तो बस मृत्यु को आह्वान करना था। ऐसे में भी पथिक जी जेल में बैठे हुए भी साहित्य-सृजन तथा आन्दोलनों का मार्ग दर्शन करते थे। जेल से भी संवाद भेजने में वे सफल हो जाया करते थे। वे स्वयं में एक संस्था थे।

पथिक जी जहां एक महान योद्धा, पत्रकार और लेखक थे वहां उनके संगठन-रूप का भी कम महत्व नहीं था।

***राज्य विधानसभा के वर्षों तक सदस्य रहे थे। राजस्थान क्रय-विक्रय संघ के अध्यक्ष और सहकारी संघ के मंत्री भी रहे**

❑

मैं बिजौलिया वालों को क्या संदेश दूं ? बिजौलिया के प्रतिनिधि तो मुझे सन्देश देने आये हैं कि बापू, तूने जो सत्याग्रह छेड़ा, वह असफल रहा, हम लोग अपने आन्दोलन को सफल करके आये हैं।

मैं, 'पथिक' के बारे में कुछ बतला सकता हूं। पथिक एक सिपाही आदमी है, बहादुर है, जोशीला है और तेज-मिजाज है लेकिन जिद्दी है। जब महादेव बिजौलिया गये तब पथिक उनके निर्भ्रान्त साथी थे। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बिजौलिया की जनता का उन पर पूरा-पूरा विश्वास है।

-महात्मा गांधी

(अहमदाबाद-1947)

रु. 20/-